CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णदास संस्कृत सीरीज २२४

सरल संस्कृत व्याकरण

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
:	औ	अः
अम्	औ	अः
आ	भ्याम्	भिः
ए	भ्याम्	भ्यः
अः	भ्याम्	भ्यः
अः	ओः	आम्
इ	ओः	सु

रामः

लेखक
पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र शास्त्री

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्णदास संस्कृत सीरीज
१९४

सरल
संस्कृत व्याकरण

(बिना रटे संस्कृत को समझने, पढ़ने, लिखने और बोलने का ज्ञान कराने वाली पुस्तक)

लेखक
पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र शास्त्री
पूर्व आचार्य, गुरुकुल सदाशिव, रणखण्डी, सहारनपुर
पूर्व संस्कृत अध्यापक, जनता इण्टर कालेज, सिकन्दरा, इलाहाबाद
पूर्व पुस्तकालय अधिकारी, अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक : चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : द्वितीय, वि०सं० २०६९, सन् २०१३
मूल्य : रू० १२५.००

© चौखम्बा कृष्णदास अकादमी

पोस्ट बॉक्स नं० ११९८
के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
वाराणसी-२२१ ००१ (भारत)
फोन : २३३५०२०

अपरं च प्राप्तिस्थानम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
(गोपाल मन्दिर के उत्तरी फाटक पर)
गोलघर (मैदागिन के पास)
पो० बा० नं० १००८, वाराणसी (भारत)
फोन : २३३३४५८ आवास : २३३४०३२ एवं २३३५०२०
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
www. chowkhambaseries.com

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डॉ० भगवत् शरण शुक्ल
प्राचार्य सौदामिनी संस्कृत महाविद्यालय
१४९ विवेकानंद मार्ग
इलाहाबाद

आचार्य निवास
कोहना, झंसी
इलाहाबाद

दिनाङ्क ९ मार्च २००५

"संस्कृत नाम दैवी वाग् अन्वाख्याता महर्षिभि:" इत्यादि महान् आचार्यों के कथन से ज्ञात होता है कि संस्कृत भाषा देवताओं की वाणी है। देवता शब्द से मात्र स्वर्ग निवासी देवजाति या योनिविशेष मात्र का ग्रहण न करके प्राणि मात्र के हितचिन्तकत्व समाजोन्नायकत्व आदि दिव्य गुणों से युक्त सहृदय शास्त्रचिन्तक विद्वानों का ग्रहण करना चाहिए। अर्थात् यह भाषा सहृदय सच्चरित्र विद्वानों की भाषा है। इसको पढ़ने वाला जानने वाला हर व्यक्ति उन बहुमूल्य समाजोन्नायकत्वादि दैवी गुणों से युक्त होने लगता है। उसके अन्दर प्राणि मात्र का हितचिन्तन होने लगता है। इस भाषा के माध्यम से बाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों स्थानों की शुचिता सिद्ध होती है। अत: मानव मात्र का कर्त्तव्य है कि इस देववाणी अमृत वाणी संस्कृत का अध्ययन करके अपने कण्ठ का हार बना स्वयं अमृतोपम हो जाय।

संस्कृत भाषा की स्थिति सनातनी है। विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद संस्कृत में ही हैं। वेद भगवान् के श्वास भूत कहे गये हैं "यस्य वि:श्वसितं वेदा:"। अत: यह संस्कृत भाषा भी वेद के समान अनादि है। ऐसी संस्कृत भाषा का ज्ञान मानव मात्र के लिए अपना स्वरूप ज्ञान हेतु परम आवश्यक है।

संस्कृत भाषा के ज्ञान कराने के लिए ऐन्द्र, चान्द्र, काश कृत्स्न, शाकटायन, आपिशल, कौमार, शाकल, सारस्वत आदि अनेक व्याकरण ग्रन्थ लिखे गये किन्तु सर्वोपरि व्याकरण मापिनि विरचित शब्दानुशासन ही रहा। इसीलिए इसे महा शास्त्र कहा गया "पापिनीयं महा शास्त्रं पद साधुत्वलक्षणम्। सर्वोपकारकं ग्राह्यं कृत्स्नं त्याज्यं न किञ्चन।

पाणिनीय् व्याकरण को सरल करने के प्रयास में कात्यायन ने वार्तिक, पतञ्जलि ने महाभाष्य, वामन जयादिव्य ने वाशिका, भट्टोजि दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदीं, वरदराजाचार्य वे मध्य सिद्धान्त कौमुदी, लघु सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों की रटना की। जिससे संस्कृत जगत् का महान् उपकार हुआ किन्तु कलिकाल में साधारण जन समाज अल्प बुद्धि वाला सरलतम मार्ग से संस्कृत भाषा का ज्ञान करना चाहता है। एतदर्थ भी अनुवाद रत्नाकर, अनुवाद कौमुदी अनुवाद चन्द्रिका आदि अनेक ग्रन्थ रचे गये। 'जिससे भी लोग लाभान्वित हुए। आज भी अपने बुद्धि के अनुसार विद्वान् लोग इस ओर सफल प्रयास कर जन सामान्य का कल्याण कर रहे हैं।

आचार्य द्वारकाप्रसाद मिश्र 'शास्त्री'–जिनका सम्पूर्ण जीवन संस्कृत भाषा एवं संस्कृत ग्रन्थों के संरक्षण संवर्धन में व्यतीत हुआ– उन्होंने पग-पग पर संस्कृत भाषा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिक्षण में आने वाली कठिनाइयों का निकट से अनुभव कर उसे दूर करने का सफल प्रयास नवतितम् वर्षीय अवस्था में भी कर रहे हैं। आपके द्वारा लिखित **"सरल संस्कृत व्याकरण" ग्रन्थ को आद्योपान्त देखकर यह अनुभव किया कि यह ग्रन्थ अल्पमति जिज्ञासुओं के लिए भी पूर्णरूपेण उपादेय है।** इस ग्रन्थ में आचार्य मिश्र जी ने स्वर व्यञ्जन का पूर्ण परिचय देते हुए संयुक्त वर्णों के स्वरूप एवं उच्चारण की ओर सबका ध्यान आकृष्ट करते हुए सरल रीति से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण तथा सकर्मक अकर्मक धातुओं का लकारों सहित विवेचन करते हुए कृत प्रत्ययों का, तद्धित प्रत्ययों का तथा सन्धि, समास, कारक और अव्ययों का आवश्यक परिचय दिया है।

व्यक्ति वाक्य प्रयोग में प्राय: लिङ्ग सम्बन्धी त्रुटि कर बैठता है, वाच्य परिवर्त्तन में कठिनाई आती है, तथा सम्बन्धित हिन्दी भाषा के शब्द संस्कृत भाषा में उपलब्ध नहीं होते। इन सभी कठिनाईयों को दूर करने का सफल प्रयास इस ग्रन्थ में हुआ है।

व्याकरण सम्बन्धी सम्पूर्ण आवश्यक जानकारी के साथ शब्दकोश की समुपस्थिति ग्रन्थ की महत्ता को चतुर्गुणित करती है। एतदर्थ आचार्य श्री मिश्र का चरमोवय में यह प्रयास सर्वथा स्तुत्य है। इस ग्रन्थ से संस्कृत भाषा को जानने की इच्छा रखने वाला साधारण सामान्य जन भी अवश्य लाभान्वित होगा।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आचार्य मिश्र शतायु होकर पूर्ण स्वस्थ रहते हुए अपनी सारस्वत साधना में सर्वदा संलग्न रहें।

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्व प्राचार्य
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय, गङ्गानाथ झा
परिसर, इलाहाबाद–२

३/१४ एम० आई० जी०
आवास विकास कालोनी, योजना-३,
झूसी, इलाहाबाद-२११०१९
(उ०प्र०)

पं० द्वारका प्रसाद मिश्र शास्त्री को मैं वर्षों से व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। इन्होंने कई संस्कृत पाण्डुलिपियों/ग्रन्थों का सम्पादन किया है। संस्कृत के विद्वानों से ही नहीं, छात्र-छात्राओं से भी इनका परिचय रहा है। विशेष रूप से संस्कृत को तथा उसके व्याकरण को जानने में ये छात्र-छात्राओं का सहयोग करते रहे हैं। इस कारण छात्र-छात्राओं को संस्कृत-व्याकरण के समझने में जिन कठिनाईयों / समस्याओं से गुज़रना पड़ता है, उनसे शास्त्रीजी पूर्णतया परिचित हैं।

इनके द्वारा प्रस्तुत 'सरल संस्कृत व्याकरण पुस्तक एक सामयिक और उपयोगी कार्य है। इस पुस्तक को इस दृष्टिकोण से लिखा गया है कि साधारण शिक्षित् लोगों को बिना रटे संस्कृत भाषा को समझने, पढ़ने, लिखने और बोलने में सहायता प्राप्त हो सके। अत: इस पुस्तक से सामान्य संस्कृत के शिशिक्षुओं तथा जिज्ञासु छात्र-छात्राओं को भी लाभ होगा यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है। आजीवन पुस्तकालय से जुड़े डॉ० शास्त्रीजी ने अपने इस कार्य में सम्बद्ध पुस्तकों का उपयोग किया है, इससे भी प्रस्तुत पुस्तक की गुणवत्ता सिद्ध होती है।

•

डॉ० अशोककुमार कालिया
आचार्य एवं अध्यक्ष

संस्कृत तथा प्राकृत भाषा-विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ-२२६ ००७

मैंने पण्डित द्वारका प्रसाद मिश्र शास्त्री द्वारा रचित "सरल संस्कृत व्याकरण" नामक पुस्तक का आद्योपान्त अवलोकन तथा अनुशीलन किया है। पुस्तक का शीर्षक ही उसके वास्तविक स्वरूप का विशदतया परिचय करा देता है। इस पुस्तक की रचना ऐसे जिज्ञासुवों को ध्यान में रखकर की गयी है जिनकी संस्कृत-भाषा में सहज अभिरूचि तो है किन्तु संस्कृत-भाषा से वह नितान्त अपरिचित या स्वल्प परिचित ही हैं। वस्तुत: अपने संस्कारों से ही संस्कृत-भाषा में अभिनिवेश रखने वालों की बहुत बड़ी संख्या है। ऐसे ही जिज्ञासुवों को ध्यान में रखकर शास्त्री जी ने संस्कृत-व्याकरण के प्राय: सभी विषय-संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय, सन्धि, समास, कृदन्त, तद्धित, लिङ्ग तथा कारक शीर्षकों को अत्यन्त सरल भाषा में निबद्ध किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक स्व-परिश्रम से ही संस्कृत व्याकरण के प्रामाणिक ज्ञानार्जन में अवश्य उपयोगी सिद्ध होगी।

अशोक कुमार कालिया

•

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

संस्कृत व्याकरण का व्यावहारिक कार्य

संस्कृत भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक विधि से बनाये गये नियमों पर आधारित है । ये नियम सूत्र शैली द्वारा आठ अध्यायों में महाविद्वान् पाणिनि ने बनाये हैं । इसको अष्टाध्यायी कहते हैं । इसके आधार पर ही भट्टोजि दीक्षित ने वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी की रचना की । इन दोनों ग्रन्थों के द्वारा व्याकरण का ज्ञान होने में बहुत समय लगता है। सामान्य व्यक्ति को संस्कृत भाषा को थोड़े समय में सीखने के लिए एक सरल वैज्ञानिक विधि होनी चाहिये । इसमें संस्कृत के शब्दों की साधना प्रक्रिया को छोड़ देना उचित है क्योंकि इससे घबड़ा कर सीखने वाले व्यक्ति संस्कृत भाषा को कठिन बता कर सीखना छोड़ देते हैं ।

संस्कृत भाषा के व्याकरण के नियमों द्वारा शब्दों का श्रेणीकरण किया गया है। इनके परस्पर सम्बन्धों को बताया गया है । व्याकरण उनके भिन्न प्रकारों के पहिचानने की रीति बताता है । संस्कृत का व्याकरण बहुत स्पष्ट है । इसको समझने पर संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में सरलता होती है । अत: संस्कृत के शब्दों की श्रेणियों और उनके परस्पर सम्बन्धों को समझना चाहिए । विभिन्न श्रेणियों के शब्दों की साधना प्रक्रिया की क्षा कर देनी चाहिये ।

ऐसा ज्ञान प्राप्त करके इसका अभ्यास छोटी-छोटी संस्कृत की पाठ्यपुस्तकों, श्लोकों, गीता, मूल रामायण आदि को पढ़ते हुए प्रत्येक शब्द का अर्थ समझते हुए पूरे श्लोक का गद्यांश में अर्थ समझना चाहिये ।

इस पुस्तक को इसी उद्देश्य से लिखा गया है । यह व्याकरण की अन्य पुस्तकों से सर्वथा भिन्न है । न इसमें सूत्र है न लकार है । केवल प्रत्ययों को अपनाया गया है जो शब्दों का वैज्ञानिक विधि से श्रेणीकरण करते हैं ।

इस पुस्तक की रचना में सहायक ग्रन्थों, लेखकों और प्रकाशकों के प्रति मैं आभारी हूँ ।

पुस्तक के विषय में शुभसम्मतियाँ प्रदान करने के लिए मैं डॉ० कालिया, डा० शुक्ल और डा० पाठकजी के प्रति विनयावनत हूँ ।

यदि इस पुस्तक को पढ़ने से बिना रटे संस्कृत समझने, पढ़ने, लिखने और बोलने में संस्कृत के प्रेमियों को कुछ लाभ हुआ तो मैं अपने श्रम को सफल समझूँगा ।

८५६/१२६४ मुट्ठीगंज
इलाहाबाद २११००३

द्वारकाप्रसाद मिश्र शास्त्री
लेखक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-सूची

		पृ० सं०
अध्याय १	संस्कृत की वर्णमाला	६
अध्याय २	संज्ञाएँ	१९
शब्द के प्रकार, स्वरान्त और व्यञ्जनान्त शब्दों के रूप		
अध्याय ३	सर्वनाम	३३
शुद्ध सर्वनाम, संज्ञादि सर्वनाम शब्द, संख्यावाचक सर्वनाम		
अध्याय ४	विशेषण	४६
विशेषण के प्रकार और उदाहरण		
अध्याय ५	क्रिया	४९
मूल धातुओं का परिचय, सभी गणों की धातुओं के रूप, काल आदि सकर्मक अकर्मक, वाच्य, अनिट् सेट् आदि, प्रत्ययान्त क्रियाएँ		
अध्याय ६	अव्यय	१२९
उपसर्ग, क्रियाविशेषण, अन्य प्रकार		
अध्याय ७	सन्धि	१३९
स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि, विसर्ग सन्धि चक्रों और नियमों के साथ		
अध्याय ८	समास	१४९
परिभाषा, प्रकार, उदाहरण ।		
अध्याय ९	कृदन्त प्रत्यय	१५४
कृदन्त प्रत्ययों का परिचय और सूची		
अध्याय १०	तद्धित	१७५
अध्याय ११	शब्दों के लिङ्ग का निर्णय	१७८
अध्याय १२	कारक	१८०
परिभाषा, प्रकर, उदाहरण सहित		
अध्याय १३	अभ्यास	१९१

१. वाक्य रचना
२. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना
३. अनुवाद
४. प्रश्नवाचक वाक्य
५. पत्रलेखन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. वार्तालाप के लिए कुछ स्मरणीय वाक्य
७. संस्कृत के कुछ सुभाषित.
८. संवाद
९. समयोचितपद्यादि

अध्याय १४ शब्दकोश २११
औषधियों, वृक्षों, रोगों, वस्त्रों, शरीर के अङ्गों, खाद्य पदार्थों आदि के संस्कृत नाम ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय १

संस्कृत की वर्णमाला

अक्षर को संस्कृत में वर्ण कहते हैं। वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। संस्कृत वर्णमाला में ४५ वर्ण होते हैं। वे दो भागों में बँटे हुए हैं–स्वर और व्यञ्जन।

स्वर–स्वर वे वर्ण हैं जिनका उच्चारण बिना किसी की सहायता के होता है। स्वर वर्ण निम्नलिखित हैं :–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ।

व्यञ्जन–जिन वर्णों का उच्चारण किसी वर्ण की सहायता से होता है उनको व्यञ्जन कहते हैं। व्यञ्जन वर्ण निम्नलिखित हैं :–

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

इस व्यञ्जन वर्णों में 'अ' वर्ण की ध्वनि मिली हुई है। उसकी सहायता से प्रत्येक वर्ण का उच्चारण आसानी से होता है। मूल रूप में व्यञ्जन हलन्त होता है। हल् एक तिरछा कट निशान होता है। अतः व्यञ्जन मूल रूप में क् ख् ग् आदि इस तरह होते हैं। उसमें 'अ' मिला देने से क् + अ = क। ख् + अ = ख आदि हो जाता है। इस प्रकार 'अ' जुड़ने से मुँह से सुविधापूर्वक उच्चारण आसानी से होता है। मूल व्यञ्जन को हल् भी कहते हैं क्योंकि वे हलन्त होते हैं।

स्वर के भेद

स्वरों में अ इ उ ऋ ऌ ह्रस्व (सादे) स्वर हैं।

ए ऐ ओ औ मिश्रविकृत दीर्घ स्वर हैं।

आ ई ऊ ॠ दीर्घ (सादे) स्वर हैं।

अ + इ = ए। अ + ए = ऐ। अ + उ = ओ। अ + ओ = औ। होने से ए ऐ ओ औ को मिश्रित स्वर कहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यञ्जन के भेद

क से म तक के व्यञ्जन पाँच वर्गों में बँटे हैं। कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग तवर्ग और पवर्ग। कवर्ग कहने से क ख ग घ ङ पाँचों को समझा जाता है। इसी प्रकार चवर्ग आदि को भी।

क से म तक के सब वर्ण 'स्पर्श' कहलाते हैं क्योंकि इनके उच्चारण में जिह्वा मुख के भिन्न भागों को स्पर्श करती है।

परुष और मृदु

पाँचों वर्गों के प्रथम और द्वितीय अक्षर (क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ) तथा श ष स ह परुष व्यञ्जन कहलाते हैं। शेष वर्ण मृदु व्यञ्जन कहलाते हैं। य र ल व को अन्त:स्थ कहते हैं, अर्थात् स्वर और व्यञ्जन के बीच के हैं। श ष स ह ऊष्म हैं क्योंकि इनके उच्चारण करने से भीतर से जरा अधिक जोर से सांस लानी पड़ती है।

घोष और अघोष

संस्कृत के स्पर्शों के प्रथम द्वितीय वर्णों (क ख, च छ, ट ठ, त थ और प फ तथा श ष स ह अघोष हैं। इनके उच्चारण में केवल श्वास का उपयोग होता है। शेष सब वर्ण (सब स्वर और सब व्यञ्जन) घोष हैं क्योंकि इनके उच्चारण में केवल नाद का प्रयोग होता है।

अनुस्वार, आनुनासिक और विसर्ग

संस्कृत में वर्ण के ऊपर बिन्दी रख अनुस्वार बनाया जाता है। जैसे– संयम। किन्तु स्पर्श वर्णों में अनुस्वार को वर्ग के पञ्चम वर्ण के साथ लगा कर लिखते हैं, जैसे अङ्क, पन्त, चञ्चल, चम्पा आदि। वर्ण के आगे सटा कर दो बिन्दी लगा देने से जैसे–बालक: को बालकह पढ़ा जाता है। दो विन्दु : को विसर्ग कहते हैं। इसका उच्चारण 'ह' होता है। ङ ञ, ण न और म तथा अनुस्वार आनुनासिक वर्ण कहलाते हैं क्योंकि इनका उच्चारण नासिका से होता है।

वर्णों के उच्चारण स्थान

अ आ विसर्ग क ख ग घ ङ ह — कण्ठ
इ ई य च छ ज झ ञ श — तालु
ऋ ॠ र ट ठ ड ढ ण ष — मूर्धा
ऌ ल त थ द ध न स — दाँत
उ ऊ उपध्मानीय प फ ब भ म — ओठ
ए ऐ कण्ठ और तालु
ओ औ कण्ठ और ओठ
व दाँत और ओठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक ही स्थान से उच्चरित वर्ण आपस में सवर्ण कहलाते हैं। एक ही स्थान और एक प्रयत्न से उच्चारण किये वर्ण आपस में समान माने जाते हैं। व्याकरण में इनका उपयोग अपेक्षित है। जैसे–आगे स्वर सन्धि में कवि + ईश = कवीश शब्द में सवर्ण ई होने से दोनों ई मिल कर ई हुआ है।

मात्राओं का प्रयोग

संस्कृत के प्रत्येक व्यञ्जन में 'अ' से 'औ' तक की निम्नलिखित मात्राएँ लगती है :–

अ, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े ै, ो, ौ,

जैसे– क् + अ = क — क् + े = के

क् + ा = का — क् + ै = कै

क् + ि = कि — क् + ो = को

क् + ी = की — क् + ौ = कौ

क् + ु = कु

क् + ू = कू

क् + ृ = कृ

संयुक्त व्यञ्जन अक्षरों का प्रयोग

इसके बाद हलन्त व्यञ्जन अक्षरों में हलन्त या मात्रा सहित व्यञ्जन अक्षरों को जोड़ कर संयुक्त अक्षर बनता है। वह स्वतन्त्र अक्षर हो जाता है। उसमें भी स्वर की सभी मात्राएँ लगायी जा सकती हैं।

जैसे–प् + र = प्र से प्राण, प्रेम, व् + या = व्या = व्यास।

प्रसिद्ध संयुक्त व्यञ्जन

व्यञ्जन	संयुक्ताक्षर
क्	क्क, क्ख, क्च, क्ट, क्त, क्थ, क्प, क्म, क्य, क्र, क्ल, क्व, क्श, क्ष, क्ष्म, क्स, क्ह।
ख्	ख्त, ख्य, ख्र, ख्व, ख्श, ख्स।
ग्	ग्न, ग्र, ग्व।
घ्	घ्न, घ्म, घ्र।
च्	च्च, च्छ, च्म, च्य, च्व
छ्	छ्र
ज्	ज्ज, ज्ञ, ज्य, ज्र, ज्व
झ्	–
ट्	ट्ट, ट्ठ, ट्य, ट्र।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठ् ठ्य ।
ड् ड्ड, ड्ढ ।
ढ् ढ्य, ढ्र ।
ण् ण्य, ण्व ।
त् त्क, त्त, त्थ, त्र, त्प, त्फ, त्म, त्म्य, त्य, त्र, त्ल, त्व, त्श, त्स, त्ह ।
थ् थ्य, थ्र, थ्व ।
द् द्ग, द्द, द्ध, द्भ, द्य, द्र, द्व ।
ध् ध्न, ध्म, ध्य, ध्र, ध्व ।
न् न्न, न्प, न्म, न्य, न्व ।
प् प्ट, प्त, प्प, प्म, प्य, प्र, प्ल, प्व ।
फ् फ्फ ।
ब् ब्ज, ब्द, ब्न, ब्ब, ब्भ, ब्य, ब्र, ब्ल ।
भ् भ्य, भ्र, भ्व ।
म् म्त, म्न, म्प, म्म, म्य, म्र, म्ल ।
य् य्य ।
र् र्क, र्ख, र्ग, र्घ, र्च, र्छ, र्ज, र्झ, र्ट, र्ठ, र्ड, र्ढ, र्ण, र्त, र्थ, र्द, र्ध, र्न, र्प, र्फ, र्ब, र्भ, र्म, र्य, र्र, र्ल, र्व, र्श, र्ष, र्स, र्ह ।
ल् ल्क, ल्प, ल्फ, ल्म, ल्य, ल्व, ल्श, ल्ह ।
व् व्य, व्र ।
श् श्क, श्च, श्न, श्म, श्य, श्र, श्ल, श्व, श्श ।
ष् ष्क, ष्ट, ष्ठ, ष्ण, ष्प, ष्फ, ष्म, ष्य, ष्व, ष्ह ।
स् स्क, स्ख, स्त, स्त्य, स्र, स्थ, स्प, स्फ, स्म, स्य, स्र, स्व, स्ह ।
ह् ह्न, ह्य, ह्र, ह्ल, ह्व ।

ऊपर के संयुक्ताक्षरों में क्ष, त्र, ज्ञ भी संयुक्ताक्षर है । वे इस प्रकार बनते हैं–

क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ ।

संयुक्त वर्णों में भी मात्राएँ लगती हैं :–

जैसे– प्र से प्रा = प्राण । प्रि = प्रिय, प्रे = प्रेम ।

इस प्रकार वर्णों से शब्द बनते हैं । शब्दों से वाक्य बनते हैं । वाक्यों से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पैराग्राफ आदि ।

'कार' शब्द का प्रयोग

संस्कृत में सुविधापूर्वक उच्चारण करने और परस्पर अलग करने के लिए स्वर और व्यञ्जन के प्रत्येक वर्ण के साथ 'कार' शब्द लगा कर बोला जाता है ।

जैसे– अकार, इकार, उकार, तकार सकार आदि ।

आवश्यक होने पर 'कार' शब्द के साथ 'अन्त' शब्द जोड़ कर इकारान्त, उकारान्त, तकारान्त आदि ।

जैसे– इकारान्त 'हरि' शब्द, उकारान्त 'भानु' शब्द और नकारान्त 'राजन्' शब्द आदि ।

संस्कृत के कोश का उपयोग

संस्कृत सीखने वाले व्यक्ति को अपने पास संस्कृत का एक छोटा सा शब्द कोश और अमर सिंह का अमर कोश (जिसमें शब्दों की अनुक्रमणिका भी दी गई है ।) होना चाहिये । कोश से प्रत्येक शब्द की श्रेणी संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि का ज्ञान हो जायगा । उसके अनुवाद करने में सुविधा होगी ।

कोश को देखने की विधि भी जाननी चाहिये क्योंकि उनकी शैली हिन्दी के कोश से कुछ भिन्न होती है 'यह अध्ययन उसके ज्ञान में सहायक होगा ।

स्पर्श शब्दों के अनुस्वार वाले शब्दों को पत्तम्यन्त ङ्,ञ्,ण्, और म् के साथ देखना चाहिये । जैसे अंक को अङ्क । य से ह तक के वर्णो के ऊपर के अनुस्वार उसके स्थान पर ही रहते हैं ? जैसे संहार आदि । क्ष को क में त्र को त में और ज्ञ को ज में संयुक्त अक्षर के अनुसार देखना चाहिये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय २

संज्ञाएँ

संस्कृत भाषा में शब्दों के अन्तर्गत संज्ञावाचक, विशेषण, सर्वनाम और संख्यावाचक शब्द होते हैं। संस्कृत शब्दों में तीन लिङ्ग पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं। प्रत्येक शब्द किसी न किसी लिङ्ग का होता है। विशेषण शब्द प्राय: तीनों लिङ्गों में होते हैं। कई अन्य शब्द भी दोनों या तीनों लिङ्ग में होते हैं। संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। वे निम्नलिखित हैं :-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	:	औ	अ:
द्वितीया	अम्	औ	अ:
तृतीया	आ	भ्याम्	भि:
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्य:
पञ्चमी	अ:	भ्याम्	भ्य:
षष्ठी	अ:	ओ:	आम्
सप्तमी	इ	ओ:	सु

इसके अतिरिक्त सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति लगती है। इस प्रकार २१ प्रत्यय होते हैं।

शब्द के प्रकार

शब्द दो प्रकार के होते हैं- स्वरान्त और व्यञ्जनान्त।

जिन शब्दों के अन्त में स्वर की मात्राएँ लगी रहती हैं, वे स्वरान्त शब्द होते हैं। जैसे-राम, हरि, गुरु, पितृ आदि।

जिन शब्दों के अन्त में व्यञ्जन अक्षर रहते हैं, वे व्यञ्जनान्त शब्द कहलाते हैं। जैसे-वाक्, भवत्, भगवत्, सरित्, पयस् आदि।

'कार' शब्द का प्रयोग

स्वरान्त शब्द की अन्त की मात्रा के साथ और व्यञ्जनान्त शब्द के अन्त अक्षर के साथ 'कार' शब्द लगा कर उसके साथ उसका लिङ्ग सहित उच्चारण करते हैं। जैसे-अकारान्त पुँल्लिङ्ग राम शब्द। आकारान्त स्त्रीलिङ्ग रमा शब्द। ककारांन्त पुँल्लिङ्ग वाक् शब्द, तकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरित् शब्द आदि। इसमें एकवचन, द्विंवचन और बहुचवन लगा कर शब्द के रूप में बोलते हैं। जैसे- 'रामस्य' का परिचय अकारान्त पुँल्लिङ्ग राम शब्द की षष्ठीविभक्ति का एकवचन है। इसका अर्थ है राम का।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरान्त और व्यञ्जनान्त शब्दों के साथ ऊपर लिखित २१ (इक्कीस) विभक्ति को क्रमशः लगा कर रूप चलते हैं। आगे कुछ शब्दों के रूप दिये गये हैं।

अकारान्त पुँल्लिङ्ग राम शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्-द्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'राम' शब्द की तरह चलते हैं–

अश्व, काक, खग, गज, पिक, मृग, मेष, शुक, सर्प, केशव, खल, तस्कर, भक्त, ईश्वर, पर्वत, काल, केश, नख, समय, वसन्त, आचार्य, ग्रीष्म, सिंह, शठ, ब्राह्मण, मयूर, कूप, माघ, विद्यालय, अध्यापक, व्यायाम, सङ्केत, स्वभाव, देव आदि।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग रमा शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे	हे रमे	हे रमाः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'रमा' शब्द की तरह चलते हैं–

अयोध्या, अविद्या, अहिंसा, आज्ञा, आशा, शङ्का, इन्दिरा, इच्छा, ईर्ष्या, उषा, कथा, कन्या, कुलटा, कृपा, क्षमा, घटा, चर्चा, तारा, पताका, नौका, पाठशाला, पीडा, मथुरा, रचना, बीणा, शारदा, सभा, हरिद्रा आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकारान्त नपुंसकलिङ्ग फल शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्-द्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'फल' शब्द की तरह चलते हैं :–

अक्षर, अग्निहोत्र, अङ्ग, अमृत, अज्ञान, अस्त्र, आनन, आद्रक, इन्द्रिय, उदक, उदर, उद्यान, ओदन, कानन, कमल, क्षीर, चरण, चरित, चिह्न, जल, ज्ञान, तत्त्व, तन्त्र, ताम्बूल, तैल, द्वार, नयन, नेत्र, यन्त्र, पुष्प, भोजन, मित्र, मुख, युद्ध, लक्षण, लालन, वचन, वैर, साधन, सुख, हवन, हृदय आदि ।

इकारान्त पुँल्लिङ्ग हरि शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'हरि' शब्द की तरह चलते हैं–

अग्नि, अरि, अहि, उदधि, कपि, कृमि, गिरि, ध्वनि, निधि, पाणि, भूपति, मणि, मुनि, यति, रवि, राशि, विधि, व्याधि, सारथि, सूरि, सेनापति, तरणि, दुर्गति, अवधि, शकुनि आदि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पति शब्द

प्रथमा	पति	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः

जब पति शब्द किसी शब्द के साथ समास के अन्त में आता है तो उसके रूप हरि के ही समान होते हैं। जैसे–

भूपति शब्द

प्रथमा	भूपतिः	भूपती	भूपतयः
द्वितीया	भूपतिम्	भूपती	भूपतीन्
तृतीया	भूपतिना	भूपतिभ्याम्	भूपतिभिः
चतुर्थी	भूपतये	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
पञ्चमी	भूपतेः	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
षष्ठी	भूपतेः	भूपतयोः	भूपतीनाम्
सप्तमी	भूपतौ	भूपतयोः	भूपतिषु
सम्बोधन	हे भूपते	हे भूपती	हे भूतपयः

महीपति, गृहपति, नरपति, लोकपति, अधिपति, सुरपति, गजपति, गणपति (गणेश), जगत्पति, बृहस्पति, पृथ्वीपति इत्यादि शब्दों के रूप भूपति के समान 'हरि' शब्द की भाँति होंगे।

सखि शब्द

प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मति शब्द

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीन्
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतयः

निम्नलिखित शब्दों के रूप मति शब्द की तरह चलते हैं–

रुचि, गति, शक्ति, धूलि, शुद्धि, श्रुति, शान्ति रात्रि, गीति, जाति, भूमि, ओषधि, सङ्गति, बुद्धि, स्मृति, उन्नति, उक्ति, छवि, नीति, मूर्ति, प्रीति, युवति, लिपि, विपत्ति, सिद्धि आदि ।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द–वारि

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, हे वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

अस्थि (हड्डी), दधि (दही), सक्थि (जाँघ), अक्षि (आँख) को छोड़ कर सभी इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप वारि के समान होते हैं ।

दधि शब्द

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तमी	दध्नि-दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधि, दधे	हे दधिनी	हे दधीनि

अक्षि शब्द

प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि, अक्षिणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि, अक्षे	हे अक्षिणी	हे अक्षीणि

अस्थि (हड्डी) और सक्थि (जाँघ) के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—नदी

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

"स्त्री" आदि कुछ शब्दों को छोड़ कर सभी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप नदी के समान होते हैं। जैसे—राज्ञी, गौरी, जननी, पार्वती, इन्द्राणी, काली, करिणी, कुटी, कुमारी, कौमुदी, मुरली, गृहिणी, तरुणी, वाणी, बैतरणी, दासी, पुत्री, सरस्वती, हरिणी, जानकी, अरुन्धती, नटी, पृथ्वी, नन्दिनी, द्रौपदी, कैकेयी, देवी, पाञ्चाली, त्रिलोकी, पञ्चवटी, अटवी (जंगल), श्रेणी, भगिनी, गान्धारी, कुमारी, कादम्बरी, कौमुदी (चन्द्रमा की रोशनी), माद्री, कुन्ती, देवकी, सावित्री, गायत्री, कमलिनी, नलिनी इत्यादि।

तरी (नाव), तन्त्री (वीणा), लक्ष्मी के प्रथमा एकवचन में भेद होता है; जैसे—तरीः, तन्त्रीः, लक्ष्मीः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लक्ष्मी शब्द

प्रथमा	लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
द्वितीया	लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मीः
तृतीया	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
चतुर्थी	लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
पञ्चमी	लक्ष्म्याः	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
षष्ठी	लक्ष्म्याः	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीणाम्
सप्तमी	लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीषु
सम्बोधन	हे लक्ष्मि	हे लक्ष्म्यौ	हे लक्ष्म्यः

स्त्री शब्द

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

श्री शब्द

प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

भी (डर), ह्री (लज्जा), धी (बुद्धि), सुश्री इत्यादि के रूप श्री के समान होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द—गुरु

प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

अंशु, इन्दु, इक्षु, कटु, केतु, जन्तु, तनु, तरु, दयालु, धातु, पटु, पशु, प्रभु, बन्धु, भानु, भिक्षु, मृत्यु, रिपु, रघु, राहु, वायु, वटु, विष्णु, शिशु, साधु, सेतु, हेतु आदि शब्दों के रूप गुरु के समान होते हैं।

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द—मधु—शहद

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, हे मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

वस्तु, दारु (काठ), जानु (घुटना), जतु (लाख) तालु, सानु [पर्वत की चोटी)] इत्यादि शब्दों के रूप मधु के समान होते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—धेनु—गाय

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तनु (शरीर), रेणु [(धूलि) (पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग], चञ्चु, हनु, [(ठुड्डी) (पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग भी] इत्यादि सभी उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप धेनु के समान होते हैं।

कण्डु, करेणु, कुहु, कन्दु, जानु, तनु, रज्जु, रेणु, सिन्धु, स्नायु, हनु आदि शब्द भी धेनु शब्द के समान होते हैं।

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—वधू—बहू

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

चमू (सेना), रज्जू (रस्सी), श्वश्रू (सास), कर्कन्धू (बेर) इत्यादि भी ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वधू के समान होते हैं।

भू—पृथ्वी

प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पञ्चमी	भुवाः, भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भुवाम्, भूनाम्
सप्तमी	भुवाम्, भुवि	भुवोः	भूषु
सम्बोधन	हे भूः	हे भुवौ	हे भुवः

भ्रू (भौं) के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द—पितृ—बाप

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

क्रेतृ, यन्तृ, ज्ञातृ धातृ, विक्रेतृ, श्रोतृ, सवितृ, स्मर्तृ, हन्तृ । भ्रातृ (भाई), देवृ (देवर), जामातृ (दामाद) इत्यादि पुँल्लिङ्ग सम्बन्ध-ऋकारान्त शब्दों के रूप पितृ के समान होते हैं ।

दातृ—देने वाला

प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः	हे दातारौ	हे दातारः

धातृ (ब्रह्मा), कर्तृ (करने वाला), गन्तृ (जाने वाला), नेतृ (ले जाने वाला) आदि शब्दों के तथा नप्तृ (पोता) के रूप दातृ के समान चलते हैं ।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—मातृ—माता

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

यातृ (देवरानी), दुहितृ (लड़की) के रूप मातृ के समान होते हैं । स्वसृ के रूप कुछ भिन्न होते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वसृ—बहिन

प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः	हे स्वासारौ	हे स्वसारः

ओकारान्त पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्द गो-बैल या साँड़

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

सभी ओकारान्त शब्दों के रूप गो के समान होते हैं।

औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—नौ—नाव

प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	नावौ	नावः
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
षष्ठी	नावः	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	नावोः	नौषु
सम्बोधन	हे नौः	हे नावौ	हे नावः

इसी प्रकार द्यौ (आकाश) तथा और भी औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यञ्जनान्त संज्ञाएँ

चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—वाच्—वाणी

प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, हे वाग्	हे वाचौ	हे वाचः

रुच् (कान्ति, चमक), त्वच् (चमड़ा, पेड़ की छाल), शुच् (शोक), ऋक् (ऋग्वेद के मन्त्र) इत्यादि सभी चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वाच् की तरह होते हैं।

जकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द—वणिज्—बनिया

प्रथमा	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पञ्चमी	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
षष्ठी	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सम्बोधन	हे वणिक्	हे वणिजौ	हे वणिजः

स्त्रीलिङ्ग स्रज्—माला

प्रथमा	स्रक्	स्रजौ	स्रजः
द्वितीया	स्रजम्	स्रजौ	स्रजः
तृतीया	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः
चतुर्थी	स्रजे	स्रग्भ्याम्	स्रग्भ्यः
पञ्चमी	स्रजः	स्रग्भ्याम्	स्रग्भ्यः
षष्ठी	स्रजः	स्रजोः	स्रजाम्
सप्तमी	स्रजि	स्रजोः	स्रक्षु
सम्बोधन	हे स्रक्	हे स्रजौ	हे स्रजः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुज् (रोग) के भी रूप स्रज् के समान होते हैं।

तकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द भूभृत्—राजा, पहाड़

प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृत:
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृत:
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भि:
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्य:
पञ्चमी	भूभृत:	भूभृद्भ्याम्	भृभृद्भ्य:
षष्ठी	भूभृत:	भूभृतो:	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतो:	भूभृत्सु
सम्बोधन	हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृत:

महीभृत् (राजा, पहाड़), दिनकृत् (सूर्य), शशभृत् (चन्द्रमा), परभृत् (कोयल), मरुत् (वायु), विश्वजित् (संसार को जीतने वाला एक प्रकार का यज्ञ) तथा जाग्रत् (जागता हुआ), शासत् (शासन करता हुआ), ददत् (देता) हुआ, दधत् (धारण करता हुआ), बिभ्रत् (पालन करता हुआ), के रूप भूभृत् के समान होते हैं।

पुँल्लिङ्ग शब्द भगवत्—भगवान्

प्रथमा	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्त:
द्वितीया	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवत:
तृतीया	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भि:
चतुर्थी	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्य:
पञ्चमी	भगवत:	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्य:
षष्ठी	भगवत:	भगवतो:	भगवताम्
सप्तमी	भगवति	भगवतो:	भगवत्सु
सम्बोधन	हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्त:

धीमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिमत्, भानुमत् (चमकने वाला), सानुमत् (पहाड़), धनुष्मत् (धनुर्धारी), अंशुमत् (सूर्य), विद्यावत् (विद्या वाला), बलवत् (बलवान्), श्रीमत् (धनवान्), भाग्यवत् (भाग्यवान्), गतवत् (गया हुआ), उक्तवत् (बोल चुका हुआ), श्रुतवत् (सुन चुका हुआ) के रूप भगवत् के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में इनके जोड़ के प्रातिपदिक ई प्रत्यय लगा कर श्रीमती, बुद्धिमती आदि बनते हैं और इनके रूप ईकारान्त नदी शब्द के समान चलते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भवत्—आप

पुँल्लिङ्ग भवत् (आप) के रूप-भगवत् के समान (भवान्, भवन्तौ, भवन्तः आदि) चलते हैं। इसका स्त्रीलिङ्ग भवती होता है जिसके रूप नदी के समान चलते हैं।

महत्—बड़ा

प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पञ्चमी	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
षष्ठी	महतः	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	महतोः	महत्सु
सम्बोधन	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

इसके जोड़ का स्त्रीलिङ्ग शब्द महती है जिसके रूप नदी के समान चलते हैं।

पठत्—पढ़ता हुआ

प्रथमा	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
द्वितीया	पठन्तम्	पठन्तौ	पठतः
तृतीया	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
चतुर्थी	पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
पञ्चमी	पठतः	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
षष्ठी	पठतः	पठतोः	पठताम्
सप्तमी	पठति	पठतोः	पठत्सु
सम्बोधन	हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः

धावत् (दौड़ता हुआ), गच्छत् (जाता हुआ), वदत् (बोलता हुआ), पश्यत् (देखता हुआ), गृह्णत् (लेता हुआ), पतत् (गिरता हुआ), शोचत् (सोचता हुआ), पिबत् (पीता हुआ), भवत् (होता हुआ), इत्यादि सभी शतृ प्रत्ययान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप पठत् के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में पठन्ती, धावन्ती आदि होते हैं जिनके रूप नदी के समान चलते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्रीलिङ्ग सरित्—नदी

प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

नपुंसकलिङ्ग जगत्—संसार

प्रथमा	जगत्, जगद्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पञ्चमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्, हे जगद्	हे जगती	हे जगन्ति

श्रीमत्, भवत् (होता हुआ) तथा और भी तकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप जगत् के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग शब्द—महत्

प्रथमा	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	महत्	महती	महान्ति
सम्बोधन	हे महत्	हे महती	हे महान्ति

शेष रूप जगत् के समान होते हैं।

दकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द सुहृद्—मित्र

प्रथमा	सुहृत्, सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वितीया	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
तृतीया	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
चतुर्थी	सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
पञ्चमी	सुहृदः	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठी	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
सप्तमी	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु
सम्बोधन	हे सुहृत्, हे सुहृद्	हे सुहृदौ	हे सुहृदः

हृदयच्छिद् (हृदय को छेदने वाला), मर्मभिद्, सभासद् (सभा में बैठने वाला), तमोनुद् (सूर्य), धर्मविद् (धर्म को जानने वाला), हृदयन्तुद् (हृदय को पीड़ा पहुँचाने वाला) इत्यादि दकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप सुहृद् के समान होते हैं।

नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द आत्मन्—आत्मा

प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

अध्वन् (मार्ग), अश्मन् (पत्थर), यज्वन् (यज्ञ करने वाला), ब्रह्मन् (ब्रह्मा), सुशर्मन् (महाभारत की लड़ाई में एक योद्धा का नाम), कृतवर्मन् (एक योद्धा का नाम) के रूप आत्मन् के समान चलते हैं।

नोट—आत्मा शब्द हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, किन्तु संस्कृत में यह पुँल्लिङ्ग है, इसका ध्यान रखना चाहिये।

पुँल्लिङ्ग राजन्—राजा

प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

इसके जोड़ का स्त्रीलिङ्ग शब्द राज्ञी (ईकारान्त) है, जिसके रूप नदी के समान चलते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुँल्लिङ्ग युवन्—जवान

प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

इसके जोड़ का स्त्रीलिङ्ग युवती है जिसके रूप नदी के समान चलते हैं।

पुँल्लिङ्ग श्वन्—कुत्ता

प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	शुनोः	श्वभ्यः
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः

पुँल्लिङ्ग मघवन्—इन्द्र

प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृतीया	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
चतुर्थी	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
षष्ठी	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
सम्बोधन	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवानः

नोट—मघवन् के रूप विकल्प से भगवत् के समान (मघवान्, मघवन्ती आदि भी) चलते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन्नन्त पुँल्लिङ्ग करिन्—हाथी

प्रथमा	करी	करिणौ	करिण:
द्वितीया	करिणम्	करिणौ	करिण:
तृतीया	करिणा	करिभ्याम्	करिभि:
चतुर्थी	करिणे	करिभ्याम्	करिभ्य:
पञ्चमी	करिण:	करिभ्याम्	करिभ्य:
षष्ठी	करिण:	करिणो:	करिणाम्
सप्तमी	करिणि	करिणो:	करिषु
सम्बोधन	हे करिन्	हे करिणौ	हे करिण:

स्वामिन्, हस्तिन् (हाथी), गुणिन् (गुणी), मन्त्रिन् (मन्त्री), शशिन् (चन्द्रमा), पक्षिन् (पक्षी, चिड़िया), धनिन् (धनी), वाजिन्, (घोड़ा), तपस्विन् (तपस्वी), एकाकिन् (अकेला), बलिन् (बली), सुखिन् (सुखी), सत्यवादिन् (सच बोलने वाला), भाविन् (होने वाला) इत्यादि (इन् में अन्त होने वाले) इन्नन्त शब्दों के रूप करिन् के समान होते हैं ।

इन्नन्त शब्दों के जोड़ के स्त्रीलिङ्ग शब्द ईकार जोड़ कर हस्तिनी, एकाकिनी, भाविनी आदि ईकारान्त होते हैं जिनके रूप नदी के समान चलते हैं ।

अन्नन्त पुँल्लिङ्ग नामन्—नाम

प्रथमा	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभि:
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्य:
पञ्चमी	नाम्न:	नामभ्याम्	नामभ्य:
षष्ठी	नाम्न:	नाम्नो:	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि, नामनि	नाम्नो:	नामसु
सम्बोधन	हे नाम, हे नामन्	हे नाम्नी, हे नामनी	हे नामानि

धामन् (घर, चमक), व्योमन् (आकाश), सामन् (सामवेद का मन्त्र), प्रेमन् (प्यार), दामन् (रस्सी) के रूप नामन् के समान होते हैं ।

अन्नन्त नपुंसक शर्मन्—सुख

प्रथमा	शर्म	शर्मणी	शर्माणि
द्वितीया	शर्म	शर्मणी	शर्माणि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीया	शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः
चतुर्थी	शर्मणे	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः
पंचमी	शर्मणः	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः
षष्ठी	शर्मणः	शर्मणोः	शर्मणाम्
सप्तमी	शर्मणि	शर्मणोः	शर्मसु
सम्बोधन	हे शर्म, हे शर्मन्	हे शर्मणी	हे शर्माणि

पर्वन् (पौर्णमासी या अमावस्या या त्योहार), ब्रह्मन् (ब्रह्मा), चर्मन् (चमड़ा) वर्मन् (कवच, जिरह बख्तर), जन्मन् (जन्म) वर्त्मन् (रास्ता) के रूप शर्मन् के समान होते हैं।

अन्नन्त नपुंसकलिङ्ग अहन्–दिन

प्रथमा	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु, अहस्सु
सम्बोधन	हे अहः	हे अह्नी, अहनी	हे अहानि

पकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द–अप्–पानी

अप् के रूप केवल बहुवचन में होते हैं–

प्रथमा	आपः
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः
चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः
षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु
सम्बोधन	हे आपः

सकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द चन्द्रमस्–चन्द्रमा

प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु-स्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

दिवौकस् (देवता), महौजस् (बड़ा तेज वाला), बेधस् (ब्रह्मा), सुमनस् (अच्छे चित्त वाला), महायशस् (बड़ा यशस्वी), महातेजस् (बड़ी कान्ति वाला), विशालवक्षस् (बड़ी छाती वाला), दुर्वासस् (दुर्वासा ऋषि या बुरे कपड़े वाला), प्रचेतस् (वरुण) इत्यादि सकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप चन्द्रमस् के समान होते हैं।

पुँल्लिङ्ग विद्वस्—विद्वान्

प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

वस् में अन्त होने वाला शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

इसके जोड़ का स्त्रीलिङ्ग शब्द "विदुषी" है, जिसके रूप नदी के समान चलते हैं।

नपुंसकलिङ्ग शब्द-मनस्

प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मनः	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पञ्चमी	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	मनसोः	मनःसु-मनस्सु
सम्बोधन	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नपुंसकलिङ्ग पयस्—दूध या पानी

प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पञ्चमी	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसोः	पयस्सु, पयःसु
सम्बोधन	हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि

अम्भस् (पानी), नभस् (आकाश), आगस् (पाप), उरस् (छाती), मनस् (मन), वयस् (उम्र), रजस् (धूल), वक्षस् (छाती), तमस् (अँधेरा), तपस् (तपस्या), शिरस् (सिर), इत्यादि सभी असन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप पयस् के समान होते हैं।

सकारान्त नपुंसकलिङ्ग धनुस्—धनुष

प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पञ्चमी	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुःषु, धनुष्षु
सम्बोधन	हे धनुः	हे धनुषी	हे धनूंषि

चक्षुस् (आँख), वपुस् (शरीर), आयुस् (उम्र), यजुस् (यजुर्वेद का मंत्र) इत्यादि 'उस्' में अन्त होने वाले नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप धनुस् के समान होते हैं।

शकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द—तादृश्—उसके समान

प्रथमा	तादृक्	तादृशौ	तादृशः
द्वितीया	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
चतुर्थी	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पञ्चमी	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
षष्ठी	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तमी	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सम्बोधन	हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृशः

यादृश् (जैसा), मादृश् (मेरे समान), भवादृश् (आप के समान), त्वादृश् (तुम्हारे समान), एतादृश् (इसके समान) इत्यादि के रूप तादृश् के समान होते हैं।

इनके जोड़ वाले स्त्रीलिङ्ग शब्द तादृशी, मादृशी, यादृशी, भवादृशी आदि है जिनके रूप नदी के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग में तादृश् मादृश् त्वादृश् इत्यादि के रूप इस प्रकार होंगे—

नपुंसकलिङ्ग तादृश्—उसके समान

प्रथमा	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
द्वितीया	तादृक्	तादृशी	तादृंशि
तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
सम्बोधन	हे तादृक्	हे तादृशी	हे तादृंशि

शेष पुँल्लिङ्ग के समान।

तादृश्, मादृश्, भवादृश्, त्वादृश् इत्यादि के जोड़ी वाले अकारान्त तादृश, शब्द, मादृश, भवादृश, त्वादृश आदि हैं और उनके रूप अकारान्त राम के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग दिश्—दिशा

स्त्रीलिङ्ग दिश् शब्द विल्कुल पुँल्लिङ्ग तादृश् के समान चलता है।

णत्व-विधान

एक ही पद में ऋ, र, ष् से परे, अपदान्त न् को (बीच में कोई स्वर, ह, य, व, र, कवर्ग, पवर्ग होनेपर भी) ण् हो जाता है। तिसृ-नाम् = तिसृणाम्, चतुर्-नाम् = चतुर्णाम्, पूष्-ना = पूष्णा; इसी प्रकार आर्येण, रावणः, मूर्खाणाम् अर्पणम् आदि।

षत्व-विधान

'अ' 'आ' के अंतिरिक्त स्वर से परे अथवा कवर्ग से परे अपदान्त 'स्' को (बीच में अनुस्वार, विसर्ग, ष् के आने पर भी) ष् हो जाता है। हरि + सु = हरिषु, रामे + सु = रामेषु, दिक् + सु = दिक्षु (दिक्षु), एवं धनूंषि, सर्पिःषु सर्पिष्षु आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ३

सर्वनाम

संस्कृत में जो संज्ञा के साथ विशेषण रूप में प्रयोग किये जाते हैं, अथवा जो अकेले भी संज्ञा के स्थान पर आते हैं उनको सर्वनाम या सर्वनामिक विशेषण कहते हैं।

वैसे तो सर्वनाम की संख्या ३५ है। इसे आगे पृष्ठ ४२ पर दिया गया है। इनमें से शुद्ध सर्वनाम के रूप में अस्मद्, युस्मद्, भवत्, इदम्, एतत्, तद्, अदस्, यत्, किम्, उभ, शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उनके रूप निम्नलिखित हैं :–

उत्तम पुरुषवाची

अस्मद्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम् नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

मध्यम पुरुषवाची

युष्मद्

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

संस्कृत के 'भवत्' शब्द का अर्थ 'आप' है। इसके रूप तीनों लिङ्गों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और तीनों वचनों में चलते हैं और यह अन्य पुरुषवाची है। यथा–भवान् आगच्छतु, न कि भवान् आगच्छ। पुँल्लिङ्ग में इसके रूप भगवत् के समान (भवान्, भवन्तौ, भवन्तः इत्यादि) चलते हैं, नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान (भवत्, भवती, भवन्ति आदि) होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में यह शब्द भवती ईकारान्त हो जाता है और नदी के समान (भवती, भवत्यौ, भवत्यः, आदि इसके) रूप होते हैं।

पुँल्लिङ्ग भवत्–आप

प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्	भवन्तौ	हे भवन्तः

इससे स्त्रीलिङ्ग भवती शब्द बनता है जिसके रूप नदी के समान चलते हैं।

इदम्–यह

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

तद्—वह

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तत्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुसंकलिङ्ग

प्रथमा	तत	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

अदस्—वह

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

यद्—जो

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	यः	यौ	ये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	यत्, यद्	ये	यानि
द्वितीया	यत्, यद्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययो	येषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

एतद्—यह

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्, एनम्	एतौ	एतान्, एनान्
तृतीया	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्, एतस्माद्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	एतत्, एतद्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्, एतद् / एनत्, एनद्	एते / एने	एतानि / एनानि
तृतीया	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् / एतस्माद्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
तृतीया	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः, एनयोः	एतासु

प्रश्नवाची सर्वनाम के लिए संस्कृत में 'किम्' शब्द है। इसके रूप तीनों लिङ्गों में अग्रवर्णित प्रकार से चलते हैं।

उदाहरणार्थ–कः आगतः ? (कौन आया है ?); का आगता ? (कौन स्त्री आई है ?) किमस्ति ? (क्या है ?) आदि इसके प्रयोग होते हैं।

इसी शब्द के रूपों के साथ 'अपि', 'चित्' अथवा 'चन्' जोड़ देने से, हिन्दी के किसी, कोई, कुछ आदि अनिश्चयात्मक सर्वनामों का बोध होता है; यथा–

कोऽपि आगतोऽस्ति
कश्चिदागतोऽस्ति
कश्चनागतोऽस्ति
—कोई आया है।

काऽप्यागताऽस्ति
काचिदागताऽस्ति
काचनागताऽस्ति
—कोई आई है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किमप्यस्ति किञ्चिदस्ति किञ्चनास्ति	—कुछ है ।

इसी प्रकार किमपि मा हिंसीः, कमपि मा त्रासय, किमपि मा चोरय इत्यादि प्रयोग होते हैं ।

किम्—कौन

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभ् (दो) के रूप केवल द्विवचन में

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	उभौ	उभे	उभे
द्वितीया	उभौ	उभे	उभे
तृतीया	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः	उभयोः	उभयोः
सप्तमी	उभयोः	उभयोः	उभयोः

(ख) यावत् के रूप भगवत् के समान पुँल्लिङ्ग में और जगत् के समान नपुंसकलिङ्ग में चलते हैं।

सर्व—सब

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

आगे पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नोट–पूर्व शब्द के रूप सर्व तथा बालक दोनों प्रकार से चलते हैं। अन्यत् आदि सर्वनामिक विशेषणों के रूप सर्व के समान तीनों लिङ्गों में होते हैं। केवल नपुंसकलिङ्ग में अन्यत् (प्रथमा, द्वितीया) होते हैं।

संस्कृत की दस तक की गिनती दी जाती है–

संख्या	पूरणी संख्या पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग	पूरणी संख्या स्त्रीलिङ्ग
१ एक	प्रथम, (अग्रिम) (आदिम)	प्रथमा
२ द्वि	द्वितीय	द्वितीया
३ त्रि	तृतीय	तृतीया
४ चतुर्	चतुर्थ	चतुर्थी
५ पञ्चन्	पञ्चम	पञ्चमी
६ षष्	षष्ठ	षष्ठी
७ सप्तन्	सप्तम	सप्तमी
८ अष्ठन्	अष्टम	अष्टमी
९ नवन्	नवम	नवमी
१० दशन्	दशम	दशमी

गिनती के शब्दों के रूपों में जो भेद है वह आगे दिखाया जाता है।

(क) एक

'एक' के रूप तीनों लिङ्गों में अलग-अलग और केवल एकवचन में होते हैं–

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ख) द्वि–दो

	पुँल्लिङ्ग द्विवचन	नपुंसकलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग द्विवचन
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

(ग) त्रि–तीन

'त्रि' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में अलग, अलग और केवल बहुवचन में होते हैं–

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

(घ) चतुर्–चार

"चतुर्" शब्द के रूप भी तीनों लिङ्गों में अलग-अलग और केवल बहुवचन में होते हैं।

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(च) पञ्चन्–पाँच (छ) षष्–छः

"पञ्चन्" और इसके आगे के संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं और केवल बहुवचन में होते हैं–

पुँल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग

केवल बहुवचन में

	पञ्चन्	षष्
प्रथमा	पञ्च	षट्
द्वितीया	पञ्च	षट्
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु

(ज) सप्तन्–सात, (झ) अष्टन्–आठ

पुँल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग

केवल बहुवचन में

	सप्तन्	अष्टन्
प्रथमा	सप्त	अष्टौ, अष्ट
द्वितीया	सप्त	अष्टौ, अष्ट
तृतीया	सप्तभिः	अष्टाभिः, अष्टभिः
चतुर्थी	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
पञ्चमी	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
षष्ठी	सप्तानाम्	अष्टानाम्
सप्तमी	सप्तसु	अष्टासु, अष्टसु

(ठ) नवम् (नौ), दशन् (दश) तथा सभी नकारान्त (एकादशन् आदि) संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में पञ्चन् के समान होते हैं।

(ट) पूरणी संख्यावाचक पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप बालक और सर्व दोनों के समान नपुंसकलिङ्ग शब्दों के फल और सर्व दोनों के समान तथा स्त्रीलिंङ्ग प्रथमा, द्वितीया और तृतीया के गङ्गा और सर्वा दोनों के समान और चतुर्थी आदि बाकी के नदी की तरह चलते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कति–कितने–सभी लिङ्गों में एक समान
केवल बहुवचन में

प्रथमा	कति
द्वितीया	कति
तृतीया	कतिभिः
चतुर्थी	कतिभ्यः
पञ्चमी	कतिभ्यः
षष्ठी	कतीनाम्
सप्तमी	कतिषु

संस्कृत की गिनती

१ एक
२ द्वि
३ त्रि
४ चतुर्
५ पञ्चन्
६ षट्
७ सप्तन्
८ अष्टन्
९ नवन्
१० दशन्
११ एकादशन्
१२ द्वादशन्
१३ त्रयोदशन्
१४ चतुर्दशन्
१५ पञ्चदशन्
१६ षोडशन्
१७ सप्तदशन्
१८ अष्टादशन्
१९ नवदशन्
या
ऊनविंशति
एकोन्नविंशति
२० विंशति
२१ एकविंशति
२२ द्वाविंशति

२३ त्रयोविंशति
२४ चतुर्विंशति
२५ पञ्चविंशति
२६ षड्विंशति
२७ सप्तविंशति
२८ अष्टाविंशति
२९ नवविंशति
३० त्रिंशत्
३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७ सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ नवत्रिंशत्
४० चत्वारिंशत्
४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्वाचत्वारिंशत्
या
द्विचत्वारिंशत्

४३ त्रयश्चत्वारिंशत्
या
त्रिचत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टाचत्वारिंशत्
या
अष्टचत्वारिंशत्
४९ नवचत्वारिंशत्
एकोनपञ्चाशत्
उनपञ्चाशत्
एकान्नपञ्चाशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्वापञ्चाशत्
या
द्विपञ्चाशत्
५३ त्रयःपञ्चाशत्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रिपञ्चाशत्
५४ चतु:पञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टापञ्चाशत्
अष्टपञ्चाशत्
५९ नवपञ्चाशत्
या
एकोनषष्टि
ऊनषष्टि
६० षष्टि
६१ एकषष्टि
६२ द्वाषष्टि
या
द्विषष्टि
६३ त्रय:षष्टि
या
त्रिषष्टि
६४ चतुष्षष्टि
६५ पञ्चषष्टि
६६ षट्षष्टि

६७ सप्तषष्टि
६८ अष्टाषष्टि
या
अष्टषष्टि
६९ नवषष्टि
एकोनसप्तति
७० सप्तति
७१ एकसप्तति
७२ द्वासप्तति
७३ त्रयस्सप्तति
७४ चतुस्सप्तति
७५ पञ्चसप्तति
७६ षट्सप्तति
७७ सप्तसप्तति
७८ अष्टासप्तति
७९ नवसप्तति
८० अशीति
८१ एकाशीति
८२ द्वयशीति
८३ अशीति

८४ चतुरशीति
८५ पञ्चशीति
८६ षडशीति
८७ सप्ताशीति
८८ अष्टशीति
८९ नवाशीति
एकोननवति
ऊननवति
एकान्ननवति
९० नवति
९१ एकनवति
९२ द्विनवति
द्वानवति
९३ त्रयोनवति
त्रिनवति
९४ चतुर्नवति
९५ पञ्चनवति
९६ षण्णवति
९७ सप्तनवति
९८ अष्टानवति
अष्टनवति
९९ नवनवति

१०० शत, २०० द्विशत, ३०० त्रिंशत, ४०० चतुश्शत, ५०० पञ्चशत, १००० सहस्त्र, १०,००० अयुत (नपुं०), १,००,००० लक्ष (नपुं०) या लक्षा (स्त्री०), दस लाख–प्रयुत (नपुं०), करोड़–कोटि (स्त्री०)।

(क) दशन् में अन्त होने वाले संख्या शब्दों के रूप दशन् के समान बहुवचन में चलते हैं। विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति तथा इनमें अन्त होने वाले संख्या शब्दों के रूप केवल एकवचन में होते हैं और इकारान्त संज्ञा "मति" के समान, जैसे विंशति: विंशतिम् विंशत्या विंशत्यै-विंशतये विंशते:-विंशत्या: विंशतें:-विंशत्या विंशतौ-विंशत्याम्। त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् तथा इनमें अन्त होने वाले सभी संख्या शब्दों के रूप एकवचन में स्त्रीलिङ्ग तकारान्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संज्ञा "सरित्" के समान होते हैं, त्रिंशत्, त्रिंशतम् त्रिंशता, त्रिंशते, त्रिंशतः, त्रिंशति। शत, सहस्र, अयुत्, लक्ष; युत् के रूप, 'फल' के समान तीनों वचनों में चलते हैं। 'कोटि' के रूप 'मति' के समान होते हैं।

पूरणी संख्यावाचक दशन् में अन्त होने वाले शब्दों के न् निकाल कर और नपुंसक में अकारान्त शब्द और स्त्रीलिङ्ग में अन् की जगह ई जोड़-ईकारान्त शब्द बनाते हैं, जैसे, १८वाँ–अष्टादशः अष्टादशम्, १८वीं अष्टादशी। विंशति तथा उसमें अन्त होने वाले शब्दों से पुँल्लिङ्ग, नपुंसक (ति) पूरक शब्द निकाल कर (विंशः विंशं) और स्त्रीलिङ्ग में विंशी' आदि बनते हैं। त्रिंशत् चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् तथा इनमें अन्त होने वाले शब्दों से त् हटा कर पुँल्लिङ्ग, नपुंसक में त्रिंशः आदि और स्त्री में त्रिंशी आदि बनाते हैं। षष् तथा (ति) में अन्त में होने वाले शब्दों में से ति हटा कर तः जोड़ कर सप्ततः, सप्तती रूप बनाते हैं। विंशति से ले कर आगे के सभी संख्यावाची शब्द से शब्द पुं० नपुं० में तम जोड़ कर (विंशततमः, विंतितगम्) और स्त्रीलिङ्ग तभी जोड़ कर (विंशतितमी) बनाये जाते हैं। इसी प्रकार शत, सहस्र शब्दों के पूरक संख्यावाची शब्द भी तम, तभी जोड़ कर बनते हैं स्रहस्रतमः, सहस्रतमम्, सहस्रतमी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ४

विशेषण

संस्कृत में कुछ शब्द विशेषण होते हैं। वे शब्द जिन संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं वे विशेष्य कहलाते हैं। जैसे–कृष्णः सर्पः। यहाँ सर्प शब्द संज्ञा है। कृष्ण शब्द विशेषण है। वह सर्प की विशेषता बतलाता है कि सर्प काला है। ऐसा कहने से कृष्णः सर्पः का अन्य सर्पों से अलगाव हो जाता है। इसी प्रकार मलिनम् वस्त्रम्, पक्वम् फलम्, बहुक्षीरा गौः, निपुणा गृहिणी, शीतलम् जलम्, धार्मिकः पुरुषः, कुटिला नदी, निर्धनः छात्रः आदि।

विशेषण के लिङ्ग

विशेषण वाचक शब्द तीनों लिङ्गों में विशेष्य के अनुसार होता है, इसमें कतिपय कृदन्त और तद्धित विशेषणों के तीनों लिङ्गों में रूपों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

प्रत्यय	कृदन्त	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिङ्ग
कृदन्त	ण्वुल्	पाठकः	पाठिका	पाठकम्
,,	तृच्	पठिता	पठित्री	पठितृ
,,	तव्य	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्
,,	अनीयर्	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
,,	ण्यत्	पाठ्यः	पाठ्या	पाठ्यम्
,,	क्त	पठितः	पठिता	पठितम्
,,	क्तवत्	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
,,	शतृ	पठन्	पठन्ती	पठत्
,,	शानच्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
तद्धित	इन्	गुणी	गुणिनी	गुणि
,,	मतुप्	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
,,	ईयसुन्	गरीयान्	गरीयसी	गरीयः

इन प्रत्ययों का ज्ञान इस पुस्तक में आगे कृदन्त और तद्धित अध्यायों को पढ़ने से होगा।

सर्व, विश्व, उभ, उभय, डतर, डतम, अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम, पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तद्, यत्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवत्, किम्। ये ३५ पैंतिस सर्वनाम होते हैं।

विशेषण चतुर, कुशल, सुन्दर आदि के पुँल्लिङ्ग में अकारान्त बालक के समान और नपुंसकलिङ्ग में अकारान्त फल के समान रूप होते हैं। इसी प्रकार ईकारान्त विशेषण सुन्दरी, चन्द्रमुखी आदि के रूप ईकारान्त नदी के समान होते हैं। थोड़े से विशेषण ऐसे भी हैं जिनके रूप भिन्न होते हैं। उनका विचार इस अध्याय में किया गया है।

सर्वनामिक विशेषण–ऊपर लिखे हुए सर्वनामों में से इदम्; एतद्, तद्, अदस्, यद्, किम् तथा अनिश्चयवाचक का प्रयोग विशेषण के रूप में भी होता है; जैसे–अयं पुरुषः, एषा नारी, एतच्छरीरं, ते भृत्याः, अमी जनाः यः विद्यार्थी, का नारी, कस्मिंश्चिन्नगरे, तस्मिन्नेव ग्रामे इत्यादि।

'सर्व' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

सर्व, पूर्व, अन्य, इतर, उभ, उभय आदि सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयोग में आते हैं। जैसे–इतरे जनाः, इमौ बालकौ, सर्वे मनुष्याः आदि। सर्वनामों में एक, द्वि, संख्यावाची विशेषण हैं।

जैसे–सः बालकः गच्छति। यहाँ बालक संज्ञा शब्द है। सः सर्वनाम है, किन्तु निश्चयसूचक या संकेतवाचक विशेषण के रूप में प्रयोग किया गया है।

श्यामः प्रातः काले पठति किन्तु सः सायङ्काले क्रीडति। यहाँ सः सर्वनाम है। यह श्याम संज्ञा के स्थान पर अकेले आया है।

सः गच्छति। इस वाक्य में सः सर्वनाम है। यह अकेले प्रयोग किया गया है।

सर्वनाम के छः भेद करके समझा जा सकता है :

१. पुरुषवाचक–जिन शब्दों का प्रयोग जिसके विषय में कुछ कहा जाय, जो कहे और जो सुनने वाला हो, ये तीनों पुरुषवाचक सर्वनाम में होते हैं। जैसे सः, त्वम्, अहम्।

यह तीन प्रकार का होता है–प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष।

(क) प्रथमपुरुष–वह सर्वनाम शब्द है जिसका प्रयोग उस पुरुष के लिये होता है जिसके विषय में कुछ कहा जाता है। जैसे सः, तौ, ते।

इसको अन्यपुरुष भी कहते हैं। संस्कृत में आप शब्द के लिए भवान् शब्द का प्रयोग भी क्रिया के साथ प्रथमपुरुष के रूप में होता है। जैसे सः गच्छति, वह जाता है। भवान् गच्छतु, आप जायें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संज्ञाशब्द तथा निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक शब्द सदा प्रथमपुरुष (अन्यपुरुष) में प्रयोग किये जाते हैं।

(खं) **मध्यमपुरुष**–वह सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग उसके लिए किया जाता है जो उपस्थित हो और जिससे कहा जाय। जैसे–त्वम्, युवाम्, यूयम्। ये रूप सभी मुख्य रूप के लिए समान रूप से बोले जाते हैं।

(ग) **उत्तमपुरुष**–वह सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग बोलनेवाला अपने लिए करता है। जैसे–अहम्, आवाम्, वयम्।

२. **निश्चयवाचक**–वे सर्वनाम शब्द जो किसी वस्तु का निश्चय करते हैं। जैसे–सः तौः ते, एषः एंतौ एते; अयम् इमौ इमे असौ अमू अमी।

३. **अनिश्चयवाचक**–जो सर्वनाम किसी वस्तु का निश्चय बोध न कराये जैसे–कश्चित्, केचित्।

४. **सम्बन्यवाचक**–जो सर्वनाम परस्पर कुछ सम्बन्ध प्रकट करें। जैसे–तस्य पुस्तकम्।

५. **प्रश्नवाचक**–वे सर्वनाम शब्द जो किसी प्रकार का प्रश्न प्रकट करें। जैसे– कः गच्छति, के क्रीडन्ति, त्वम् किं खादसि ?

६. **निजवाचक**–वाक्य में कर्त्ता के लिये जिन शब्दों का प्रयोग होता है वे निजवाचक सर्वनाम होते हैं।

जैसे–अहं स्वगृहं गच्छामि।

इनमें गुणबोधक, परिमाणबोधक, संख्याबोधक और संकेतबोधक विशेषण शब्द का प्रयोग जैसे :–

१. गुणवाचक जैसे–धार्मिकः पुरुषः
२. परिमाणवाचक जैसे–इषद् दुग्धम्
३. संकेतबोधक जैसे–इयम् बालिका
४. संख्याबोधक जैसे–एकः पुरुषः

ऐसे कुछ प्रसिद्ध विशेषण शब्दों की सूची निम्नलिखित है। इनको देंखने से विशेषण शब्दों का एक खाका समझ में आ सकेगा।

अगाध, अधार्मिक, आम्ल, आकुल, इयत्, इष्ट, उच्च, उत्तान, उष्ण, एक, कटिबद्ध, कठिन, कतर, कतम, कनिष्ठ, कपिल, कर्कश, कलुष, कातर, किञ्चित्, कुण्ठ, कुलीन, कोमल, क्षीण, गर्वित, गुणिन्, गौर, ग्राम्य, जागरूक, तृतीय, दीन, घनिष्ठ, धौत, नग्न, पावन, भगीरथ, मधुर, मूढ, भवदीय, रक्ष्य, रम्य, रोचक, लुप्त, विकट, शरण्य, शुभ, सक्त, सफल, सुरभि, सुलक्षण, हर्षित आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ५

क्रिया

कर्त्ता की चेष्टा या सत्ता को क्रिया कहते हैं । जैसे–बालकः गच्छति, बालकः हसति । बालकः गृहे अस्ति । यहाँ गच्छति, हसति और अस्ति से बालक की चेष्टा और सत्ता प्रकट होती है ।

क्रियाओं के मूल शब्दांशों को धातु कहते हैं । संस्कृत भाषा में सभी शब्द धातु से बनते हैं । धातुओं में खास-रगस प्रत्यय जोड़ कर ये शब्द बनते हैं । धातुओं में कुछ प्रत्यय जोड़ कर क्रियाएं बनाई जाती है ।

धातुगण–संस्कृत की समस्त लगभग दो हजार धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है । वे गण निम्नलिखित हैं :–

१. भ्वादिगण २. अदादिगण ३. जुहोत्यादिगण ४. दिवादिगण ५. स्वादिगण, ६. तुदादिगण, रुधादिगण, तनादिगण ९. क्रयादिगण १० चुरादिगण इनके नाम इस गण में सबसे प्रथम प्रारम्भ होने वाली धातु के नाम पर रखे गये हैं । जैसे–भ्वादिगण में भू धातु पहिली धातु है ।

इन गणों के अ:तेरिक्त एक कण्ड्वादि गण भी है जिसमें पठित शब्द धातु भी है और सार्थकशब्द भी है ।

क्रिया के भेद–क्रिया दो प्रकार की होती है–अकर्मक और सकर्मक । जिस क्रिया का फल (प्रभाव) कर्त्ता पर ही रहता है, उसको अकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे–बालकः वर्धते । बालकः क्रीडति । जहां क्रिया का फल कर्त्ता के अतिरिक्त किसी अन्य पर पड़े, उसको सकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे–बालकः फलं खादति । अर्थात्, क्या (?) प्रश्न करने पर यदि कुछ उत्तर न आये तो क्रिया अकर्मक होती है । क्या (?) का उत्तर मिलने पर क्रिया सकंर्मक होती है । जैसे–बालकः किं क्रीडति ? ऐसा प्रश्न करने पर कुछ नहीं मिलता है, अतः 'क्रीडति' अकर्मक क्रिया है । किन्तु बालकः किं खादति ? प्रश्न के उत्तर में 'फलम्' उत्तर मिलता है, अतः खादति क्रिया सकर्मक है ।

अकर्मक धातु–लज्जा, सत्ता, स्थिति, जागरण, वृद्धि, क्षय, भय, जीवन, मरण, शयन, क्रीडा, रुचि और दीप्ति अर्थ में आने वाली धातुएँ अकर्मक होती हैं । जैसे–भू, अस्, स्था, जागृ, वृध, एध, जीव, मृङ्, शीङ्, क्रीड, रुच, दीप् । जैसे–बालकः अस्ति । बालकः जागर्ति । बालकः जीवति आदि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धातु के भेद (पद के अनुसार)

धातुएँ तीन प्रकार की होती हैं। १. परस्मैपदी २. आत्मनेपदी ३. उभयपदी, परस्मैपदी धातुओं के साथ परस्मैपद प्रत्यय लगते हैं। आत्मनेपद धातुओं के साथ आत्मनेपद प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे–

रक्ष् रक्षा करना परस्मैपदी धातु से रक्षति, रक्षतः, रक्षन्ति आदि क्रिया रूप बनेंगे। मुद् प्रसन्न होना आत्मनेपदी धातु से मोदते, मोदेते, मोदन्ते आदि क्रिया रूप बनेंगे। भज् सेवा करना, भजन करना उभयपदी भजति भजतः भजन्ति आदि क्रियारूप परस्मैपद में बनेंगे और इसमें धातु से भजते भजेते भजन्ते आदि क्रिया रूप आत्मनेपद में बनेंगे। उभयपदी में दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं।

प्रयोग में परस्मैपद की क्रिया का प्रयोग दूसरे के लिए और आत्मनेपद की क्रिया का प्रयोग अपने लिए किया जाना चाहिये किन्तु व्यवहार में लोग न तो लिखने में और न बोलने में ही इस नियम का पालन करते हैं। अतः ऐसा करना गलत भी नहीं माना जाता।

काल और वृत्तियाँ (Tenses and Moods)

संस्कृत भाषा में निम्नलिखित तीन काल और ४ वृत्तियाँ (क्रियार्थ भेद) होते हैं।

काल

काल तीन प्रकार के होते हैं–

१. वर्तमान काल (Present Tense)

२. अतीत काल (Past Tense)

३. भविष्यत् काल (Future Tense)

इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

१. वर्तमान काल (Present Tense)–वर्तमान काल की क्रिया का प्रयोग वर्तमान काल में होता है। जैसे–बालकः पठति। बालक पढ़ता है।

२. भूत काल (Past Tense) –संस्कृत भाषा में भूत काल को सूचित करने के लिये ये ३ प्रकार बनाये गये हैं :–

१. अनद्यतन भूतकाल (Imperfect Past Tense)

२. अतीत भूतकाल (Perfect Past Tense)

३. सामान्य भूतकाल (Aorist Past Tense)

१. इनके प्रयोग में थोड़ा अन्तर होता है। अद्यतन का अर्थ होता है आज अनद्यतन का अर्थ हुआ आज नहीं। अतः इस काल का प्रारम्भ ऐसी दशा में होता है जब क्रिया आज पूरी न हुई हो। कल या इससे पूर्व समाप्त हुई हो। जैसे–वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया, सः अगच्छत् । किन्तु इस प्रकार की क्रिया में आज का सूचक कोई शब्द नहीं होना चाहिए । जैसे–वह आज गया, सः अद्य अगच्छत् में जाने की क्रिया आज ही पूरी गई । अतः अगच्छत् क्रिया नहीं लगेगी ।

२. अतीत भूतकाल की क्रिया का प्रयोग पुरानी घटनाओं के लिये होता है जिसको अपनी आँखों से न देखा गया हो । जैसे–राम राजा हुए । रामः राजा बभूव ।

३. सामान्य भूत–इसका प्रयोग सब कहीं प्रयोग में लाया जा सकता है । चाहे क्रिया आज सम्पन्न हुई हो या वर्षों पहिले हो चुकी हो ।

संस्कृत में भूतकाल की क्रिया के साथ 'मा' शब्द लगा देने पर उल्टा अर्थ (निषेध) हो जाता है । जैसे–त्वम् तत्र मा गमः । तुम वहाँ मत जाओ । मा लगने पर क्रिया के रूप के प्रथम अक्षर अ या आ का लोप हो जाता है । जैसे अगमः का गमः होगा ।

मा स्म के साथ भूतकाल में अद्यतन भूतकाल का भी प्रयोग होता है ?

जैसे–त्वं तत्र मा स्म गच्छः । चिन्तातुरः मा स्म भवः । यदि 'आज' 'कल' आदि की कोई शर्त न हो तो इन तीनों में से किसी भूतकाल का भी प्रयोग किया जा सकता है । जैसे–

सः तत्र जगाम ।

सः तत्र अगच्छत् ।

सः तत्र अगमत् ।

वर्तमान काल की क्रिया रूप के साथ स्म लगाने पर भी भूतकाल हो जाता है । जैसे–तत्र वने एक सिंहः प्रतिवसति स्म ।

३. भविष्यत् काल–इस काल में क्रिया को सूचित करने के लिए अनद्यतन भविष्यत् और सामान्य भविष्यत् दो भेद किये गये हैं ।

अनद्यतन भविष्यत्–जो कार्य आज के बाद (२४ घंटे के बाद) होने वाला हो उसमें इसका प्रयोग होता है ।

जैसे–श्वः सायंकाले एका सभा भविता । कल एक सभा होगी । अनद्यतन भविष्यत् का प्रयोग सामान्य भविष्यत् काल में भी होता है । अर्थात् कल परसों आदि विशेषण न लगे हों तो चाहे वह आज का हो या बाद में होने वाला हो उसमें सामान्य भविष्यत् होगा । जैसे–संस्कृतपरिषदि किं भविष्यति ? संस्कृत परिषद् में क्या होगा । रात्रि गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम् । रात बीतेगी और सबेरा होगा । बालकाः क्रीडिष्यन्ति । बालक खेलेंगे ।

विधि वृत्ति (Potential mood)–इसका प्रयोग आशीर्वाद को छोड़ कर आज्ञा देने, अनुमति देने, प्रशंसा करने, प्रार्थना करने तथा विधि और निषेध में होता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–सः तत्र गच्छेत् । वह वहाँ जाय । उसको वहाँ जाना चाहिये । अद्य वर्षा भवेत् । आज वर्षा हो (सम्भावना) । गुरुं नत्वा गच्छेत् । गुरु को प्रणाम करके जाना चाहिये । भवान् मम गृहे आगच्छेत् ? आप मेरे घर आयें ।

आशीष वृत्ति–का प्रयोग केवल आशीर्वाद देने में होता है ।

जैसे–त्वं तेजस्वी भूयाः । तुम तेजस्वी होओ । आशीर्वाद के लिए आज्ञा का भी प्रयोग करते हैं, जैसे त्वं आयुष्मान् भव ।

आज्ञा वृत्ति Imperative Mood–इसका प्रयोग आज्ञा लेने, स्वीकृति लेने, प्रशंसा करने, प्रार्थना करने और निमंत्रण देने आदि के अर्थ में होता है । आशीर्वाद अर्थ में भी इसका प्रयोग देखने में आता है ।

जैसे–बालकः गच्छतु । बालक जाय ।

अहं कुत्र गच्छानि ? मैं कहाँ जाऊँ ?

त्वं यशः लभस्व । तुमको यशः मिले ।

क्रियातिपत्ति Conditional Mood का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कोई शर्त्त लगी हुई हो और किसी क्रिया का न होना कहने की बात हो ।

जैसे–यदि त्वं अत्र आगमिष्यः तर्हि अहं त्वाम् अपाठयिष्यम्, यदि तुम यहाँ आये होते तो मैं तुमको पढ़ाता ।

पठ् (परस्मैपदी)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वर्तमान काल	प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
	मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
	उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः
अनद्यतन भूतकाल	प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
	मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
	उत्तम पुरूष	अपठम्	अपठाव	अपठाम
अतीत भूतकाल	प्रथम पुरुष	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
	मध्यम पुरुष	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
	उत्तम पुरुष	पपाठ, पपठ	पेठिव	पेठिम
सामान्य भूतकाल	प्रथम पुरुष	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
	मध्यम पुरुष	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
	उत्तम पुरुष	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म
अनद्यतन भविष्यत् काल	प्रथम पुरुष	पठिता	पठितारौ	पठितारः
	मध्यम पुरुष	पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ
	उत्तम पुरुष	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सामान्य भविष्यत् काल	प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
	मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
	उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
आज्ञा	प्रथम पुरुष	पठतु, पठतात्	पठताम्	पठन्तु
	मध्यम पुरुष	पठ, पठतात्	पठतम्	पठत
	उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम
विधि	प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
	मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
	उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेव
आशीर्वाद	प्रथम पुरुष	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
	मध्यम पुरुष	पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त
	उत्तम पुरुष	पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म
क्रियात्तिपत्ति	प्रथम पुरुष	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन्
	मध्यम पुरुष	अपठिष्यः	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत
	उत्तम पुरुष	अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम

तिङन्तरूप–मुद् (आत्मनेपदी)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वर्तमान काल	प्रथम पुरुष	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
	मध्यम पुरुष	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
	उत्तम पुरुष	मोदे	मोदावहे	मोदामहे
अनद्यतन भूतकाल	प्रथम पुरुष	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
	मध्यम पुरुष	अमोदथाः	अमोदेथाम्	आमोदध्वम्
	उत्तम पुरुष	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि
अतीत भूतकाल	प्रथम पुरुष	मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे
	मध्यमं पुरुष	मुमुदिषे	मुमुदाथे	मुमुदिध्वे
	उत्तम पुरुष	मुमुदे	मुमुदिवहे	मुमुदिमहे
सामान्य भूतकाल	प्रथम पुरुष	अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत
	मध्यम पुरुष	अमोदिष्ठाः	अमोदिषाथाम्	अमोदिध्वम्
	उत्तम पुरुष	अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि
अद्यतन भविष्यत् काल	प्रथम पुरुष	मोदिता	मोदितारौ	मोदितारः
	मध्यम पुरुष	मोदितासे	मोदितासाथे	मोदिताध्वे
	उत्तम पुरुष	मोदिताहे	मोदितास्वहे	मोदितास्महे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सामान्य भविष्यत् काल	प्रथम पुरुष	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
	मध्यम पुरुष	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
	उत्तम पुरुष	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे
आज्ञा	प्रथम पुरुष	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
	मध्यम पुरुष	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
	उत्तम पुरुष	मोदै	मोदावहै	मोदामहै
विधि	प्रथम पुरुष	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
	मध्यम पुरुष	मोदेथा:	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
	उत्तम पुरुष	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि
आशीर्वाद	प्रथम पुरुष	मोदिषीष्ट	मोदिषीयास्ताम्	मोदिषीरन्
	मध्यम पुरुष	मोदिषीष्ठा:	मोदिषीयास्थाम्	मोदिषीध्वम्
	उत्तम पुरुष	मोदिषीय	मोदिषीवहि	मोदिषीमहि
क्रियात्तिपत्ति	प्रथम पुरुष	अमोदिष्यत	अमोदिष्येताम्	अमोदिष्यन्त:
	मध्यम पुरुष	अमोदिष्यथा:	अमोदिष्येथाम्	अमोदिष्यध्वम्
	उत्तम पुरुष	अमोदिष्ये	अमोदिष्यावहि	अमोदिष्यामहि

ऊपर १०–काल के छ: और वृत्तिओं के चार प्रकार का वर्णन किया गया है। किन्तु प्रारम्भ में केवल छ: से ही काम चल सकता है।

१. वर्तमान काल (Present Tense)

२. अनद्यनत भूत (Imperfect Tense)

३. अतीत भूतकाल (Perfect Tense)

४. सामान्य भविष्यत् (Simple Future)

५. आज्ञा वृत्ति (Imperative mood)

६. विधि वृत्ति (Potentional mood)

विभिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए भिन्न-भिन्न रीति से जो क्रिया का विधान किया जाता है उसको क्रिया का अर्थभेद या वृत्ति (Mood) कहते हैं।

काल और वृत्तियाँ सूचक प्रत्यय

काल और वृत्तियों (moods) के सूचक प्रत्यय काल और वृत्ति के अलग-अलग होते हैं। वे धातुओं के साथ लगाये जाते हैं तो क्रियायें बनती हैं। ये प्रत्यय पदस्मैपदी और आत्मनेपदी के अलग-अलग होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरुष और वचन

पुरुष–पुरुष तीन प्रकार के होते हैं–प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष। उत्तमपुरुष अपने लिए अहम्, आवाम्, वयम्। मध्यमपुरुष त्वम्, यूवाम्, यूयम् और शेष कर्त्ता के लिए प्रथमपुरुष या अन्य पुरुष सः तौ ते आदि तथा अन्यं व्यक्ति और जातिवाचक शब्द कर्त्ता के रूप भी होते हैं।

वचन–संस्कृत भाषा में शब्द के तीन वचन होते हैं। एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। एक के लिए एकवचन, दो के लिये द्विवचन और दो से अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। यहाँ वर्तमान काल के प्रत्ययों को पठ धातु के साथ लगा कर एक उदाहरण प्रस्तुत है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठंति	तौ पठति	ते पठन्ति
मध्यम पुरुष	त्वम् पठसि	युवाम् पठथः	यूयम् पठथ
उत्तम पुरुष	अहम् पठामि	आवाम् पठावः	वयम् पठामः

यहाँ पर प्रत्यय में सः तौ ते के स्थान पर रामः रामौ रामाः या बालकः बालकौ बालकाः आदि जो कर्ता चाहे लिख सकते हैं किन्तु मध्यम और उत्तम पुरुष में कर्त्ता में परिवर्तन नहीं होगा।

(१) वर्तमान काल

परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तस्	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थस्	थः
उत्तम पुरुष	मि	वस्	मस्

आत्मनेपद

प्रथम पुरुष	ते	इते	अन्ते
मध्यम पुरुष	से	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	इ	वहे	महे

नोट–दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें, और नवें गण की धातुओं के उपरान्त आत्मनेपद में ये प्रत्यय लगते हैं–

प्रथम पुरुष	ते	आते	अन्ते
मध्यम पुरुष	से	आथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	ए	वहे	महे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२) अनद्यतन भूत्

परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	स्	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	व	म

आत्मनेपद

प्रथम पुरुष	त	इताम्	अन्त
मध्यम पुरुष	थास्	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इ	वहि	महि

नोट–दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें, आठवें और नवें गण की धातुओं के उपरान्त आत्मनेपद में ये प्रत्यय लगते हैं–

प्रथम पुरुष	त	आताम्	अत
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	ई	वहि	महि

(३) अतीत भूत

परस्मैपद

प्रथम पुरुष	अ	अतुस्	उस्
मध्यम पुरुष	थ	अथुस्	अ
उत्तम पुरुष	अ	व	म

आत्मनेपद

प्रथम पुरुष	ए	आते	इरे
मध्यम पुरुष	से	आथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	ए	वहे	महे

नोट–अतीत भूत के एक प्रकार के रूप इन प्रत्ययों को जोड़ कर बनते हैं। दूसरे प्रकार के रूप धातु में कृ, भू अथवा अस् के रूप जोड़ कर बनते हैं। इस दशा में धातु और इन रूपों के बीच में आम् जोड़ दिया जाता है। जिस पद की धातु होती है, उसी पद के रूप जोड़े जाते हैं; जैसे–ईड् धातु से ईडाञ्चके, ईडाम्बभूव, ईडामास आदि।

(४) सामान्य भविष्यत्

परस्मैपद

प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

आत्मनेपद

प्रथम पुरुष	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

(५) आज्ञा

परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	तु या तात्	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

आत्मनेपद

प्रथम पुरुष	ताम्	इताम्	अन्ताम्
मध्यम पुरुष	स्व	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै

नोट–दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें, आठवें और नवें गण की धातुओं के उपरान्त परस्मैपद में ऊपर प्रत्यय लगते हैं, केवल म० पु० एक वचन में 'हि' जोड़ा जाता है। इन गणों में आत्मनेपद में ये प्रत्यय लगते हैं–

(६) विधि

परस्मैपद

प्रथम पुरुष	ईत्	ईताम्	ईयुः
मध्यम पुरुष	ईः	ईतम्	ईत
उत्तम पुरुष	ईयम्	ईव	ईम

आत्मनेपद

प्रथम पुरुष	इत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम पुरुष	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम पुरुष	ईय	ईवहि	ईमहि

नोट–दूसरे, तीसरे पाँचवें, आठवें और नवें गण की धातुओं के उपरान्त आत्मने पद में ये प्रत्यय लगते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम पुरुष	यात्	याताम्	युस्
मध्यम पुरुष	यास्	यातम्	यात
उत्तम पुरुष	याम्	याव	याम

वाच्य

क्रिया तीन वाच्यों में होती है (१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य। प्रत्येक धातु से कर्तृवाच्य रूप बनते हैं। जैसे–बालकः पठति, रमा क्रीडति आदि। कर्त्ता के साथ कर्म रहने पर बालकः ग्रन्थं पठति। कर्मवाच्य में कर्त्ता से तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है तथा कर्म में प्रथमा का रूप लगा कर क्रिया को आत्मनेपद की विभक्ति बना देते हैं। जैसे–बालकेन ग्रन्थः पठयते।

कर्त्ता के साथ क्रिया अकर्मक होती है तो वाच्य परिवर्तन में उनको भाव वाच्य कहते हैं। जैसे–बालकः क्रीडति से बालकेन क्रीड्यते। भाववाच्य और कर्मवाच्य का स्वरूप एक समान हो तो केवल कर्म एक में रहता है दूसरे में नहीं।

सेट् और अनिट्

धातुओं के दो वर्ग हैं सेट् और अनिट् (जिन धातुओं के रूपों में अनद्यतन, अतीत भूत, भविष्यत, सामान्य भविष्यत्, सामान्य भूत, क्रियातिपत्ति में तथा तव्य, तव्यत् तुसुन् क्त्वा आदि प्रत्ययों में इ दिखाई दे (इट् का आगम हुआ हो) यह सेट् धातु होती है।

जैसे–पठिता, पठिष्यति, अपाठीत्, अपठिष्यत्, पठितव्यः, पठितुम्, पठित्वा।

जहाँ इ न लगा हो वह अनिट् धातु होती है।

जैसे–त्यक्ता, त्यक्ष्यति, अत्याक्षीत्, अत्यक्ष्यत्, त्यक्त्वा त्यक्तुम्। अतः पठ् धातु सेट् है और त्यज् धातु अनिट्।

अनिट् और सेट् धातुओं को याद रखने के लिए आचार्य व्याघ्र मूनि की कारिकाओं में स्पष्ट विवेचन किया गया है।

सार्वधातुक और आर्धधातुक

धातुओं के दो भेद सार्वधातुक और आर्धधातुक होते हैं। बहुत स्थान पर धातु का मूल रूप सार्वधातुक में बदल जाता है। जैसे 'स्था' धातु का आदि भूत में 'तिष्ठ' रूप हो जाता है। उसी तरह 'गम्' धातु का 'गच्छ' रूप हो जाता है! ऐसा परिवर्तन केवल सार्वधातुको में होता है आर्धधातुक में नहीं।

कृदन्तों में भी शतृ और शानच् में धातु का मूल है जैसे तिष्ठ। अन्य कृदन्त प्रत्ययों में धातु का मूल रूप ही रहता है। इसके उदाहरण वहाँ दिये गये हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्ययान्त धातु

प्रशंसा के अर्थ में, इच्छा के अर्थ में, पुनः पुनः और अतिशय अर्थ में से धातु में धातुओं के भेद प्रत्ययान्त धातु कहते हैं। जैसे–पठ से पाठयति, पिपठिषति पापठ्यते।

वाक्य रचना में क्रिया

संस्कृत भाषा में वाक्य रचना करने में हिन्दी और अंग्रेजी भाषा की तरह कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रम से लिखने का कोई नियम या बन्धन नहीं है।

जैसे–

मैं एक पुस्तक पढ़ता हूँ।

I Read a book.

अहम् एकम् पुस्तकम् पठामि।

इसमें संस्कृत वाक्य को इस प्रकार से भी लिख सकते हैं –

पठामि अहम् एकम् पुस्तकम्।

पठाम्यहं एंकम् पुस्तकम्।

एकम् पुस्तकमहं पठांमि।

१–परस्मैपदी भू–होना

वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
मध्यम पुरुष	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उत्तम पुरुष	बभूव	बभूविव	बभूविम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधि

प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

२—परस्मैपदी हस्—हँसना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	हसति	हसत:	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथ:	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसाव:	हसाम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहस:	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जहास	जहसतु:	जहसु:
मध्यम पुरुष	जहसिथ	जहसथु:	जहस
उत्तम पुरुष	जहास, जहस	जहसिव	जहसिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यत:	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथ:	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्याव:	हसिष्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम

विधि

प्रथम पुरुष	हसेत्	हसेताम्	हसेयु:
मध्यम पुरुष	हसे:	हसेतम्	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	हसेम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३—परस्मैपदी रक्ष् — बनाना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उत्तम पुरुष	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
मध्यम पुरुष	अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत
उत्तम पुरुष	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ररक्ष	ररक्षतुः	ररक्षुः
मध्यम पुरुष	ररक्षिथ	ररक्षथुः	ररक्ष
उत्तम पुरुष	ररक्ष	ररक्षिव	ररक्षिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
उत्तम पुरुष	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
मध्यम पुरुष	रक्ष	रक्षतम्	रक्षत
उत्तम पुरुष	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम

विधि

प्रथम पुरुष	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
मध्यम पुरुष	रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत
उत्तम पुरुष	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम

४—परस्मैपदी वद् — बोलना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम पुरुष	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तम पुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	उवाद्	ऊदतुः	ऊदुः
मध्यम पुरुष	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
उत्तम पुरुष	उवाद, उवद	ऊदिव	ऊदिम

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम पुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

विधि

प्रथम पुरुष	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
मध्यम पुरुष	वदेः	वदेतम्	वदेत
उत्तम पुरुष	वदेयम्	वदेव	वदेम

५—परस्मैपदी पठ् — पढ़ना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पपाठ	पेठतु	पेठुः
मध्यम पुरुष	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
उत्तम पुरुष	पपाठ, पपठ	पेठिव	पेठिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठथ
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधि

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

६—परस्मैपदी नम्—झुकना, नमस्कार करना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यम पुरुष	अनमः	अनमतम्	अनमत
उत्तम पुरुष	अनमम्	अनमाव	अनमाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ननाम	नेमतुः	नेमुः
मध्यम पुरुष	नेमिथ, ननन्थ	नेमथुः	नेम
उत्तम पुरुष	ननाम, ननम	नेमिव	नेमिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
मध्यम पुरुष	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उत्तम पुरुष	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यम पुरुष	नम	नमतम्	नमत
उत्तम पुरुष	नमानि	नमाव	नमाम

विधि

प्रथम पुरुष	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यम पुरुष	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तम पुरुष	नमेयम्	नमेव	नमेम

७—परस्मैपदी गम् – जाना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
मध्यम पुरुष	जग्मिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
उत्तम पुरुष	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधि

प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

८—परस्मैपदी दृश् – देखना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
मध्यम पुरुष	ददर्शिथ, दद्रष्ट	ददृशथुः	ददृश
उत्तम पुरुष	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

९—परस्मैपदी सद्—बैठना, डूबना, नष्ट होना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
मध्यम पुरुष	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उत्तम पुरुष	सीदामि	सीदावः	सीदामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
मध्यम पुरुष	असीदः	असीदतम्	असीदत
उत्तम पुरुष	असीदम्	असीदाव	असीदाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ससाद	सेदतुः	सेदुः
मध्यम पुरुष	सेदिथ, ससाथ	सेदथुः	सेद
उत्तम पुरुष	ससाद, ससद	सेदिव	सेदिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ
उत्तम पुरुष	सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
मध्यम पुरुष	सीद	सीदतम्	सीदत
उत्तम पुरुष	सीदानि	सीदाव	सीदाम

विधि

प्रथम पुरुष	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
मध्यम पुरुष	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उत्तम पुरुष	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०—परस्मैपदी स्था—खड़ा होना, ठहरना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

अतीत भतकाल

प्रथम पुरुष	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
मध्यम पुरुष	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थथुः	तस्थ
उत्तम पुरुष	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधि

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

११—परस्मैपदी स्मृ—याद करना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उत्तम पुरुष	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
मध्यम पुरुष	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उत्तम पुरुष	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
मध्यम पुरुष	सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर
उत्तम पुरुष	सस्मार, सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उत्तम पुरुष	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
मध्यम पुरुष	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उत्तम पुरुष	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

विधि

प्रथम पुरुष	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
मध्यम पुरुष	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उत्तम पुरुष	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

१२–परस्मैपदी पा–(पिब्)–पीना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पपौ	पपतुः	पपुः
मध्यम पुरुष	पपिथ, पपाथ	पपथु	पप
उत्तम पुरुष	पपौ	पपिव	पपिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधि

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

१३—परस्मैपदी जि—जीतना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	जयति	जयतः	जयन्ति
मध्यम पुरुष	जयसि	जयथः	जयथ
उत्तम पुरुष	जयामि	जयावः	जयामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
मध्यम पुरुष	अजयः	अजयतम्	अजयत
उत्तम पुरुष	अजयम्	अजयाव	अजयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
मध्यम पुरुष	जिगयिथ, जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य
उत्तम पुरुष	जिगाय, जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उत्तम पुरुष	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	जयतु	जयताम्	जयन्तु
मध्यम पुरुष	जय	जयतम्	जयत
उत्तम पुरुष	जयानि	जयाव	जयाम

विधि

प्रथम पुरुष	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
मध्यम पुरुष	जयेः	जयेतम्	जयेत
उत्तम पुरुष	जयेयम्	जयेव	जयेम

१४—परस्मैपदी श्रु—सुनना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व	अशृणुम, अशृण्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
मध्यम पुरुष	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
उत्तम पुरुष	शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधि

प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

१५—परस्मैपदी घ्रा--सूँघना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
मध्यम पुरुष	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उत्तम पुरुष	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
मध्यम पुरुष	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उत्तम पुरुष	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जघ्रौ	जघ्रतुः	जघ्रुः
मध्यम पुरुष	जघ्रिथ	जघ्रथुः	जघ्र
उत्तम पुरुष	जघ्रौ	जघ्रिव	जघ्रिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
मध्यम पुरुष	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उत्तम पुरुष	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
मध्यम पुरुष	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उत्तम पुरुष	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	ज़िघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
मध्यम पुरुष	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उत्तम पुरुष	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

१६—आत्मनेपदी सेव् – सेवा करना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेव	असेवावहि	असेवामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	सिषेवे	सिषेवाते	सिषेविरे
मध्यम पुरुष	सिषेविषे	सिषेवाथे	सिषेविध्वे
उत्तम पुरुष	सिषेवे	सिसेविवहे	सिषेविमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधि

प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७—आत्मनेपदी—लभ्—पाना

वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	लेभे	लेभाते	लेभिरे
मध्यम पुरुष	लेभिषे	लेभाथे	लेभिध्वे
उत्तम पुरुष	लेभे	लेभिवहे	लेभिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधि

प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

१८—आत्मनेपदी वृध्—(वर्ध्)—बढ़ना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
मध्यम पुरुष	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ववृधे	ववृधाते	ववृधिरे
मध्यम पुरुष	ववृधिषे	ववृधावे	ववृधिध्वे
उत्तम पुरुष	ववृधे	ववृधिवहे	ववृधिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

अथवा

प्रथम पुरुष	वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथः	वर्त्स्यथ
उत्तम पुरुष	वर्त्स्यामि	वर्त्स्यावः	वर्त्स्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

विधि

प्रथम पुरुष	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
मध्यम पुरुष	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

१९—आत्मनेपदी—मुद् (मोद्)—प्रसन्न होना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
मध्यम पुरुष	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उत्तम पुरुष	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
मध्यम पुरुष	अमोदथा:	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उत्तम पुरुष	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे
मध्यम पुरुष	मुमुदिषे	मुमुदाथे	मुमुदिध्वे
उत्तम पुरुष	मुमुदे	मुमुदिवहे	मुमुदिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
मध्यम पुरुष	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उत्तम पुरुष	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

विधि

प्रथम पुरुष	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
मध्यम पुरुष	मोदेथा:	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उत्तम पुरुष	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

२०—आत्मनेपदी—सह्—सहना

वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सहते	सहेते	सहन्ते
मध्यम पुरुष	सहसे	सहेथे	सहध्वे
उत्तम पुरुष	सहे	सहावहे	सहामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	असहत	असहेताम्	असहन्त
मध्यम पुरुष	असहथा:	असहेथाम्	असहध्वम्
उत्तम पुरुष	असहे	असहावहि	असहामहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	सेहे	सेहाते	सेहिरे
मध्यम पुरुष	सेहिथे	सेहाथे	सेहिध्वे
उत्तम पुरुष	सेहे	सेहिवहे	सेहिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
मध्यम पुरुष	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
उत्तम पुरुष	सहै	सहावहै	सहामहै

विधि

प्रथम पुरुष	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
मध्यम पुरुष	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
उत्तम पुरुष	सहेय	सहेवहि	सहेमहि

२१–उभयपदी–पच्–पकाना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पपाच	पेचतुः	पेचुः
मध्यम पुरुष	पेचिथ, पपक्थ	पेचथुः	पेच
उत्तम पुरुष	पपाच-पपच	पेचिव	पेचिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

विधि

प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

पच् के रूप आत्मनेपद में

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पचते	पचेते	पचन्ते
मध्यम पुरुष	पचसे	पचेथे	पचध्वे
उत्तम पुरुष	पचे	पचावहे	पचामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपचत	अपचेताम्	अपचन्त
मध्यम पुरुष	अपचथाः	अपचथाम्	अपचध्वम्
उत्तम पुरुष	अपचे	अपचावहि	अपचामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पेचे	पेचाते	पेचिरे
मध्यम पुरुष	पेचिषे	पेचाथे	पेचिध्वे
उत्तम पुरुष	पेचे	पेचिवहे	पेचिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	पक्ष्यते	पक्ष्येते	पक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसे	पक्ष्येथे	पक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुष	पक्ष्ये	पक्ष्यावहे	पक्ष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पचताम्	पचेताम्	पचन्ताम्
मध्यम पुरुष	पचस्व	पचेथाम्	पचध्वम्
उत्तम पुरुष	पचै	पचावहै	पचामहै

विधि

प्रथम पुरुष	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
मध्यम पुरुष	पचेथाः	पचेयाथाम्	पचेध्वम्
उत्तम पुरुष	पचेय	पचेवहि	पचेमहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२—उभयपदी—याच्—माँगना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	याचति	याचतः	याचन्ति
मध्यम पुरुष	याचसि	याचथः	याचथ
उत्तम पुरुष	याचामि	याचावः	याचामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
मध्यम पुरुष	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उत्तम पुरुष	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	ययाच	ययाचतुः	ययाचुः
मध्यम पुरुष	ययाचिथ	ययाचथुः	ययाच
उत्तम पुरुष	ययाच	ययाचिव	ययाचिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उत्तम पुरुष	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	याचतु	याचताम्	याचन्तु
मध्यम पुरुष	याचं	याचतम्	याचत
उत्तम पुरुष	याचानि	याचाव	याचाम

विधि

प्रथम पुरुष	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
मध्यम पुरुष	याचेः	याचेतम्	याचेत
उत्तम पुरुष	याचेयम्	याचेव	याचेम

याच् के रूप आत्मनेपद में

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	याचते	याचेते	याचन्ते
मध्यम पुरुष	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उत्तम पुरुष	याचे	याचावहे	याचामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
मध्यम पुरुष	अयाचथा:	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उत्तम पुरुष	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	ययाचै	ययाचाते	ययाचिरे
मध्यमं पुरुष	ययाचिषे	ययाचाथे	ययाचिध्वे
उत्तम पुरुष	ययाचे	ययाचिवहे	ययाचिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
मध्यम पुरुष	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उत्तम पुरुष	याचै	याचावहै	याचामहै

विधि

प्रथम पुरुष	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
मध्यम पुरुष	याचेथा:	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उत्तम पुरुष	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

२३–उभयपदी–नी–ले जाना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	नयति	नयत:	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथ:	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयाव:	नयाम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनय:	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	निनाय	निन्यतुः	निन्युः
मध्यम पुरुष	निनयिथ, निनेथ	निन्यथुः	निन्य
उत्तम पुरुष	निनाय, निनय	निन्यिव	निन्यिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधि

प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

नी के रूप आत्मनेपद में

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	नयते	नयेते	नयन्ते
मध्यम पुरुष	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उत्तम पुरुष	नये	नयावहे	नयामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
मध्यम पुरुष	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उत्तम पुरुष	अनये	अनयावहि	अनयामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
मध्यम पुरुष	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे, ढ्वे
उत्तम पुरुष	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
मध्यम पुरुष	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उत्तम पुरुष	नयै	नयावहै	नयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेयाताम्	नयेरन्
मध्यम पुरुष	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उत्तम पुरुष	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

२४—उभयपदी-हृ—चुराना, ले जाना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	हरति	हरतः	हरन्ति
मध्यम पुरुष	हरसि	हरथः	हरथ
उत्तम पुरुष	हरामि	हरावः	हरामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
मध्यम पुरुष	अहरः	अहरतम्	अहरत
उत्तम पुरुष	अहरम्	अहराव	अहराम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जहार	जहतुः	जहुः
मध्यम पुरुष	जहर्थ	जह्रथुः	जह्र
उत्तम पुरुष	जहार, जहर	जह्रिव	जह्रिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उत्तम पुरुष	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	हरतु	हरताम्	हरन्तु
मध्यम पुरुष	हर	हरतम्	हरत
उत्तम पुरुष	हराणि	हराव	हराम

विधि

प्रथम पुरुष	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
मध्यम पुरुष	हरेः	हरेतम्	हरेत
उत्तम पुरुष	हरेयम्	हरेव	हरेम

हृ धातु के रूप आत्मनेपद में

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	हरते	हरेते	हरन्ते
मध्यम पुरुष	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उत्तम पुरुष	हरे	हरावहे	हरामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अहरत	अहरताम्	अहरन्त
मध्यम पुरुष	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उत्तम पुरुष	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
मध्यम पुरुष	जह्रिषे	जह्राथे	जह्रिध्वे
उत्तम पुरुष	चह्रे	जह्रिवहे	जह्रिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
मध्यम पुरुष	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उत्तम पुरुष	हरै	हरावहै	हरामहै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
मध्यम पुरुष	हरेथा:	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उत्तम पुरुष	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

२५—परस्मैपदी—अद्—भोजन करना, खाना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्त:	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थ:	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्व:	अद्म:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्, आदु:
मध्यम पुरुष	आद:	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जघास	जक्षतु:	जक्षु:
मध्यम पुरुष	जघसिथ	जक्षुथु:	जक्ष
उत्तम पुरुष	जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यत:	अत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथ:	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्याव:	अत्स्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

विधि

प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्यु:
मध्यम पुरुष	अद्या:	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अंद्याम्	अद्याव	अद्याम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२६—परस्मैपदी अस्—होना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
मध्यम पुरुष	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उत्तम पुरुष	बभूब	बभूविव	बभूविम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधि

प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

२७—उभयपदी ब्रू—कहना, बोलना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	ब्रवीति, आह	ब्रूतः, आहतुः	ब्रुवन्ति, आहुः
मध्यम पुरुष	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम पुरुष	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
मध्यम पुरुष	उवचिथ, उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
उत्तम पुरुष	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रवन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधि

प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
मध्यम पुरुष	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

२८—परस्मैपदी—पा—रक्षा करना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पाति	पातः	पान्ति
मध्यम पुरुष	पासि	पाथः	पाथ
उत्तम पुरुष	पामि	पावः	पामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपात्	अपाताम्	अपुः
मध्यम पुरुष	अपाः	अपातम्	अपात
उत्तम पुरुष	अपाम्	अपाव:	अपामः

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पपौ	पपतुः	पपुः
मध्यम पुरुष	पपिथ, पपाथ	पपथुः	पप
उत्तम पुरुष	पपौ	पपित	पपिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पातु	पाताम्	पान्तु
मध्यम पुरुष	पाहि	पातम्	पात
उत्तम पुरुष	पानि	पाव	पाम

विधि

प्रथम पुरुष	पायात्	पायाताम्	पायुः
मध्यम पुरुष	पायाः	पायातम्	पायात
उत्तम पुरुष	पायाम्	पायाव	पायाम

२९—परस्मैपदी—रुद्—रोना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
मध्यम पुरुष	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उत्तम पुरुष	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरोदीत्, अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
मध्यम पुरुष	अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
उत्तम पुरुष	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	रुरोद	रुरुदतुः	रुरुदुः
मध्यम पुरुष	रुरोदिथ	रुरुदथुः	रुरुद
उत्तम पुरुष	रुरोद	रुरुदिव	रुरुदिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उत्तम पुरुष	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
मध्यम पुरुष	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
उत्तम पुरुष	रोदानि	रोदाव	रोदाम

विधि

प्रथम पुरुष	रुद्यात्	रुद्यताम्	रुद्युः
मध्यम पुरुष	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उत्तम पुरुष	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

३०–उभयपदी–दुह्–दुहना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
मध्यम पुरुष	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उत्तम पुरुष	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
मध्यम पुरुष	अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उत्तम पुरुष	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	दुदोह	दुदुहतुः	दुदुहुः
मध्यम पुरुष	दुदोहिथ	दुदुहथुः	दुदुह
उत्तम पुरुष	दुदोह	दुदुहिव	दुदुहिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
मध्यम पुरुष	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उत्तम पुरुष	दोहानि	दोहाव	दोहाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
मध्यम पुरुष	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उत्तम पुरुष	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

३१—परस्मैपदी स्वप्

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	स्वपति	स्वपतः	स्वपन्ति
मध्यम पुरुष	स्वपसि	स्वपथः	स्वपथ
उत्तम पुरुष	स्वपामि	स्वपावः	स्वपामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अस्वपीत्, अस्वपत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
मध्यम पुरुष	अस्वपीः अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
उत्तम पुरुष	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
मध्यम पुरुष	सुष्वपिथ, सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
उत्तम पुरुष	सुष्वाप, सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उत्तम पुरुष	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
मध्यम पुरुष	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
उत्तम पुरुष	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

विधि

प्रथम पुरुष	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
मध्यम पुरुष	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उत्तम पुरुष	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२—परस्मैपदी—हन्—मारना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	हन्ति	हत:	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हंसि	हथ:	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्व:	हन्म:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जघान	जघ्नतु:	जघ्नु:
मध्यम पुरुष	जघनिथ, जघन्थ	जघ्नथु:	जघ्न
उत्तम पुरुष	जघान, जघन	जघ्निव	जघ्निम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यत:	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथ:	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्याव:	हनिष्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

विधि

प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्यु:
मध्यम पुरुष	हन्या:	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

३३—परस्मैपदी—इ—जाना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	एति	इत:	यन्ति
मध्यम पुरुष	एषि	इथ:	इथ
उत्तम पुरुष	एमि	इव:	इम:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	ऐत्	ऐताम्	आयन्
मध्यम पुरुष	ऐः	ऐतम्	ऐत
उत्तम पुरुष	आयम्	ऐव	ऐम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	इयाय	ईयतुः	ईयुः
मध्यम पुरुष	इययिथ, इयेथ	ईयथुः	ईथ
उत्तम पुरुष	इयाय, इयय	ईयिव	ईयिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उत्तम पुरुष	एष्यामि	एष्यावः	ऐष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	एतु	इताम्	यन्तु
मध्यम पुरुष	इहि	इतम्	इत
उत्तम पुरुष	अयानि	अयाव	अयाम

विधि

प्रथम पुरुष	इयात्	इयाताम्	इयुः
मध्यम पुरुष	इयाः	इयातम्	इयात
उत्तम पुरुष	इयाम्	इयाव	इयाम

३४–आत्मनेपदी–आस्–बैठना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	आस्ते	आसाते	आसते
मध्यम पुरुष	आस्से	आसाथे	आध्वे
उत्तम पुरुष	आसे	आस्वहे	आस्महे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	आस्त	आसाताम्	आसत
मध्यम पुरुष	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उत्तम पुरुष	आसि	आस्वहि	आस्महि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	आसांचक्रे	आसांचक्राते	आसांचक्रिरे
मध्यम पुरुष	आसांचकृषे	आसांचक्राथे	आसांचकृध्वे
उत्तम पुरुष	आसांचक्रे	आसांचकृवहे	आसांचकृमहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
मध्यम पुरुष	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उत्तम पुरुष	आसै	आसावहै	आसामहै

विधि

प्रथम पुरुष	आसीत्	आसीयाताम्	आसीरन्
मध्यम पुरुष	आसीथा:	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उत्तम पुरुष	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

३५—आत्मनेपदी—शी—सोना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	शेते	शयाते	शेरते
मध्यम पुरुष	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उत्तम पुरुष	शेये	शेवहे	शेमहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशेत	अशेयाताम्	अशेरत
मध्यम पुरुष	अशेथा:	अशेयाथाम्	अशेध्वम्
उत्तम पुरुष	अशेयि	अशेवहि	अशेमहि

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
मध्यम पुरुष	शिश्याषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे
उत्तम पुरुष	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
मध्यम पुरुष	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उत्तम पुरुष	शयै	शयावहै	शयामहै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
मध्यम पुरुष	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उत्तम पुरुष	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

३६—परस्मैपदी—हु—हवन करना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
मध्यम पुरुष	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उत्तम पुरुष	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरूष	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
मध्यम पुरुष	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उत्तम पुरुष	अजुह्वम्	अजुहुव	अजुहुम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरूष	जुहाव	जुहुवतुः	जहुवुः
मध्यम पुरुष	जुहविथ, जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव
उत्तम पुरुष	जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
मध्यम पुरुष	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उत्तम पुरुष	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
मध्यम पुरुष	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उत्तम पुरुष	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

विधि

प्रथम पुरुष	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
मध्यम पुरुष	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उत्तम पुरुष	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३७—परस्मैपदी—भी डरना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	बिभेति	बिभित: बिभीत:	बिभ्यति
मध्यम पुरुष	बिभेषि	बिभिथ: बिभीथ:	बिभिथ बिभीथ
उत्तम पुरुष	बिभेमि	बिभिव: बिभीव:	बिभिम: बिभीम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अबिभेत्	अबिभिताम् अबिभीताम्	अबिभयु:
मध्यम पुरुष	अबिभे:	अबिभितम् अबिभीतम्	अबिभित अबिभीत
उत्तम पुरुष	अबिभयम्	अबिभिव अबिभीव	अबिभिम अबिभीम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रतु:	बिभयाञ्चक्रु:
मध्यम पुरुष	बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रथु:	बिभयाञ्चक्र
उत्तम पुरुष	बिभयाञ्चकार बिभयाञ्चकर	बिभयाञ्चकृव	बिभयाञ्चकृम
प्रथम पुरुष	बिभयाम्बभूव	बिभयाम्बभूवतु:	बिभयाम्बभूवु:
मध्यम पुरुष	बिभयाम्बभूविथ	बिभयाम्बभूवथु:	बिभयाम्बभूव
उत्तम पुरुष	बिभयाम्बभूव	बिभयाम्बभूविव	बिभयाम्बभूविम
प्रथम पुरुष	बिभयाभास	बिभयाभासतु:	बिभयाभासु:
मध्यम पुरुष	बिभयाभासिथ	बिभयाभासथु:	बिभयाभास
उत्तम पुरुष	बिभयाभास	बिभयाभासिव	बिभयाभासिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भेष्यति	भेष्यत:	भेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भेष्यसि	भेष्यथ:	भेष्यथ
उत्तम पुरुष	भेष्यामि	भेष्याव:	भेष्याम:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	बिभेतु	बिभिताम् बिभीताम्	बिभ्यतु
मध्यम पुरुष	बिभिहि बिभीहि	बिभितम् बिभीतम्	बिभित बिभीत
उत्तम पुरुष	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

विधि

प्रथम पुरुष	बिभियात् बिभीयात्	बिभियाताम् विभीयाताम्	बिभियुः बिभीयुः
मध्यम पुरुष	बिभियाः बिभीयाः	बिभियातम् बिभीयातम्	बिभियात बिभीयात
उत्तम पुरुष	बिभियाम् बिभीयाम्	बिभियाव बिभीयाव	बिभियाम बिभीयाम

३८—उभयपदी—दा—देना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	दधौ	दधतुः	दधुः
मध्यम पुरुष	दधिथ, दधाथ	दधथुः	दध
उत्तम पुरुष	दधौ	दधिव	दधिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

विधि

प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

उभयपदी दा धातु के आत्मनेपद में रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम पुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम पुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अददि	अद्वहि	अदद्महि

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	दधे	दधाते	दधिरे
मध्यम पुरुष	दधिषे	दधाथे	दधिध्वे
उत्तम पुरुष	दधे	दधिवहे	दधिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम पुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम पुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम पुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै

विधि

प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम पुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम पुरुष	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३९–उभयपदी–धा–धारण करना (परस्मैपदी के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	दधाति	धत्तः	दधति
मध्यम पुरुष	दधासि	धत्थः	धत्थ
उत्तम पुरुष	दधामि	दध्वः	दध्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
मध्यम पुरुष	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
उत्तम पुरुष	अदधाम्	अदध्व	अदध्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	दधौ	दधतुः	दधुः
मध्यम पुरुष	दधिथ, दधाथ	दधथुः	दध
उत्तम पुरुष	दधौ	दधिव	दधिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
मध्यम पुरुष	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
उत्तम पुरुष	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	दधातु	धत्ताम्	दधतु
मध्यम पुरुष	धेहि	धत्तम्	धत्त
उत्तम पुरुष	दधानि	दधाव	दधाम

विधि

प्रथम पुरुष	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः
मध्यम पुरुष	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
उत्तम पुरुष	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

उभयपदी धा धातु के आत्मनेपद में रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	धत्ते	दधाते	दधते
मध्यम पुरुष	धत्से	दधाथे	दधूध्वे
उत्तम पुरुष	दधे	दध्वहे	दध्महे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
मध्यमं पुरुष	अधत्था:	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	दधे	दधाते	दधिरे
मध्यम पुरुष	दधिषे	दधाथे	दधिध्वे
उत्तम पुरुष	दधे	दधिवहे	दधिमहे

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
मध्यम पुरुष	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उत्तम पुरुष	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
मध्यम पुरुष	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	दधै	दधावहै	दधामहै

विधि

प्रथम पुरुष	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
मध्यम पुरुष	दधीथा:	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उत्तम पुरुष	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

४०—परस्मैपदी—दिव्—जुआ खेलना, चमकना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यत:	दीव्यन्ति
मध्यम पुरुष	दीव्यसि	दीव्यथ:	दीव्यथ
उत्तम पुरुष	दीव्यामि	दीव्याव:	दीव्याम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यम पुरुष	अदीव्य:	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तम पुरुष	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

अतीत् काल

प्रथम पुरुष	दिदेव	दिदिवतु:	दिदिवु:
मध्यम पुरुष	दिदेविथ	दिदिवथु:	दिदिव
उत्तम पुरुष	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उत्तम पुरुष	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यम पुरुष	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तम पुरुष	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधि

प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
मध्यम पुरुष	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तम पुरुष	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

४१—परस्मेपदी—नृत्—नाचना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरूष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	ननर्त	ननृततुः	ननृतुः
मध्यम पुरुष	ननर्तिथ	ननृतथुः	ननृत
उत्तम पुरुष	ननर्त	ननृतिव	ननृतिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

अथवा

प्रथम पुरुष	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
उत्तम पुरुष	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधि

प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

४२—परस्मैपदी—नश्—नष्ट होना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ननाश	नेशतुः	नेशुः
मध्यम पुरुष	नेशिध, ननष्ठ	नेशथुः	नेश
उत्तम पुरुष	ननाश, ननश	नेशिव, नेश्व	नेशम, नेश्म

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उत्तम पुरुष	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

अथवा

प्रथम पुरुष	नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

४३—परस्मैपदी—भ्रम्—भ्रान्त होना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
मध्यम पुरुष	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
उत्तम पुरुष	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
मध्यम पुरुष	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
उत्तम पुरुष	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

नोट—अतीतकाल में रूप पृष्ठ १०३ की भाँति होगा।

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उत्तम पुरुष	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
मध्यम पुरुष	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उत्तम पुरुष	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

विधि

प्रथम पुरुष	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
मध्यम पुरुष	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
उत्तम पुरुष	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

यही भ्रम् "चलने" के अर्थ में भ्वादिगणी होती है जिसके रूप इस प्रकार चलते हैं।

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमसि	भ्रमथः	भ्रमथ
उत्तम पुरुष	भ्रमामि	भ्रमावः	भ्रमामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
मध्यम पुरुष	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
उत्तम पुरुष	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	बभ्राम ब्रभ्राम	बभ्रमतुः भ्रेमतुः	बभ्रमुः भ्रेमुः
मध्यम पुरुष	बभ्रमिथ भ्रेमिथ	बभ्रमथुः भ्रेमथुः	बभ्रम भ्रेम
उत्तम पुरुष	बभ्राम बभ्रम	बभ्रमिव भ्रेमिव	बभ्रमिम भ्रेमिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उत्तम पुरुष	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	भ्रमतु	भ्रमताम्	भ्रमन्तु
मध्यम पुरुष	भ्रम	भ्रमतम्	भ्रमत
उत्तम पुरुष	भ्रमाणि	भ्रमाव	भ्रमाम

विधि

प्रथम पुरुष	भ्रमेत्	भ्रमेताम्	भ्रमेयुः
मध्यम पुरुष	भ्रमेः	भ्रमेतम्	भ्रमेत
उत्तम पुरुष	भ्रमेयम्	भ्रमेव	भ्रमेम

४४—आत्मनेपदी—युध्—लड़ना.

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
मध्यम पुरुष	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
उत्तम पुरुष	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
मध्यम पुरुष	अयुध्यथा:	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	युयुधे	युयुधाते	युयुधिरे
मध्यम पुरुष	युयुधिते	युयुयाथे	युयुधिध्वे
उत्तम पुरुष	युयुधे	युयुधिवहे	युयुधिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
उत्तम पुरुष	युध्ये	युध्यावहै	युध्यामहै

विधि

प्रथम पुरुष	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
मध्यम पुरुष	युध्येथा:	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
उत्तम पुरुष	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

४५—आत्मनेपदी—जन्—पैदा होना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
मध्यम पुरुष	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उत्तम पुरुष	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

४६–उभयपदी–सु–स्नान करना, रस निकालना
(परस्मैपद के रूप) वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
मध्यम पुरुष	सुनोषि	सुनथः	सुनुथ
उत्तम पुरुष	सुनोमि	सुनुवः, सुन्वः	सुनुमः, सुन्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
मध्यम पुरुष	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उत्तम पुरुष	असुनवम्	असुनुव, असुन्व	असुनुम, असुन्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	सस्नौ	सस्नतुः	सस्नुः
मध्यम पुरुष	सस्निथ, सस्नाथ	सस्नथुः	सस्न
उत्तम पुरुष	सस्नौ	सस्निव	सस्निम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सोष्यंसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उत्तम पुरुष	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
मध्यम पुरुष	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उत्तम पुरुष	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

विधि

प्रथम पुरुष	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
मध्यम पुरुष	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उत्तम पुरुष	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

उभयपदी सु धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
मध्यम पुरुष	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उत्तम पुरुष	सुन्वे	सुनुवहे } सुन्वहे	सुनुमहे } सुन्महे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
मध्यम पुरुष	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उत्तम पुरुष	असुन्वि	असुनुवहि } असुन्वहि	असुनुमहि } असुन्महि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
मध्यम पुरुष	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
उत्तम पुरुष	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
मध्यम पुरुष	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उत्तम पुरुष	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

विधि

प्रथम पुरुष	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
मध्यम पुरुष	सुन्वीथा:	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

४७—परस्मैपदी—आप्—पाना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुत:	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथ:	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुव:	आप्नुम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नो:	आप्नुतम्	आप्नुथ:
उत्तम पुरुष	आप्नुवम्	आप्नुव	आप्नुम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	आप	आपतु:	आपु:
मध्यम पुरुष	आपिथ	आपथु:	आपथ:
उत्तम पुरुष	आप	आपिव	आपिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यत:	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथ:	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्याव:	आप्स्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

४८—परस्मैपदी—शक्—सकना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नुवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	शशाक	शेकतुः	शेकुः
मध्यम पुरुष	शेकिथ, शशक्थ	शेकथुः	शेक
उत्तम पुरुष	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधि

प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४९—उभयपदी तुद्—पीड़ा पहुँचाना (परस्मैपदी के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः
मध्यम पुरुष	तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद
उत्तम पुरुष	तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधि

प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

५०—परस्मैपदी इष्—चाहना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	इयेष	ईषतुः	ईषुः
मध्यम पुरुष	इयेषिथ	ईषथुः	ईष
उत्तम पुरुष	इयेष	ईषिव	ईषिम

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधि

प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

५१—परस्मैपदी—स्पृश्—छूना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
मध्यम पुरुष	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उत्तम पुरुष	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
मध्यम पुरुष	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उत्तम पुरुष	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	पस्पर्श	पस्पृशतुः	पस्पृशुः
मध्यम पुरुष	पस्पर्शिथ	पस्पृशथुः	पस्पृश
उत्तम पुरुष	पस्पर्श	पस्पृशिव	पस्पृशिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः

अथवा

प्रथम पुरुष	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्पर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ
उत्तम पुरुष	स्पर्क्ष्यामि	स्पर्क्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
मध्यम पुरुष	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उत्तम पुरुष	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

विधि

प्रथम पुरुष	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
मध्यम पुरुष	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उत्तम पुरुष	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

५२—परस्मैपदी प्रच्छ् (पृच्छ्)—पूछना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
मध्यम पुरुष	पप्रच्छिथ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
उत्तम पुरुष	पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधि

प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

५३–उभयपदी मुच् (मुञ्च्)–छोड़ना–(परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
मध्यम पुरुष	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उत्तम पुरुष	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	मुमोच	मुमुचतुः	मुंमुचुः
मध्यम पुरुष	मुमोचिथ	मुमुचथुः	मुमुच
उत्तम पुरुष	मुमोच	मुमुचिव	मुमचिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

विधि

प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
मध्यम पुरुष	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

उभयपदी मुच् धातु के आत्मनेपद में रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
मध्यम पुरुष	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
उत्तम पुरुष	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
मध्यम पुरुष	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेयाम्	अमुञ्चध्वम्
उत्तम पुरुष	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
मध्यम पुरुष	मुमुचिषे	मुमुचाथे	मुमुचिध्वे
उत्तम पुरुष	मुमुचे	मुमुचिवहे	मुमुचिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुष	मोक्ष्यसे	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुष	मोक्ष्ये	मोक्ष्यावहे	मोक्ष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
मध्यम पुरुष	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
उत्तम पुरुष	मुञ्चै	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
मध्यम पुरुष	मुञ्चेथा:	मुञ्चेयायाम्	मुञ्चेध्वम्
उत्तम पुरुष	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

५४—उभयपदी रुध्—ढकना, रोकना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	रुणद्धि	रुन्ध:	रुन्धन्ति
मध्यम पुरुष	रुणत्सि	रुन्ध:	रुन्ध
उत्तम पुरुष	रुणध्मि	रुन्ध:	रुन्ध्म:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरुणत्-द्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
मध्यम पुरुष	अरुण:, अरुणात् अरुणत्	अरुन्धम्	अरुन्ध
उत्तम पुरुष	अरुरणाधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	रुरोध	रुरुधतु:	रुरुध्वु:
मध्यम पुरुष	रुरोधिथ	रुरुधथु:	रुरूध
उत्तम पुरुष	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	रोत्स्यति	रोत्स्यत:	रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	रोत्स्यसि	रोत्स्यथ:	रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	रोत्स्यामि	रोत्स्याव:	रोत्स्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
मध्यम पुरुष	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध
उत्तम पुरुष	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

विधि

प्रथम पुरुष	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्यु:
मध्यम पुरुष	रुन्ध्या:	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उत्तम पुरुष	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभयपदी रुध् धातु के आत्मनेपद में रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
मध्यम पुरुष	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उत्तम पुरुष	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
मध्यम पुरुष	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
मध्यम पुरुष	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
उत्तम पुरुष	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
मध्यम पुरुष	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्धवम्
उत्तम पुरुष	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

विधि

प्रथम पुरुष	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
मध्यम पुरुष	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उत्तम पुरुष	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

५५—उभयपदी भुज् – पालन करना (परस्मैपदी)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
मध्यम पुरुष	भुनक्षि	भुङ्क्थ	भुङ्क्थ
उत्तम पुरुष	भुनंज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभुनक्-ग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
मध्यम पुरुष	अभुनक् -ग्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
उत्तम पुरुष	अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	बुभोज	बुभुजतुः	बुभुजुः
मध्यम पुरुष	बुभोजिथ	बुभुजथुः	बुभुज
उत्तम पुरुष	बुभाज	बुभुजिव	बुभुजिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यस्थ
उत्तम पुरुष	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
मध्यम पुरुष	भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त
उत्तम पुरुष	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम

विधि

प्रथम पुरुष	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
मध्यम पुरुष	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उत्तम पुरुष	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

५६—उभयपदी तन् धातु—फैलाना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उत्तम पुरुष	तनोमि	तनुवः / तन्वः	तनुमः / तन्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्यम पुरुष	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम पुरुष	अतनवम्	अतनुव / अतन्व	अतनुम / अतन्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	ततान	तेनतुः	तेनुः
मध्यम पुरुष	तेनिथ	तेनथुः	तेन
उत्तम पुरुष	ततान, ततन	तेनिव	तेनिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यथः	तनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम पुरुष	तनु	तनुतम्	तनुत
उत्तम पुरुष	तनवानि	तनवाव	तनवाम

विधि

प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
मध्यम पुरुष	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

५७—उभयपदी कृ धातु-करना (परस्मैपद में रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकुरवम्	अकुर्व	अकुर्म

अतीत भूकाल

प्रथम पुरुष	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
मध्यम पुरुष	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
उत्तम पुरुष	चकार, चकर	चकृव	चकृम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधि

प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

उभयपदी कृ धातु के आत्मनेपद में रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
मध्यम पुरुष	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
उत्तम पुरुष	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहे	करवामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

५८—उभयपदी क्री धातु-मोल लेना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तम पुरुष	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यम पुरुष	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम पुरुष	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चिक्राय	चिक्रयतुः	चिक्रियुः
मध्यम पुरुष	चिक्रयिथ, चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
उत्तम पुरुष	चिक्रय, चिक्राय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	क्रीणाताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
मध्यम पुरुष	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

विधि

प्रथम पुरुष	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
मध्यम पुरुष	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभयपदी क्री धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
मध्यम पुरुष	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उत्तम पुरुष	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

भूतकाल

प्रथम पुरुष	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
मध्यम पुरुष	अक्रीणीथा:	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
मध्यम पुरुष	चिक्रियिषे	चिक्रिमाथे	चिक्रियिहवे
उत्तम पुरुष	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
मध्यम पुरुष	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

विधि

प्रथम पुरुष	क्रीणीति	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
मध्यम पुरुष	क्रीणीथा:	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

५९—उभयपदी ग्रह् (गृह्)-पकड़ना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	गृह्णाति	गृह्णीत:	गृह्णन्ति
मध्यम पुरुष	गृह्णासि	गृह्णीथ:	गृह्णीथ
उत्तम पुरुष	गृह्णामि	गृह्णीव:	गृह्णीम:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
मध्यम पुरुष	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उत्तम पुरुष	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

अतीत भूतकाल.

प्रथम पुरुष	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
मध्यम पुरुष	जग्रहीथ	जगृहथुः	जगृह
उत्तमं पुरुष	जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
मध्यम पुरुष	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उत्तम पुरुष	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
मध्यम पुरुष	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उत्तम पुरुष	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधि

प्रथम पुरुष	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
मध्यम पुरुष	गृह्णीयाः	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयात
उत्तम पुरुष	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

उभयपदी ग्रह् धातु के आत्मनेपद में रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
मध्यम पुरुष	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उत्तम पुरुष	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अगृह्णीत	अगृह्णताम्	अगृह्णत
मध्यम पुरुष	अगृह्णीथाः	अगृह्णथाम्	अगृह्णीध्वम्
उत्तम पुरुष	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
मध्यम पुरुष	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे
उत्तम पुरुष	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
मध्यम पुरुष	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उत्तम पुरुष	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
मध्यम पुरुष	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उत्तम पुरुष	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

विधि

प्रथम पुरुष	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
मध्यम पुरुष	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उत्तम पुरुष	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

६०—उभयपदी ज्ञा धातु—जानना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यम पुरुष	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तम पुरुष	जानामि	जानीवः	जानीमः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम पुरुष	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तम पुरुष	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः
मध्यम पुरुष	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञथुः	जज्ञ
उत्तम पुरुष	जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तम पुरुष	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
मध्यम पुरुष	जानीहि	जानीतम्	जानीत्
उत्तम पुरुष	जानानि	जानाव	जनाम

विधि

प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयु:
मध्यम पुरुष	जानीया:	जानीयाताम्	जानीयात
उत्तम पुरुष	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

उभयपदी ज्ञा धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
मध्यम पुरुध	जानीक्षे	जानाथे	जानीध्वे
उत्तम पुरुष	जाने	जानीवहे	जानीमहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
मध्यम पुरुष	अजानीथा:	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम पुरुष	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
मध्यम पुरुष	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उत्तम पुरुष	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उत्तम पुरुष	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
मध्यम पुरुष	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानै	जानावहै	जानामहै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम पुरुष	जानीथा:	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

६१–उभयपदी चुर् धातु–चुराना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयत:	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथ:	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयाव:	चोरयाम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरय:	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयान

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतु:	चोरयाञ्चक्रु:
मध्यम पुरुष	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथु:	चोरयाञ्चक
उत्तम पुरुष	{ चोरयाञ्चकार चोरयाञ्चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यत:	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चौरयिष्यथ:	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्याव:	चोरयिष्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चौरयाम

विधि

प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयु:
मध्यम पुरुष	चोरये:	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभयपदी-चुर् धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथा:	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृध्वे, ढ्वे
उत्तम पुरुष	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथा:	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

६७—उभयपदी-पूज्-पूजना, पूजा करना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पूजयति	पूजयत:	पूजयन्ति
मध्यम पुरुष	पूजयसि	पूजयथ:	पूजयथ
उत्तम पुरुष	पूजयामि	पूजयाव:	पूजयाम:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
मध्यम पुरुष	अपूजय:	अपूजयतम्	अपूजयत
उत्तम पुरुष	अपूजयम्	अपूजयाव	अपूजयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पूजयामास	पूजयामासतु:	पूजयायासु:
मध्यम पुरुष	पूजयामासिथ	पूजययासथु:	पूजयायास
उत्तम पुरुष	पूजयामास	पूजयामासिव	पूजयामासिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	पूजयिष्यति	पूजयिष्यत:	पूजयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पूजयिष्यसि	पूजयिष्यथ:	पूजयिष्यथ
उत्तम पुरुष	पूजयिष्यामि	पूजयिष्याव:	पूजयिष्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पूजयतु	पूजयताम्	पूजयन्तु
मध्यम पुरुष	पूजय	पूजयतम्	पूजयत
उत्तम पुरुष	पूजयानि	पूजयाव	पूजयाम

विधि

प्रथम पुरुष	पूजयेत्	पूजयेताम्	पूजयेयु:
मध्यम पुरुष	पूजये:	पूजयेतम्	पूजयेत
उत्तम पुरुष	पूजयेयम्	पूजयेव	पूजयेम

उभयपदी पूज् धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	पूजयते	पूजयेते	पूजयन्ते
मध्यम पुरुष	पूजयसे	पूजयेथे	पूजयध्वे
उत्तम पुरुष	पूजये	पूजयावहे	पूजयामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपूजयत	अपूजयताम्	अपूजयन्त
मध्यम पुरुष	अपूजयथा:	अपूजयेथाम्	अपूजयध्वम्
उत्तम पुरुष	अपूजये	अपूजयावहि	अपूजयामहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	पूजयाञ्चक्रे	पूजयाञ्चक्राते	पूजयाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	पूजयाञ्चक्रे	पूजयाञ्चक्रथि	पूजयाञ्चकृध्वे
उत्तम पुरुष	पूजयाञ्चक्रे	पूजयाञ्चकृवहे	पूजयाञ्चकृमहे

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	पूजष्यिते	पूजयिष्येते	पूजयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	पूजयिष्यसे	पूजयिष्येथे	पूजयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	पूजयिष्ये	पूजयिष्यावहे	पूजयिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	पूजयताम्	पूजयेताम्	पूजयन्ताम्
मध्यम पुरुष	पूजयस्व	पूजयेयाम्	पूजयध्वम्
उत्तम पुरुष	पूजवै	पूजयावहै	पूजयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	पूजयेत	पूजयेम्	पूजयेयुरन:
मध्यम पुरुष	पूजयेया:	पूजयेयाथाम्	पूजयेध्वम्
उत्तम पुरुष	पूजयेय	पूजयेहि	पूजयेमहि

६३—उभयपदी—चिन्त्—सोचना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	चिन्तयति	चिन्तयत:	चिन्तयन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तयसि	चिन्तयथ:	चिन्तयथ
उत्तम पुरुष	चिन्तयामि	चिन्तयाव:	चिन्तयाम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
मध्यम पुरुष	अचिन्तय:	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उत्तम पुरुष	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चिन्तयामास	चिन्तयासासतु:	चिन्तयामासु:
मध्यम पुरुष	चिन्तयाम:सिथ	चिन्तयामासिथु:	चिन्तत्यामास
उत्तम पुरुष	चिन्तसामास	चिन्तथामासिव	चितयामासिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चिन्तयिष्यामि	चिंन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
मध्यम पुरुष	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उत्तम पुरुष	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाव

विधि

प्रथम पुरुष	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
मध्यम पुरुष	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उत्तम पुरुष	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

उभयपदी चिन्त् के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	चिन्तयते	चिन्तयेते	चिन्तयन्ते
मध्यम पुरुष	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
उत्तम पुरुष	चिन्तये	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
मध्यम पुरुष	अचिन्तयथाः	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चिन्तयात्र्चक्रे	चिन्तयाञ्चक्राते	चिन्तयाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	चिन्तयाञ्चकृषे	चिन्तयाञ्चकाथे	चिन्त्रयाञ्चकृध्वे
उत्तम पुरुष	चिन्तयाञ्चक्रे	चिन्तयाञ्चकृवहे	चिन्तयाञ्चकृमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	चिन्तयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चिन्तयिष्यसे	चिन्तयिष्येथे	चिन्तयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चिन्तयिष्ये	चिन्तयिष्यावहे	चिन्तयिष्यामहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चिन्तयस्व	चिन्तयेथाम्	चिन्तयध्वम्
उत्तम पुरुष	चिन्तयै	चिन्तयावहै	चिन्तयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	चिन्तयेत	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
मध्यम पुरुष	चिन्तयेथा:	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि

इस चिन्त् धातु के रूप बिना 'णिच्' वाले भ्वादिगण में होते हैं।

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	चिन्तति	चिन्तत:	चिन्तन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तसि	चिन्तथ:	चिन्तथ
उत्तम पुरुष	चिन्तामि	चिन्ताव:	चिन्ताम:

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अचिन्तत्	अचिन्ताम्	अचिन्तन्
मध्यम पुरुष	अचिन्त:	अचिन्तम्	अचिन्तत
उत्तम पुरुष	अचिन्तम्	अचिन्ताव	अचिन्ताम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	चिचिन्त	चितिन्ततु:	चिचिन्तु:
मध्यम पुरुष	चिचिन्तिथ	चिचिन्तथु:	चिचिन्त
उत्तम पुरुष	चिचिन्त	चिचिन्तिव	चिचिन्तिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	चिन्तिष्यति	चिन्तिष्यत:	चिन्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तिष्यसि	चिन्तिष्यथ:	चिन्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	चिन्तिष्यामि	चिन्तिष्याव:	चिन्तिष्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	चिन्ततु	चिन्तताम्	चिन्तन्तु
मध्यम पुरुष	चिन्त	चिन्ततम्	चिन्तत
उत्तम पुरुष	चिन्तानि	चिन्ताव	चिन्ताम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथम पुरुष	चिन्तेत्	चिन्तेताम्	चिन्तेयुः
मध्यम पुरुष	चिन्तेः	चिन्तेतम्	चिन्तेत
उत्तम पुरुष	चिन्तेयम्	चिन्तेव	चिन्तेम

६४–उभयपदी–कथ्–कहना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	कथयामास	कथयागासतुः	कथयामासुः
मध्यम पुरुष	कथयामासिथ	कथयासामथुः	कसयामास
उत्तम पुरुष	कथयामास	कथयमासिव	कथयामासिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधि

प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम पुरुष	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभयपदी कथ् धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	कथयतें	कथयेते	कथयन्ते
मध्यम पुरुष	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उत्तम पुरुष	कथये	कथयावहे	कथयामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
मध्यम पुरुष	अकथयथा:	अकथयथाम्	अकथयध्वम्
उत्तम पुरुष	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

अतीत् भूतकाल

प्रथम पुरुष	कथयाञ्चक्रे	कथमाञ्चक्राते	कथयाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	कथायाञ्चकृषे	कथयाञ्चक्राथे	क्वयाञ्चक्रिध्वे
उत्तम पुरुष	कथयाञ्चक्रे	कथयाञ्चकृवहे	कथयाञ्चकृमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
मध्यम पुरुष	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
मध्यम पुरुष	कथयेथा:	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

६५—उभयपदी—भक्ष्—खाना (परस्मैपद के रूप)

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयत:	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथ:	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयाव:	भक्षयाम:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षथ:	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	भक्षयामास	भक्षयामासतु:	भक्षयामासु:
मध्यम पुरुष	भक्षयामसिथ	अक्षयामसिथ:	भक्ष्यामास
उत्तम पुरुष	भक्षयामास	भक्षयामासिब	भक्षयासिम

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यत:	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथ:	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्याव:	भक्षयिष्याम:

आज्ञा

प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

विधि

प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयु:
मध्यम पुरुष	भक्षये:	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

उभयपदी भक्ष् धातु के आत्मनेपद के रूप

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
मध्यम पुरुष	अभक्षयथा:	अभक्षयेताम्	अभक्षध्वम्
उत्तम पुरुष	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	भक्षयाञ्चक्रे	भक्षयाञ्चक्राते	भक्षयाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	भक्षयाञ्चकृषे	भयाञ्चक्राथे	भक्षयाञ्चकृध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षयाञ्चक्रे	भक्षयाञ्चकृवहे	भक्षयाञ्चकृमहे

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

आज्ञा

प्रथम पुरुष	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
मध्यम पुरुष	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

विधि

प्रथम पुरुष	भक्षयेत	भक्षयेताम्	भक्षयेरन्
मध्यम पुरुष	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

६६—परस्मैपदी—गण्—गिनना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	गणयति	गणयतः	गणयन्ति
मध्यम पुरुष	गणयति	गणयथः	गणयथ
उत्तम पुरुष	गणयामि	गणयावः	गणयामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्
मध्यम पुरुष	अगणयः	अगणयतम्	अगणयत
उत्तम पुरुष	अगणयम्	अगणयाव	अगणयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	गणायामास	गणायामासतुः	गणयामासुः
मध्यम पुरुष	गणद्यामासिथ	गणयामासथुः	गणयामास
उत्तम पुरुष	गणयामास	गणयामासिव	गणयामासिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	गणयिष्यति	गणयिष्यतः	गणयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गणयिष्यसि	गणयिष्यथः	गणयिष्यथ
उत्तम पुरुष	गणयिष्यामि	गणयिष्यावः	गणयिष्यामः

आज्ञा

प्रथम पुरुष	गणयतु	गणयताम्	गणयन्तु
मध्यम पुरुष	गणय	गणयतम्	गणयत
उत्तम पुरुष	गणयानि	गणयाव	गणयाम

विधि

प्रथम पुरुष	गणयेत्	गणयेताम्	गणयेयुः
मध्यम पुरुष	गणयेः	गणयेतम्	गणयेत
उत्तम पुरुष	गणयेयम्	गणयेव	गणयेम

६७–परस्मैपदी–रच्–बनाना

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	रचयति	रचयतः	रचयन्ति
मध्यम पुरुष	रचयसि	रचयथः	रचयथ
उत्तम पुरुष	रचयामि	रचयावः	रचयामः

अनद्यतन भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरचयत्	अरचयताम्	अरचयन्
मध्यम पुरुष	अरचयः	अरचयतम्	अरचयत
उत्तम पुरुष	अरचयम्	अरचयाव	अरचयाम

अतीत भूतकाल

प्रथम पुरुष	रचयामास	रचयामासतुः	रचयामासः
मध्यम पुरुष	रचयाद्यासिथ	रचयामासयुः	रचयामास
उत्तम पुरुष	रचयामास	रचयमासिव	ह्रचयामासिम

भविष्यत काल

प्रथम पुरुष	रचयिष्यति	रचयिष्यतः	रचयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	रचयिष्यसि	रचयिष्यथः	रचयिष्यथ
उत्तम पुरुष	रचयिष्यामि	रचयिष्यावः	रचयिष्यामः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज्ञा

प्रथम पुरुष	रचयतु	रचयताम्	रचयन्तु
मध्यम पुरुष	रचय	रचयतम्	रचयत
उत्तम पुरुष	रचयानि	रचयाव	रचयाम

विधि

प्रथम पुरुष	रचयेत्	रचयेताम्	रचयेयुः
मध्यम पुरुष	रचयेः	रचयेतम्	रचयेत
उत्तम पुरुष	रचयेयम्	रचयेव	रचयेम

प्रत्ययान्त धातुएँ

प्रत्ययान्त धातुएँ चार प्रकार की होती हैं–

१. णिजन्त, २. सन्नन्त, ३. यङन्त और ४. नामधातु।

१. णिजन्तधातु–किसी धातु में प्रेरणा का अर्थ प्रकट करना होता है तो उस धातु में णिच प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। इसमें क्रिया का कर्ता स्वयं काम नहीं करता है बल्कि दूसरे से काम करवाता है। जैसे–पढ़वाना, लिखवाना चुरवाना आदि। णिजन्तधातु के रूप चुरादि गण की भाँति चलते हैं। णिच् में णच् का हो जाता है। इ का अय् धातु और उसकी विभक्ति के बीच में जोड़ा जाता है। जैसे–शिष्यः पठति। गुरुः प्रेरयति। गुरुः शिष्यं पाठयति। इसी प्रकार गमयति, आदयति, पाययति आदि। प्रेरणार्थ धातु के रूप सब काल और वृत्तियों में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य तथा परस्मैपदी और आत्मनेपदी दोनों पदों में चलते हैं।

२. सन्नन्त धातु–किसी कार्य की इच्छा प्रकट करने के अर्थ में धातु में सन् प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे–पढ़ने की इच्छा में पिपठिषुः, जाने की इच्छा में 'जिगमिषु':, सन् प्रत्यय का स् धातु में जोड़ा जाता है। यह कहीं कहीं ष् हो जाता है। सन्धि के नियम के अनुसार ऐसा होता है। धातु का द्वित्व होता है। सेट् धातुमें प्रायः स् के पहिले इकार हो जाता है। अनिट् धातुं में बहुधा नहीं लगता। जैसे–पिपठिषः, बुभुक्षुः।

सन्नन्त धातु के पिपठिषति, जिगमिषति आदि के रूप तीनों काल और सभी वृत्तियों में चलते हैं।

३. यङन्त धातु–किसी क्रिया के बार-बार करने अथवा अधिक करने के अर्थ में व्यञ्जन से प्रारम्भ होने वाली एक स्वर धातु में प्रथम नौ गणों की धातुओं में लगता है। यङन्त प्रत्यय को दो अलग-अलग प्रकार से जोड़ने से अलग अलग एक परस्मैपद और एक आत्मनेपद के रूप चलते हैं। धातु में यङ् का य् जोड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाता है। जैसे भू से भूय। अन्त के अक्षर का अ का आ, इ ई और और उ और ऊ का ओ हो जाता है। इनके रूप सभी काल और वृत्तियों तथा कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य दोनों में चलते हैं। जैसे–वर्तमान काल बुध् धातु से कर्तृवाच्य बोबुध्यते। कर्मवाच्य बोबुध्यते। गत्यर्थ धातुओं में कुटिल और गर्हित अर्थ में भी यङ् प्रत्यय लगता है। कुटिलं व्रजति इति वा व्रज्यते।

४. नामधातु–जब किसी संज्ञा आदि के बाद कोई प्रत्यय जोड़ कर धातु बना देते हैं तो उसको नामधातु कहते हैं। जैसे–अपने लिये पुत्र की इच्छा करता है तो पुत्रीयति। यहाँ 'पुत्र' संज्ञा शब्द में क्यच् प्रत्यय का य जोड़ने से पुत्रीयति रूप बना। इसी प्रकार लोहितायते। लोहित + क्यच् का क्यच् प्रत्यय तत्समान आचरण करने के अर्थ में भी लगता है। जैसे–कृष्ण + य = अ का दीर्घ कृष्णायते कृष्ण की तरह आचरण करता है। इसी प्रकार कुमारायते, युवायते।

धातु	णिच् Causal	सन् Desiderative
ग्	गादयति-ते	जिगदिषति
क्वण्	क्वणयति-ते	चिक्वणिषति
भण्	भाणयति-ते	विभणिषति
भष्	भाषयति-ते	बिभषिषति
ध्वन्	ध्वानयति-ते ध्वनयति-ते	दिध्वनिषति
जप्	जापयति-ते	जिजपिषति
रद्	रादयति-ते	रिरदिषतिं
नद्	नादयति-ते	निनदिषति
नट्	नटयति-ते	निनटिषति
पट्	पाटयति-ते	पिपटिषति
पठ्	पाठयति-ते	पिपठिषति
लप्	लापयति-ते	लिलपिषति
लष्	लाषयति-ते	लिलषिषति-ते
लस्	लासयति-ते	लिलसिषति
फण	फणयति-ते	पिफणिषति
स्वम्	स्वनयति-ते	सिस्वनिषति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	स्वानयति-ते	
खन्	खानयति-ते	चिखनिषति-ते
फल्	फालयति-ते	पिफलिषति
चर्	चारयति	चिचरिषति
चल्	चलयति	चिचलिषति
लग्	लगयति-ते	लिलगिषति
पत्	पातयति-ते	पिपतिषति
		पित्सति
हस्	हासयति-ते	जिहसिषति
वम्	वमयति-ते	विवमिषति
वम्	उद्वमयति-ते	उद्वमिषति
राज्	राजयति-ते	रिराजिषति-ते

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ६

अव्यय

अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जो सदा एक से रहे। तीनों लिङ्ग, तीनों वचन और सब विभक्तियों में न घटे न बढ़े। जैसे–एकदा = एकबार, उच्चैः = ऊँचे, कथम् = कैसे आदि। किन्तु अव्यय में आये हुए शब्दों के अन्त वाले र् और स् का विसर्ग अवश्य हो जाता है। जैसे–निःशङ्क, मुहुः आदि।

अव्यय के प्रकार

अव्यय चार प्रकार के होते हैं–

(१) उपसर्ग (२) क्रियाविशेषण (३) समुच्चय बोधक (४) मनोविकार सूचक।

(१) उपसर्ग–धातु या धातु से बने संज्ञा विशेषण आदि शब्दों के पहिले जो जोड़े जाते हैं, उनको उपसर्ग कहते हैं।

प्र, परा, अप्, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, ये उपसर्ग हैं। इनके अर्थ और उदाहरण निम्नलिखित हैं :–

प्र–अधिक, प्रणाम, प्रगति।
परा–पीछे, जैसे–पराजय। जय का उल्टा।
अप्–दूर, जैसे–अपकार।
सम्–अच्छी तरह, जैसे–संस्कार।
अनु–पीछे, साथ, जैसे–अनुगमन, अनुचर।
अव्–दूर, नीचे, जैसे–अवतार।
निस्–बिना, बाहर, जैसे–निःसार।
निर्–बाहर, जैसे–निर्दोष।
दुस्–कठिन, जैसे–दुःसह।
दुर्–बुरा, जैसे–दुराचार।
वि–विना, अलग, जैसे–वियोग।
आङ्–तक, कम, जैसे–आग्रामात् आच्छादित।
नि–नीचे, आदि जैसे निपत।
अधि–ऊपर, जैसे–अधिकार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपि–निकट, जैसे–अपिधानम् (ढक्कन)।
सु–अच्छी प्रकार, जैसे–सुकृतम्।
उत्–ऊपर, जैसे–उद्गम, उत्पत।
अभि–ओर, जैसे–अभिगमनम्।
परि–चारों ओर, जैसे–परिखा (खाई)।
उप्–निकट, जैसे–उपासना (निकट बैठना)।

उपसर्ग (अर्थ परिवर्तन की दृष्टि से)

प्र, परा आदि उपसर्ग लगने से धातुओं के अर्थ में परिवर्त्तन हो जाता है। नीचे दिये गये उदाहरणों से यह सिद्ध होता है। इनमें से कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं। जैसे–

(१) भू धातु का अर्थ 'होना' है।

इसमें प्र, परि, परा, अभि उपसर्ग क्रमशः लगाने से अलग अलग अर्थ हो जाते हैं।

प्र + भू = समर्थ होना, निकलना। प्र + भवति = प्रभवति। गङ्गा हिमवतः प्रभवति = गंगा हिमालय से निकलती है। सः तेन सह गन्तुं न प्राभवत्। वह उसके साथ जाने में नहीं समर्थ हुआ अर्थात् नहीं जा सका।

परि, परा और अभि उपसर्ग लगने पर भू धातु का अर्थ तिरस्कार करना (हराना) हो जाता है।

गुरुं कदापि न परिभवेत् = गुरु का कभी भी तिरस्कार न करना चाहिये। अस्माकं सेना शत्रुसेनां पराभवति = हमारी सेना शत्रु सेना को हराती है। इसी प्रकार–

अपि + भू = दबाना = दीपः अन्धकारं अभिभवति।
सम् + भू = सम्भव होना = इदं कदापि न सम्भवति।
उद् + भू = उत्पन्न होना = अत्र वृक्षाः शीघ्रं उद्भवन्ति।
अनु + भू = अनुभव करना = अहं प्रवासकाले कष्टमनुभवामि

(२) गम् धातु का अर्थ जाना है। किन्तु इसमें अनेक उपसर्ग ऐसे हैं जिनके लगने से उसका अर्थ बदल जाता है। जैसे–

आङ् + गम् = आना = सः आगच्छति। (आङ् में ङ् नहीं रहता)
प्रति+आङ्+गम् = वापस लौटना = अहं प्रत्यागच्छामि।
अव् + गम् = जानना = त्वम् तथ्यं न अवगच्छसि।
अधि + गम् = प्राप्त करना = अत्र त्वम् विद्यां अधिगच्छसि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनु + गम् = पीछे चलना = अहम् भवन्तं अनुगच्छामि ।
निर् + गम् = निकलना = सः बहिः निर्गच्छति ।
सम् + गम् = मिलना = यमुना प्रयागे गङ्गां सङ्गच्छते ।
अप् + गम् = दूर हटना = त्वम् इतः अपगच्छ ।

(३) स्था = ठहरना
उत् + स्था = उठना = उत्तिष्ठ, उठो ।
प्र + स्था = जाना = सः प्रतिष्ठते ।
वि+अव्+स्था = व्यवस्था करना = तत्र त्वं सर्वं व्यवस्थापय ।

(४) नी- ले जाना
उप् + नी = समीप लाना = उपनय तम् मत्समीपम् ।
अभि + नी = अभिनय करना = सः अभिनयति ।
अनु + नी = मनाना = अहम् भवन्तं अनुनयामि ।
वि + नी = विनय करना = सः विनयति ।
आङ् + नी = लाना = सः दुग्धम् आनयति ।
अप् + नी = दूर करना = अपनय इमानि पात्राणि ।

(५) कृ = करना
उप + कृ = उपकार करना = सः माम् उपकरोति ।
अप + कृ = अपकार करना = दुष्टः उपकारिणामपि अपकरोति ।
अनु + कृ = अनुकरण करना = वानरः सदा अनुकुर्वन्ति ।
सम् + कृ = संस्कार करना = सः भाषां संस्करोति ।

(६) चिञ् = चुनना
निस् + चि = निश्चय करना = नाहं निश्चिनोमि ।
सम् + चि = संचय करना = कृपणः धनम् सञ्चिनोति ।

(७) वृतु = होना
प्र + वृत् = किसी काम में लगना = सः स्वकार्ये प्रवर्त्तते ।
प्रति + नि + वृत् + लौटना = सः कार्यं कृत्यैव प्रतिनिवर्तते ।

(८) ज्ञा = जानना
प्रति + ज्ञा = प्रतिज्ञा करना = अहं तव नाशाय प्रतिजाने ।
अनु + ज्ञा = अनुमति देना = साधुपदवीं प्राप्तये अहं अनुजानामि ।
आ + ज्ञा + णिच् = आज्ञा देना = राजा इत्थमाज्ञायति ।
अपि + ज्ञा = भूली वस्तु को पहचानना = अहम् मुद्रिकामभिजानामि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(९) तॄ = पार होना, तैरना

वि + तृ = बाँटना = सः फलानि वितरति ।

उत् + तृ = पार होना, उत्तर देना = त्वम् माम् उत्तरसि ।

अव् + तृ = उतरना = नारदः स्वर्गपथादवतरति ।

(१०) विश् = प्रवेश करना

प्र + विश् = प्रविशति = अहं तत्र प्रविशामि ।

उप + विश् = बैठना = सः भूमौ उपविशति ।

(११) दा = दाने

आङ् + दा = लेना, ग्रहण करना = सूर्यः रसमादत्ते । इसी प्रकार अन्य अनेक धातुओं के साथ उपसर्ग लग जाने से उनका अर्थ बदल जाता है ।

जैसे–दिश् = देना, कहना ।

उपदिशति (उपदेश देना), निर्दिशति (निर्देश देना), अध्यादिशति (अध्यादेश देना), आदिशति (आदेश देना) सन्दिशति (सन्देश देना) प्रत्यादिशति (खण्डन करना) व्यपादिशति (बहाना करना) आदि ।

शीङ् धातु सोने के अर्थ में है किन्तु अतिशेते (मात करना) हो जाता है । वद् धातु बोलने के अर्थ में है किन्तु इससे विवदति (विवाद करना) अनुवदति (सदृश बोलना), अनुवदति (अनुवाद करना) हो जाता है । हृ धातु हरण करने के अर्थ में है । हरति, हरतः, हरन्ति । किन्तु उसके साथ उपसर्ग लगने से निम्नलिखित अर्थ होंगे ।

वि + हृ = विहार करना, विहरति,

वि+अव्+हृ = व्यवहार करना-व्यवहरति

आ + हृ = लाना = आहरति

उप + हृ = उपहार देना = उपहरति

प्र + हृ = प्रहार करना = प्रहरति

परि + हृ = दोष दूर करना = परिहरति

सम् + हृ = नाश करना = संहरति

अप + हृ = चुराना = अपहरति

ईक्ष = देखना ।

परि + ईक्ष = परीक्षा लेना

परीक्षते ।

प्रति + ईक्ष = प्रतीक्षा करना

प्रतीक्षते ।

निर् + ईक्ष = निरीक्षण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करना – निरीक्षते ।
उप+ईक्ष =उपेक्षा करना
उपेक्षते ।

आदि रूप हो कर अर्थ बदल जाते हैं । रम् धातु का अर्थ खेलना (क्रीडा करना) है किन्तु वि उपसर्ग लगने पर विरम = रुकना अर्थ हो जाता है और 'वह्' ढोना अर्थ की धातु के साथ उत् उपसर्ग लगने पर णिच् में विवाह करना अर्थ हो जाता है । उद्वाहयति = विवाह करता है ।

विस्तार

धातुओं के साथ उपसर्ग लगने पर उसके स्वतंत्र रूप सभी लकारों में चलते हैं । उनके साथ कृदन्त के प्रत्यय क्त, क्तवत्, शतृ, शानच, ल्यप् और तुमुन् भी लगते हैं ।

जैसे–प्रहरति प्रहरतः प्रहरन्ति होगा उसी प्रकार प्रहरेत्, प्रहरतु, प्राहरत् प्रहरिष्यति आदि रूप सभी कालों, वृत्तियों, वचनों और पुरुषों में बनते हैं । प्रहृत्य, (ल्यप् में) प्रहरत् (शतृ में) प्रहृतवान् (क्ववत् में) आदि रूप बनते हैं ।

इसी प्रकार उपसर्ग धातु के मूल अर्थ को जबर्दस्ती दूर करके दूसरा अर्थ कर देते हैं ।

(२) क्रियाविशेषण

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं । सः शनैः गच्छति, यहाँ पर जाने की क्रिया का शनैः विशेषण है । वह बताता है कि धीरे धीरे जाता है ।

क्रियाविशेषण शब्दों में से कुछ सर्वनामों से बनते हैं । कुछ संख्यावाची शब्दों से बनते हैं । कुछ अव्ययों में सम्मिलित हैं किन्तु क्रिया की विशेषता बताते हैं । जैसे–पृथक्, विना आदि ।

प्रमुख क्रियाविशेषण शब्द निम्नलिखित हैं :–

अकस्मात्–एकाएक
अग्रतः–आगे
अग्रे–पहिले
अचिरम्–शीघ्र
अचिरात्–शीघ्र
अचिरेण–शीघ्र
अजस्रम्–निरन्तर
अतीव–बहुत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अत: = इसलिए
अधस्तात्–नीचे
अथ–तब, फिर
अथ किम्–हाँ, तो क्या
अद्य–आज
अध:–नीचे
अन्तर–अन्दर
अपरम्–और
अपरेद्युः–दूसरे दिन
अधुना–अब
अनिशम्–निरन्तर
अन्तरेण–बारे में
अन्तरा–बिना
अन्तरे–बीच में
अन्यच्च–और
अन्यत्र–दूसरी जगह
अन्यथा–दूसरी तरह
अभित:–चारों ओर, पास
अभीक्ष्णम्–निरन्तर
अर्वाक्–पहले
अलम्–बस
असकृत्–कई बार
असम्प्रति–अनुचित
असाम्प्रतम्–अनुचित
आरात्–दूर, समीप
इत:–यहाँ से
इति-इस प्रकार
इतस्तत:–इधर-उधर
इत्थम्–इस प्रकार
इदानीम्–इस समय
इह–यहाँ
ईषत्–कुछ, थोड़ा
उच्चैः–ऊँचे
उभयत:–दोनों ओर
ऋते–बिना
ऋतम्–सच
एकत्र–एक जगह
एकदा–एक बार
एकधा–एक प्रकार
एकपदे–एक साथ
एतर्हि–अब
एव–ही
एवम्–इस तरह
कच्चित्–क्या ?
कच्चन्–क्या ?
कथम्–कैसे ?
कथञ्चन्–किसी प्रकार
कथञ्चित्–किसी प्रकार
कदा–कब ?
कदाचित्–कभी, शायद
कदापि–कभी
कदापि न–कभी नहीं
किञ्च–और
किन्तु–लेकिन
किम्–क्या ? क्यों ?
किमुत–और कितना ?
किम्वा–या
किल–सचमुच
कुत:–कहाँ ?
कुत्र–कहाँ ?
कुत्रचित्–कहीं
कृतम्–बस हो गया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केवलम्–सिर्फ
क्व–कहाँ ?
क्वचित्–कहीं
खलु–निश्चय करके
चिरम्–देर तक
जातु–कभी भी
झटिति–जल्दी
तत्–इसलिए
ततः–फिर
तत्र–वहाँ
तदा–तब
तदानीम्–तब
तथा–उस तरह
तथाहि–जैसे (विशदरूप से वर्णन)
तर्हि–तब
तावत्–तब तक
तिरः–तिर्छे
तिर्यक्–तिर्छे
तूष्णीम्–चुपचाप
दिवा–दिन में
दिष्ट्या–सौभाग्य से
दूरम्–दूर
दोषा–रात को
द्राक्–शीघ्र, फौरन
ध्रुवम्–निश्चय ही
नक्तम्–रात को
न–नहीं
न वरम्–परन्तु
नाना–तरह-तरह से
नाम–नाम वाला, नामी
निकषा–निकट

नीचैः–नीचे
परम्–फिर, परन्तु
परश्वः–परसों
परितः–चारों ओर
नूनम्–निश्चित
नो–नहीं
प्रसह्य–जबर्दस्ती
प्राक्–पहले
प्रातः–सबेरे
प्रायः–अक्सर
प्रेत्य–मर कर, दूसरी दुनिया में
बलात्–जबर्दस्ती
बहिः–बाहर
बहुधा–बहुत प्रकार से
भूयः–फिर फिर, अधिक
भृशम्–बार-बार, अधिकाधिक
मिथः–परस्पर
मिथ्या–झूठ
मुधा–बेकार
मुहुः–बार-बार
मृषा–झूठ बोल कर
मनाक्–थोड़ा
परेद्युः–दूसरे दिन (कल)
पर्याप्तम्–काफी
पश्चात्–पीछे
पुनः–फिर
पुरतः–आगे
पुरः–आगे
पुरस्तात्–आगे
पुरा–पहले
पूर्वेद्युः–पहले दिन (कल)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृथक्–अलग-अलग
प्रकामम्–यथेष्ट, बहुत
प्रतिदिनम्–हर रोज
प्रत्युत–उलटे
यत्–जो, क्योंकि
यतः–क्योंकि
यत्र–जहाँ
यथा–जैसे
यथातथा–जैसे-तैसे
यथायथा–जैसे-जैसे
यदा–जब
यावत्–जब तक
युगपत्–साथ साथ, इकबारगी
विना–बिना
वै–निश्चय
शनैः–धीरे-धीरे
श्वः–कल (आने वाला दिन)
शश्वत्–सदा
सकृत्–एक बार
सततम्–बराबर, सब दिन
सदा–हमेशा

सदा–सब दिन
सद्यः–तुरन्त
सपदि–तुरन्त, शीघ्र
समन्तात्–चारों ओर
समम्–बराबर-बराबर
समया–निकट
समीचीनम्–ठीक
समीपे, समीपम्–निकट
सम्प्रति–इस समय, अभी
सम्मुखम्–सामने,
सम्यक्–भली प्रकार
सर्वतः–चारों ओर
सर्वत्र–सब कहीं
सर्वथा–सब प्रकार से
सर्वदा–सब दिन
सह–साथ
सहसा–इकबारगी
सहितम्–साथ
साकम्–साथ
साक्षात्–आँखों के सामने
सार्धम्–साथ

उदाहरण–

अलम्–अतः परम् श्रुत्वा । इससे आगे सुनना व्यर्थ है ।

अलमलम् । बस बस

विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेतुमसाम्प्रतम् । विष के वृक्ष को भी बड़ा करके स्वयं काटना अनुचित है ।

अस्तु, किं तेन (अच्छा, इससे क्या ?)

कुतः आगच्छसि ? कहाँ से आते हैं ।

कुत्र गच्छसि ? कहाँ जाते हो ?

उच्चैः श्रावय । जोर से सुनाओ ।

ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः । ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभितः ग्रामम् उद्यानं वर्तते। गाँव के चारों ओर बाग है।

इदानीमन्यत्र गमिष्यामि। अब दूसरी जगह जाऊँगा।

कदा तत्र गमिष्यसि ? कब वहाँ जाओगे ?

कदाचित् सः आगच्छेत्। शायद वह आवे।

गच्छ किन्तु एकाकिना तत्र न गन्तव्यम्। जाओ किन्तु अकेले न जाना।

परश्वः मम सुहृद् अत्र आगमिष्यति। परसों मेरा मित्र यहाँ आयेगा।

त्वम् मृषा वदसि। तुम झूठ बोलते हो।

यथा राजा तथा प्रजा। जैसे राजा वैसे प्रजा।

प्रतिदिनं कुशलं बरकन्ययोः। बर कन्या का प्रतिदिन कुशल हो।

दिष्ट्या वर्धसे भवान्। हर्ष है कि आप की बढ़ती हो रही है।

प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष। सिंह ने जबरदस्ती उसको खींच लिया।

भूयोऽहम् वदामि। मैं फिर कहता हूँ।

बहिर्गत्वा ज्ञायताम् किमेतत्। बाहर जाकर देखो यह क्या है ?

सपदि गत्वा तम् बालकम् आनय। तुरन्त जा कर उस बालक को ले आओ।

मया सम्यग् ज्ञातम्। मैंने अच्छी तरह समझ लिया।

सर्वत्र निर्वाचनस्य चर्चा वर्तते। सब जगह चुनाव की चर्चा है।

ह्यः श्यामः अत्र आगच्छत्। कल श्याम यहाँ आया था।

३. समुच्चयबोधक अव्यय

च, अथ, तु, वा, अथवा, चेत्, यदि, नो चेत्, यदि, तर्हि, यावत्, तावत्, हि, यदा, तदा, इति आदि अव्यय संस्कृत में शब्दों और वाक्यों को जोड़ते हैं या एकत्र करते हैं। इसलिए ये समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

उदाहरण—

रामः श्यामश्च (राम और श्याम)

अर्थो हि कन्या परकीय एव (क्योंकि कन्या पराया ही धन है)

त्वं तावत् तिष्ठ यावदहं आगच्छामि। तुम तब तक ठहरो जब तक मैं आता हूँ।

एवं कुरु नो चेत् त्वां नाशयिष्यामि। ऐसा करो नहीं तो तुमको नाश कर दूँगा।

त्वं गच्छ इति मया कथितम्। तुम जाओं ऐसा मैंने कहा।

४. मनोविकारसूचक अव्यय

कुछ शब्द मन के विकार क्रोध, दुःख, घृणा आदि को सूचित करते हैं। ये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनोविकार सूचक अव्यय कहलाते हैं।

ऐसे अव्यय हैं– आः, हा हा, हन्त, वत्, धिक्, अयि, अरे रे आदि।

अहो वत, महत्पापं कर्तुं व्यवसिताः वयम्। खेद है हम लोग बहुत बड़ा पाप करने को तैयार हैं।

हा! हा! किमन्तकेन विहितम्! शोक! महाशोक। यमराज ने यह क्या किया। रे दुष्ट! इतः अपसर। रे दुष्ट। यहाँ से दूर हट।

आः पापे ? त्वं मां कदर्थयसि। आः पापिनिः तू मुझको अपमानित करती है। रे रे चातक सावधान मनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्। रे चातक सावधान मन से मेरी बात क्षण भर सुनो।

धिक् तां च त्वं च मदनञ्च इमाञ्च माञ्च! उसको, तुमको, मदन को इसको और मुझको धिक्कार है।

अरे! कस्मिन् त्वमीदृशे दुर्दिनेऽन्धकारे आगतः।

अरेः तुम कैसे इस प्रकार दुर्दिन अँधेरे में आये हो।

आः कथं अतिथिं मां परिभवसि ?

आह, तुम क्यों मुझ अतिथि का अपमान करती हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ७

सन्धि

स्वरसन्धि का चक्र

नीचे लिखे अक्षरों के परे	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	= यह अक्षर हों तो क्रम से दोंनों मिलाकर
अ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर्	ऐ	ऐ	औ	औ	= यह अक्षर हो जाते हैं
आ	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
इ	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	ये	यै	यो	यौ	,,
ई	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ठ	व	वा	वि	वी	ऊ	ऊ	वृ	वे	वै	वो	वौ	,,
ऊ	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ऋ	र	रा	रि	री	रु	रू	ऋ	रे	रै	रो	रौ	,,
ए	अय	अया	आय	अयी	अयु	आयू	अयृ	अये	अयै	अयो	अयौ	,,
ऐ	आय	आया	आयि	आयी	आयु	आयू	आयृ	आये	आयै	अयो	अयौ	,,
ओ	अव	अवा	अवि	अवी	अवु	अवू	अवृ	अवे	अवै	आवो	अवौ	,,
औ	आव	आवा	आवि	आवी	आवु	आवू	आवृ	आवे	आवै	आवो	आवौ	,,
पदान्त { ए	ेऽ	शेषं	पूर्ववत्									
ओ	ोऽ	शेषं	पूर्ववत्									

स्वर सन्धि का चक्र दिया हुआ है । उसके आधार पर कुछ मुख्य नियम उदाहरण सहित लिख दिये गये हैं । इनका अभ्यास करके अन्य स्वर सन्धि युक्त शब्दों का सन्धि विच्छेद करें ।

स्वर सन्धिः

स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण की सन्धि को स्वर सन्धि कहते हैं । इसके मुख्य नियम निम्नलिखित हैं :–

(१) यदि अकार के बाद अकार अथवा आकार आवे तो इन दोनों को मिलकर आकार हो जाता है ।

जैसे–दैत्य+अरिः = दैत्यारिः । देव + आलयः = देवालयः ।

(२) यदि आकार के बाद अकार अथवा आकार रहे तो भी उन दोनों के मिल जाने पर आकार हो जाता है ।

जैसे–महा+अमात्यः = महामात्यः । हता + आशा = हताशा । विद्या + आलयः = विद्यालयः ।

(३) यदि ह्रस्व इकार के बाद इ या ई रहे तो उन दोनों के स्थान पर ई हो जाता है ।

जैसे–गिरि+इन्द्रः = गिरीन्द्रः । अति+इव = अतीव । अधि+ईश्वरः=अधीश्वरः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(४) यदि दीर्घ ईकार के बाद इ अथवा ई रहे तो दोनों मिल कर ई हो जाता है। जैसे–मही + इन्द्रः = महीन्द्रः । श्री + ईशः = श्रीशः ।

(५) यदि ह्रस्व उकार के बाद उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिल कर दीर्घ ऊकार हो जाते हैं। ऊकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। जैसे–साधु + उक्तम् = साधूक्तम् । तरू + ऊर्ध्वम् = तरूर्ध्वम् ।

(६) यदि दीर्घ ऊ के बाद उ या ऊ रहे तो उन दोनों के मिल जाने से ऊकार हो जाता है। ऊकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

जैसे–वधू + उत्सवः = वधूत्सवः । भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम् ।

(७) यदि ऋकार के बाद ऋकार रहे तो दोनों मिल कर ऋकार हो जाता है।

जैसे–पितृ + ऋणम् = पितॄणम् ।

(८) यदि अकार के बाद इ अथवा ई रहे तो दोनों के मिल जाने से ए हो जाता है। एकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

जैसे–शिव+इन्द्रः = शिवेन्द्रः । गण + ईशः = गणेशः ।

(९) यदि आकार के बाद इ अथवा ई रहे तो दोनों मिल कर एकार हो जाते हैं।

जैसे–रमा + ईशः = रमेशः । तथा + इति = तथेति ।

(१०) यदि अकार के बाद उ अथवा ऊ हो तो दोनों मिल कर ओ हो जाते हैं। ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

जैसे–सूर्य+उदयः = सूर्योदयः । गृह + ऊर्ध्वम् = गृहोर्ध्वम् ।

(११) यदि आकार के बाद उ अथवा ऊ आवे तो वे दोनों मिल कर ओकार हो जाते हैं। ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

जैसे–महा + उपकारः = महोपकारः । गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् ।

(१२) यदि अकार के परे ऋकार परे हो तो ऋ के स्थान में र् हो जाता है। रकार को आगे वाले वर्ण के मस्तक पर लगा दिया जाता है।

जैसे–शीत + ऋतुः = शीतर्तुः । देव + ऋषिः = देवर्षिः ।

(१३) यदि अकार के बाद ए या ऐ रहे तो दोनों मिल कर ऐकार हो जाते हैं। ऐकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

जैसे–अद्य + एव = अद्यैव । मत + ऐक्यम् = मतैक्यम् ।

(१४) यदि आकार के बाद ए अथवा ऐ आवे तो दोनों मिल कर ऐकार हो जाते हैं। ऐकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

जैसे–सदा + एव = सदैव । महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् ।

(१५) यदि अकार के बाद ओ अथवा औ रहे तो दोनों के मिल जाने से औकार हो जाता है। औकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–वन + ओषधि: = वनौषधि: । तव + औदार्य्यम् = तवौदार्य्यम् ।

(१६) यदि आकार के बाद ओ अथवा औ रहे तो दोनों के स्थान पर औकार हो जाता है । औकारं पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

जैसे–महा + औषधि: = महौषधि: । महा + ओदनम् = महौदनम् ।

(१७) इ या ई से भिन्न कोई स्वर वर्ण परे हो तो ह्रस्व इ के स्थान पर य् हो जाता है । य् पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

जैसे–प्रति + एकम् = प्रत्येकम् । दधि + आनय = दध्यानय ।

(१८) इ या ई से भिन्न कोई वर्ण परे हो तो ई के स्थान में य् हो जाता है । और य् पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

जैसे–सखी + उक्तम् = सख्युक्तम् । देवी + आगता = देव्यागता ।

(१९) उ ऊ से भिन्न कोई स्वर वर्ण परे हो तो ह्रस्व उ के स्थान पर व् हो जाता है । व् पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

जैसे–मधु + अरि: = मध्वरि । अनु + एषणम् = अन्वेषणम् ।

(२०) उ या ऊ से भिन्न कोई स्वर परे हो तो ऊ को व् हो जाता है । व् पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

जैसे–सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु । बधू + ऐश्वर्यम् = बध्वैश्वर्यम् ।

(२१) ऋकार से भिन्न यदि कोई वर्ण बाद में आये तो ऋ के स्थान पर र् हो जाता है । र् पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

जैसे–पितृ + आदेश = पित्रादेश: । पितृ + अनुमति: = पित्रनुमति: ।

(२२) स्वर वर्ण बाद में रहे तो ऐकार के स्थान में अय् हो जाता है । अकार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और परे का स्वर एकार के साथ मिल जाता है ।

जैसे–ने + अयनम् = नयनम् । शे + इतम् = शयितम् ।

(२३) स्वर वर्ण परे हो तो ऐकार को आय् हो जाता है । आय् का आ पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और परे का स्वर य् के साथ मिल जाता है ।

जैसे–नै + अक: = नायक: । विनै + अक: = विनायक: ।

(२४) स्वर वर्ण परे रहे तो ओकार को अव् हो जाता है । अव् का अ पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और व् आगे के स्वर में मिल जाता है ।

जैसे–भो + अनम् = भवनम् । पो + इत्रम् = पवित्रम् ।

(२५) स्वर वर्ण परे हो तो औकार के स्थान पर आव् हो जाता है । औकार का आ पूर्ववर्ण में मिल जाता है और परे का स्वर व् के साथ मिल जाता है ।

जैसे–पौ + अक: = पावक: । भौ + उक: = भावुक: ।

(२६) पद के अन्त वाले एकार अथवा ओकार के बाद अकार का लोप हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाता है। लोप होने पर अकार का जो चिह्न रहता है उसे लुप्ताकार (लुप्त आकार) कहतें हैं।

जैसे–सखे + अर्पय = सखेऽर्पय। प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण किन्तु गो शब्द के ओ को अव् होता है।

जैसे–गो + अक्षः = गवाक्षः। गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः।

नोट–द्विवचन ईकार, ऊकार, तथा एकार पद की सन्धि नहीं होती, जैसे मुनी इमौ = मुनी इमौ, साधू एतौ, एते इमे। अदस् शब्द के दीर्घ ईकार और ऊकार की सन्धि नहीं होती।

जैसे–अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः। अमू + अर्भकौ = अमू अर्भकौ। कुछ शब्दों पर सन्धि के नियम लागू नहीं होते।

जैसे–मनस् + ईषा = मनीषा, शक + अन्धुः = शकन्धुः। पतत् + अञ्जलिः = पतञ्जलिः।

व्यञ्जनसन्धि

व्यञ्जन वर्णों का व्यञ्जन वर्णों और स्वर वर्णों के साथ व्यञ्जन सन्धि होती है–

व्यञ्जनसन्धि का चक्र १

नीचे लिखे अक्षरों के परे जब	क ख	च छ	ट ठ	त थ	प फ	ग घ	ज झ	ड ढ	द ध	ब भ	ङ ञ ण न् म्	= यह अक्षर हों तो क्रम से उनके स्थानमें
क् ख् ग् घ्	क्	क्	क्	क्	क्	ग	ग्	ग्	ग	ग्	ग	,,
च् छ् ज् झ्	क्	क्	क्	क्	क्	ज् ग	ज् ग्	ज् ग्	ज् ग	ज् ग्	ज्, ञ् ग	यह अक्षर हो जाते हैं
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	ट्	ट्	द्	द्	ड	ड	ड्	ड	ड्	ड्, ण्	,,
त् थ् द् ध्	त्	च्	ट्	त्	त्	द्	ज्	ड्	द्	द्	द्, न् ज्, ड ञ्, ण	,,
प् फ् ब् भ्	प्	प्	प्	प्	प्	ब्	ब्	ब्	ब्	ब्	ब्, म्	,,
छ् ज्	ट्	ट्	ट्	ट्	ट	ड	ड्	ड्	ड्	ड्	ड्, ण	,,
न् (१)	न्	श् श् (५)	षँ ष्	सँ स्	न्	न्	ञ्	ण्	न्	(ञ्) न्	न् ण्	,,
म्	,,	ं,	ं,	ं,	ं,	ं,	ं,	ं,	ं,	ं,	ं, ङ्, न् ं, ञ्	,,
श् (२)	ड् द्	ञ् द्	ण् द्	न् द्	म् द्	ड ड	ड् ड्	ड ड	ड् ड्	ड् ड्	ड्, म् ड्, ण	,, ,,
प् (३)	द्	द्	द्	द्	द्	ड्	ड्	ड	ड्	ड्	ड्, ण	,,
र =:	:.x	श	ष	स	:.	र	र	र	र	र	..	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यञ्जनसन्धि चक्र २

नीचे लिखे अक्षरों के परे जब	य व र ल	हास्य चतुर्थः	ल	श, ष, स	श, शस्य च्छः	ष	स	स्वर	=[यह अक्षर हो तो क्रम से उनके स्थान में
क् ख् ग् घ्	ग्	ग्घ	ग्	क्	क्छ	क्	क्	ग्	= यह अक्षर हो जाते हैं
च् छ् ज् झ्	ज्, ग्	ज्झ, ग्घ्	ज् ग्	क्	च्छ क्छ	क्		ज् क् ग्	,,
ट् ठ् ड् ढ्	ड्	ड्ढ	ड्	ट्	टछ	ट्	ट्	ड्	,,
त् थ् द् ध्	द्	द्ध	द्	त्	च्छ	त्	त्	द्	,,
प् फ् ब् भ्	ब्	ब्भ	ब्	प्	पछ	प्	प्	ब्	,,
छ् ज्	ड्	ड् ढ	ड्	ट्	ट्छ	ट्	ट्	ड्	,,
न् (१)	न्	न्	लँ	ञ् न् न्स्	ञ् श	न्	न्त्स् न्स्	न्न (४)	,,
म्	ं, य् ं, व् ं, लँ		लँ	ं	ं	ं	ं	म्	,,
ष् (३)	ड्	ड्	ड्	ट्	ट्	ट्	ट्	ड्	,,
श् (२)	ड्	ड्	ड्	ट्	ट्	ट्	ट्	ड्	,,
र् =:	लोप. पू.दीर्घः .र	र	र	:,श् :,ष् :,स्	:, श	:,स्	:, स्	र्	,,

व्यञ्जनसन्धि का चक्र दिया गया है। उसके मुख्य नियम चक्र के अनुसार उदाहरण सहित दिये गये हैं। इनको समझ कर इस प्रकार के सन्धि युक्त अन्य शब्दों का भी सन्धि विच्छेद करके अभ्यास करें।

व्यञ्जन सन्धि के मुख्य नियम निम्नलिखित हैं :–

(१) यदि च या छ परे हो तो त् तथा द् के स्थान में च् हो जाता है, जैसे– भगवत् + चरणम् = भगवच्चरणम्। एतद् + छाया = एतच्छाया।

(२) यदि ज या झ परे हो तो त् तथा द् के स्थान पर ज् हो जाता है। जैसे–यावत् + जीवनम् = यावज्जीवनम्। तत् + झङ्कारः = तज्झङ्कारः।

(३) यदि ज् या झ् परे हो तो पदान्त न् के स्थान पर ञ् हो जाता है। जैसे–राजन् + जागृहि = राजञ्जागृहि। उद्यन् + झङ्कारः = उद्यञ्झङ्कार।

(४) यदि पद के अन्त में तकार अथवा द्कार रहे और उसके 'श' परे हो तो त् तथा द् के स्थान में च् हो जाता है और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है। जैसे–जगत् + शरण्यम् = जगच्छरण्यम्। तद् + शरीरम् = तच्छरीरम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५) यदि पद के अन्त में नकार रहे और न् के बाद तालव्य 'श' रहे तो न् के स्थान पर ञ और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है। जैसे–महान् + शब्दः = महाञ्छब्दः।

(६) यदि पद् के अन्त में त् या द् रहे और त् या द् के बाद ह रहे तो त् के स्थान में द् और ह् के स्थान पर ध् हो जाता है। जैसे–तत् + हितः तद्धितः। विपद् + हेतुः = विपद्धेतुः।

(७) यदि चकार या जकार के बाद न रहे तो उस के स्थान पर ञ हो जाता है। जैसे–याच् + ना = याच्ञा। राज् + ना = राज्ञा। (ज् + न् = ज्ञ)

(८) यदि ट या ठ बाद में आवे तो त् तथा द् के स्थान पर ट् हो जाता है। जैसे–तत् + टीका = तट्टीका। सत् + ठकारः = सट्ठकारः।

(९) यदि ड या ढ बाद में आवे तो त् तथा द् के स्थान में ड् हो जाता है। जैसे–भवत् + डमरुः = भवड्डमरुः। एतद् + डामरः = एतड्डामरः। महत् + ढालम् = महद्ढालम्। एतद् + ढक्का = एतड्ढक्का।

(१०) यदि ड या ढ बाद में आवे तो पदान्त न् को मूर्धन्य ण् हो जाता है। जैसे–राजन् + ढौकसे = राजण्ढौकसे। महान् + डामरः = महाण्डामरः।

(११) मूर्धन्यः षकार के बाद यदि त आवे तो त के स्थान पर ट और थ के स्थान पर ठ हो जाता है। जैसे–स्रष् + ता = स्रष्टाः। षष् + थः = षष्ठः।

(१२) यदि त् द् न् के बाद ल आवे तो त् द् तथा न् के स्थान पर ल् हो जाता है और ल के पहिले जो आकार रहता है उसके ऊपर चन्द्रबिन्दु रख दिया जाता है। जैसे–उत् + लेखः = उल्लेखः। तद् + लीनः = तल्लीनः। महान् + लाभ = महांल्लाभः।

(१३) यदि पद के अन्त में न् हो और न् के बाद कोई स्वर आवे तो न् को दो न् हो जाते हैं। जैसे–अर्हन् + इति = अर्हन्निति। गच्छन् + अश्वः = गच्छन्नश्वः।

(१४) यदि न् दीर्घ स्वर के बाद आवे तो न् के स्थान पर दो न् नहीं होते हैं। जैसे–साधून् + आद्रियस्व = साधूनाद्रियस्व। महान् + आग्रहः = महानाग्रहः।

(१५) यदि च या छ परे रहे तो पद के अन्त वाले न् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है और च और छ के स्थान पर श्च और श्छ हो जाता है। जैसे–पश्यन् + चलितः = पश्यंश्चलितः। महान् + छंदः = महांश्छन्द।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१६) यदि पद के अन्त में न् हो और ट अथवा ठ परे हो तो न् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है तथा ट के स्थान पर क्रमशः ष्ट तथा ष्ठ हो जाता है। जैसे–चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः। महान् + ठक्कुरः = महांष्ठक्कुरः।

(१७) यदि त अथवा थ परे हो तो पद के अन्त वाले दन्त्य न् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है और त और थ के स्थान पर स्त और स्थ हो जाता है। जैसे–पतन् + तरुः = पतंस्तरुः। क्षिपन् + थूत्कारम् = क्षिपंस्थूत्कारम्।

(१८) यदि पद के अन्त में म् आवे और उसके बाद अन्तस्थ या उष्म वर्ण आवे तो पद के अन्त वाले म् को अनुस्वार हो जाता है। जैसे–हरिम् वन्दे = हरिं वन्दे। कष्टम् सहते = कष्टं सहते।

(१९) यदि पद के अन्त में म् आवे और उसके बाद अन्तःस्थ, ऊष्म या स्पर्श वर्ण (क से म तक) में से कोई वर्ण आवे तो उस म् को अनुस्वार हो जाता है अथवा वह वर्ण जिस वर्ग का हो उस वर्ग का पंचम हो जाता है।

जैसे–किम् + करोषि = किं करोषि अथवा किङ्करोषि।

छिप्रम् + चलति = क्षिप्रं चलति अथवा छिप्रञ्चलति।

गुरुम् + नमति = गुरुं नमति, सत्यम् ब्रूयात् = सत्यं ब्रूयात् आदि।

(२०) यदि पद के मध्य में न् या म् वर्ण हो और परे स्पर्श वर्ण हो तो न् और म् के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

जैसे–आशन् + कितः = आशङ्कितः। गम् + ता = गन्ता।

(२१) यदि स्वर के बाद छ आवे तो उस स्वर और छ के बीच में एक च् आ जाता है। जैसे–परि + छेदः = परिच्छेदः। गृह + छिद्रम् = गृहच्छिद्रम्।

(२२) यदि स्वर वर्ण या वर्ग का तीसरा और चौथा वर्ण जैसे ग घ आदि अथवा य र ल व ह परे रहे तो पद के अन्त वाले क् को ग् हो जाता है।

जैसे–वाक् + ईश = वागीशः। दिक् + गजः = दिग्गजः। सम्यक् + वदति = सम्यग्वदति।

(२३) यदि स्वर वर्ण अथवा ग घ द ध ब भ य र व परे हो तो पद के अन्त वाले त् के स्थान में द् हो जाता है।

जैसे–जगत् + ईशः = जगदीशः। भवत् + दर्शनम् = अवद्दर्शनम्। वृहत् + रथः = बृहद्रथः। महत् + वनम् = महद्वनम्।

(२४) यदि पद के अन्त में क् रहे और उसके बाद न या म रहे तो क् के स्थान में ङ् हो जाता है। जैसे–वाक् + मयः = वाङ्मय। दिक् + नागः = दिग्नागः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२५) पद के अन्त में त् या द् रहे और आगे न आवे तो त् और द् के स्थान में न् हो जाता है। जैसे–जगत् + नाथः = जगन्नाथः। भवत् + मतम् = प्रबन्धतम्।

विसर्गसन्धि का चक्र

नीचे लिखे विसर्ग के परे जब	अ	स्वर	ग घ ङ	ज झ ञ	ट ड ण	द घ न	व भ म	य र ल व ह	क ख	च छ	ट ठ	त थ	प फ	श ष स	र = यह अक्षर हो तो विसर्ग क्रम से
अ + :	ओऽ	लोपः	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	˘	श्	ष्	स्	˘	श ष स	रेफस्थानम विसर्ग लोप:पूर्व स्य दीर्घ — यह अक्षर आदि हो जाता है।
आ + :	लोपः	लोपः	लोप	लोपः	लोप	लोप	लोपः	लोपः	,,	,,	,,	,,	,,	,,	लोप ए. ,,
इ, ई+:	र	र्	र्	र	र	र	र	र	,,	,,	,,	,,	,,	,,	लो॰पू॰ ,,
उ ऊ+:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
ऋ+:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	लोप एवं ,,
ए+:	,,	,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
ऐ+:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
ओ+:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
औ+:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
भो:	लोप	लो	लोप	लोप:	लोप:	लोप:	लोप:	लोप:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
भगो:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
अघो:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,
स:	ओऽ	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	लोप:	लोप:	लोप:	लोप:	लोप:	लोप:	लोप: ,,
एष:	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,, ,,

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि का चक्र ऊपर दिया हुआ है। उसके आधार पर कुछ मुख्य नियम दिये गये हैं। इनको समझ कर अभ्यास करें। उसके बाद अन्य सन्धि युक्त शब्दों के विच्छेद करने का अभ्यास करें।

पद के अन्त में विसर्ग हो और स्वर या व्यञ्जन वर्ण परे हो तो विसर्ग सन्धि होती है। उसके मुख्य नियम निम्नलिखित हैं–

(१) यदि अकार के आगे विसर्ग : रहे अथवा अकार बाद में रहे तो पूर्व अकार और विसर्ग दोनों के स्थान में ओ हो जाता है। ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है और बाद वाले अकार का लोप हो जाता है। जैसे–शिवः + अर्च्य = शिवोऽर्च्यः। कः + अयम् = कोऽयम्।

(२) यदि वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह परे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो तो अकार तथा अकार के परे स्थित विसर्ग दोनों के स्थान में ओ हो जाता है। ओकार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और बाद वाले अकार का लोप हो जाता है।

जैसे–नव: + डमरु: = नवो डमरु: । अकुत: + भय: = अकुतोभय: ।

शान्त: + रोग: = शान्तो रोग: । दक्षिण: + हस्त: = दक्षिणो हस्त: ।

(३) यदि अकार से भिन्न स्वर परे हो तो अकार के आगे वाले विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती।

जैसे–कुत: + आगमनम् = कुत आगमनम् । सूर्य: + उदेति = सूर्य उदेति ।

(४) यदि आकार के परे स्वर वर्ण अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण या य र ल व ह हो तो आकार के पास वाले विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती।

जैसे–नरा: + एते = नरा एते । गजा: + धावन्ति = गजा धावन्ति ।

छात्रा: + हसन्ति = छात्रा हसन्ति । वृद्धा: + लभन्ते = वृद्धा लभन्ते ।

(५) यदि स्वर वर्ण, अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण या य र ल व ह परे हो तो अ या आ से भिन्न स्वर के लगे विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है।

जैसे–रवि: + अयम् = रविरयम्, बन्धु: + आगत: = बन्धुरागत:, गुरु: + उवाच = गुरुरुवाच । तै: + उक्तम् = तैरुक्तम् । गुरो: + आदेश: = गुरोरादेश: । शनि: + योग: = शनिर्योग: । मुहु: + मुहु: = मुहुर्मुहु: ।

(६) यदि स्वर वर्ण अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह परे रहे तो विसर्ग र् हो जाता है। पुन: + अपि = पुनरपि । अन्त: + ध्यानम् = अन्तर्ध्यानम् । पुन: = रमते = पुनारमते ।

नोट–शब्दों से र् और स् दोनों का विसर्ग होता है। र् से हुए विसर्ग को र जात विसर्ग कहते हैं। जैसे–निर्, अन्तर, प्रात पुनर्, आदि के लिये, अन्त:, पुन: आदि ।

स जात विसर्ग जैसे पय:, मन:, चेत:, वेध: आदि । इनमें स् से विसर्ग बनता है। पयस् शब्द से पय:, पयसी, पयांसि आदि ।

(७) र परे रहने पर विसर्ग के स्थान पर जो र् होता है, उसका लोप हो जाता है और उससे पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे–नि: + रस: = नीरस: । पितु: + ओदनम् = पितूरोदनम् ।

(८) यदि अकार से भिन्न स्वर या व्यञ्जन परे हो तो स: और एष: शब्द के विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती।

जैसे–स: + आगच्छति = स आगच्छति । एष: रोदिति = एष रोदिति । एष: + शेते = एष शेते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(९) यदि स्वर वर्ण अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण या य र ल व ह परे रहे तो भोः के विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती।

जैसे–भोः देवदत्त = भो देवदत्त। भोः अर्जुन = भो अर्जुन।

(१०) क, ख, प, फ परे हो तो दुः वहिः, प्रादुः, आदिः, चतुः शब्दों के विसर्ग को ष् हो जाता है।

जैसे–दुः +करम् = दुष्करम्। बहिः + कृतः = बहिष्कृतः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ८

समास

दो या दो से अधिक पदों (शब्दों) के संक्षेप को समास कहते हैं। समास के लिये कम से कम दो शब्द अवश्य होना चाहिये। यों तो समास में दो से अधिक शब्द भी एक साथ जोड़े जाते हैं।

जैसे–राष्ट्रपति। यहाँ राष्ट्र + पति दो पद हैं।

कविकुलगुरुः। यहाँ कवि + कुल + गुरु तीन शब्द हैं।

समास लम्बे अनेकपद वाले भी होते हैं। जैसे–गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलायम्।

विग्रह–समास में प्रथम पद को पूर्वपद और उसके बाद वाले पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे–राष्ट्रपति में राष्ट्र पूर्वपद है और पति उत्तरपद है। कारक की विभक्ति लगा कर जब टुकड़े-टुकड़े करके समास बनने से पहले का रूप दिखाया जाता है तो उसको विग्रह कहते हैं।

जैसे–राष्ट्रस्य पतिः = राष्ट्रपतिः।

कवेः कुलम् = कविकुलम्, कविकुलस्य गुरुः = कविकुलगुरुः। विग्रह करने के बाद प्रायः विभक्ति का लोप हो जाता है। राष्ट्रस्य के स्य का, कवेः में षष्ठी विभक्ति का, कुलस्य में स्य षष्ठी विभक्ति छूट जाने पर राष्ट्रपतिः, कविकुलगुरुः संक्षेप हो कर समास के रूप में हो गये।

समस्तपद–विग्रह करने के बाद विभक्ति चिह्न को हटा देने पर जो समास हुआ शब्द हो जाता है वह समस्तपद कहलाता है। जैसे–राष्ट्रपतिः, कविकुलगुरुः ये समस्तपद है। समास करने के नियम बने हुये हैं। उनके अनुसार समास बनाया जाता है।

भेद–समास छः प्रकार के होते हैं–

१. अव्ययीभाव, २. तत्पुरुष, ३. कर्मधारय, ४. द्वन्द, ५. बहुव्रीहि ६. द्विगुः।

१. तत्पुरुष–जिन दो या दो से अधिक शब्दों के बीच द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियों द्वारा विग्रह करके समास किया जाता है उनमें तत्पुरुष समास होता है, इनको क्रमशः द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष कहते हैं।

जैसे– दुःखम् अतीतः=दुःखातीतः। दुःख के पार गया। द्वितीया तत्पुरुष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाणेन विद्धः = बाणविद्धः । बाण से घायल । तृतीया तत्पुरुष ।

यूपाय दारु = यूपदारु । यज्ञके लिए लकड़ी । चतुर्थी तत्पुरुष ।

सिंहात् भीतः = सिंहभीतः । शेर से डरा हुआ । पञ्चमी तत्पुरुष ।

राष्ट्रस्य पतिः = राष्ट्रपतिः । राष्ट्र का स्वामी । षष्ठी तत्पुरुष ।

अनुवादे निपुणः = अनुवादनिपुणः । अनुवाद में दक्ष । सप्तमी तत्पुरुष

नञ् तत्पुरुष–नञ् एक अव्यय है । इसके साथ किसी पद का समास किया जाय तो उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं ।

नञ् में केवल 'अ' रह जाता है । यदि उसके बाद के शब्द में प्रथम अक्षर स्वर हो तो इस अ के बाद् न् बढ़ जाता है ।

जैसे–न् अश्वः = अ + न् + अश्वः = अनश्वः

न् ईश्वरः = अ + न् + ईश्वरः = अनीश्वरः ।

यदि व्यञ्जन अक्षर आगे हो तो न् नहीं बढ़ता ।

कहीं कहीं नञ् के न का लोप नहीं भी होता है ।

जैसे–न स्त्री न पुमान् = नपुंसकम् ।

तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण

शोकपतितः, मुहूर्त्तसुखम्, धनार्थः, आचारनिपुणः, गोहितम्, व्याघ्रभीतः, राजपुरुषः, छात्रापुस्तकम्, पाककुशल, गणितनिपुणः, अधर्मः, असत्यम् ।

२. कर्मधारय–कर्मधारय समास उसको कहते हैं जिसमें प्रथम शब्द (पूर्वपद) विशेषण हो और दूसरा शब्द (उत्तरपद) विशेष्य हो । जैसे–

स्वेतं वस्त्रम् = श्वेतवस्त्रम् ।

स्थूलः पुरुषः = स्थूलपुरुषः

स्थूलश्चासौ पुरुषः = स्थूलपुरुषः ।

इसी प्रकार नीलोत्पलम् (नीला कमल), गौरमुखम् (गोरामुख) महापुरुषः, नवभवनम्, कुपुरुषः आदि ।

वास्तव में कर्मधारय समास समानाधिकरण तत्पुरुष का ही दूसरा नाम है ।

३. बहुब्रीहि–बहुब्रीहि समास में प्रायः अन्यपदार्थ प्रधान होता है । अर्थात् जिस समास में आये हुए दोनों शब्द (या अधिक हो तो सब शब्द) किसी अन्य शब्द (पद) विशेषण के रूप में काम करें वह बहुब्रीहि समास कहलाता है ।

जैसे–दिशः अम्बरं यस्य सः दिगम्बरः (शिवजी) ।

चक्रम् पाणौ यस्य सः चक्रपाणिः (श्रीकृष्ण) ।

चन्द्रः शेखरे यस्य स चन्द्रशेखरः (शिवजी) ।

चित्राः गावो यस्य सः चित्रगुः (ऐसा व्यक्ति जिसकी गाय रंग विरंगी हैं) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम उदाहरण में 'दिगम्बर' शब्द न तो दिशा को बताता है और न अम्बर को बल्कि अन्य तीसरे (शिव) को बताता है। इसी प्रकार अन्य उदाहरणों में भी है।

इसी प्रकार–

प्राप्ता विद्या यं स= प्राप्तविद्यः। छात्रः।

भुक्तः ओदनः येन सः भुक्तोदनः। ऐसा पुरुष जिसने भात खा लिया है।

विशालौ बाहू यस्य सः विशालबाहु; (ऐसा व्यक्ति जिसकी बाहें विशाल हो।

बहुव्रीहि समास में नञ् बहुव्रीहि भी होता है।

जैसे–अशिष्यः गुरुः

अविद्यमानः शिष्यः = अशिष्यः गुरुः

४. द्वन्द–द्वन्द समास में प्रायः पूर्वपद और उत्तरपद दोनों के अर्थों की प्रधानता रहती है। जहाँ पर दोनों संज्ञा शब्दों के बीच में 'च' अव्यय का अर्थ छिपा हो उसको द्वन्द समास कहते हैं।

प्रकार

द्वन्द समास दो प्रकार का होता है। इतरेतरयोग द्वन्द २. समाहार द्वन्द

१. इतरेतर योग के द्वन्द में द्विवचन अथवा बहुवचन रहता है। समास के घटकों के भेद स्पष्ट रहता है।

जैसे–रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ।

नरेन्द्रश्च महेन्द्रश्च राजेन्द्रश्च योगेन्द्रश्च = नरेन्द्रमहेन्द्रराजेन्द्रयोगेन्द्राः। दो रहने पर द्विवचन और दो से अधिक होने पर बहुवचन होता है।

अन्य उदाहरण–स्त्रीपुरुषौ, रामकौशल्ये, कृष्णार्जुनौ, भ्रातृभगिन्यौ। दूसरे शब्द का जो लिङ्ग होता है उस लिङ्ग में द्विवचन करके लिखा जाता है। जैसे–रामकृष्णौ में कृष्णा पुँल्लिङ्ग है तो उसका द्विवचन। रामकौशल्ये में कौशल्या स्त्रीलिंग है तो उसका द्विवचन रखा गया है।

२. समाहार द्वन्द में सदा एक ही वचन होता है और वह भी नपुंसक लिङ्ग में। समाहार द्वन्द में समाहार अर्थात् समूह की प्रधानता रहती है।

जैसे–उदरञ्च हृदयञ्च = उदरहृदयम्।

पाणौ च पादौ च = पाणिपादम्।

वंशी च वीणा च = वंशीवीणम्।

शीतं च उष्णं च = शीतोष्णम्।

समाहार द्वन्द कुछ विशेष नियमों के अनुसार ही होते हैं।

५. द्विगु समास–जिस समास में पूर्वपद (प्रथम शब्द) संख्यावाचक हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और दूसरा शब्द संज्ञा हो उसको द्विगु समास कहते हैं। यह समाहार आदि अर्थ में होता है।

जैसे–पञ्चपात्रम्। पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्। (पांच पात्र)

त्रिभुवनम्। त्रयाणाम् भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्। (तीन भुवन)

इसी प्रकार पञ्चगवम्, चतुर्युगम्, सप्तखण्डम् आदि।

यह द्विगु समास समाहार में सदा एकवचन में होता है। प्रायः इसका नपुंसकलिङ्ग ही होता है, जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में है।

जिस द्विगु समास में बाद वाला शब्द (उत्तरपद) अकारान्त हो तो उसके अन्त में ई लगता है।

जैसे–अष्टानां अध्यायानां समाहारः = अष्टाध्यायी (आठ अध्याय)।

यहाँ अध्याय शब्द के अन्त में अ है। अतः उसके अन्त में ई लगा है।

द्विगु समास को द्विगु तत्पुरुष या द्विगु कर्मधारय-तत्पुरुष भी कहते हैं। यह कर्मधारय समास का ही अंग है। अर्थात् इसका प्रयोग द्विगु नाम से करते हैं।

६. **अव्ययीभाव**–जिस समास में पूर्वपद (प्रथम शब्द) अव्यय हो और दूसरा शब्द कोई संज्ञा सुबन्त हो उसको अव्ययीभाव कहते हैं।

दोनों का आपस में समास हो जाने पर वह समस्तपद अव्यय कहलाता है। फिर उस शब्द के रूप नहीं चलते।

जैसे–यथाशक्ति (शक्तिमनतिक्रम्य = यथाशक्ति)।

इसमें यथा अव्यय है। शक्ति के समास होने पर यह 'यथाशक्ति' शब्द ऐसा ही रहेगा। नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में जैसा रूप होना चाहिये वैसा ही रूप हो जाता है। जैसे–यथाशक्ति, यथाकामम् आदि।

निम्नलिखित प्रमुख अर्थों में अव्ययों से अव्ययीभाव समास होता है।

१. अधि अव्यय का सप्तमी अर्थ में। जैसे–हरौ इति = अधिहरि

२. उप अव्यय का समीप अर्थ में। जैसे–नगरस्य समीपम् = उपनगरम्

३. निर् उपसर्ग का अभाव अर्थ में। मक्षिकाणमभावो निर्मक्षिकम्।

४. अनु अव्यय का पश्चात् अर्थ में। जैसे–विष्णोः अनु = अनुविष्णु।

५. सह अव्यय का सादृश्य अर्थ में। जैसे–मित्रस्य सादृश्यम् = समित्रम्।

६. यथा अव्यय का अनतिक्रमण अर्थ में। जैसे–मतिम् अनतिक्रम्य = यथामति।

इसी प्रकार अन्य अव्ययों के साथ अव्ययीभाव समास होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ९

कृदन्तप्रत्यय

धातु से कुछ प्रत्ययों को जोड़ कर संज्ञा, विशेषण और अव्यय शब्द बनाये जाते हैं। वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। उनसे बने हुये शब्द कृदन्त शब्द कहे जाते हैं।

जैसे–लुप् धातु से क्त् प्रत्यय लगने पर क्त का क् हट जाने से लुप् + तः = लुप्तः शब्द बना। यह कृदन्त शब्द है। इस प्रकार के शब्द क्रिया नहीं होते। इनके रूप चलते हैं। लुप्तः, लुप्ता, लुप्तम् ये तीनों लिङ्ग में होंगे। फिर लुप्तः लुप्तौ लुप्ताः आदि रूप सभी विभक्तियों और वचनों में बनेंगे।

कृदन्त प्रत्ययों में निम्नलिखित प्रत्यय प्रमुख हैं–

क्त, क्तवत्, क्त्वा, शतृ, शानच्, तुमुन्

इनका परिचय क्रमशः इस प्रकार है।

क्त प्रत्यय

यह प्रत्यय प्रायः प्रत्येक धातु के साथ भूतकाल बताने या काम की समाप्ति बताने के अर्थ में लगाया जाता है।

जैसे–दृश् धातु से दृष्टः, भू धातु से भूतः, स्ना धातु से स्नातः प्रच्छ धातु से पृष्टः आदि। इनके रूप तीनों लिङ्गों में और सातों विभक्तियों और तीनों वचनों में विशेष्य के अनुसार होते हैं। पुँल्लिङ्ग में राम की तरह, स्त्रीलिङ्ग में रमा की तरह और नपुंसकलिङ्ग में फल के समान होते हैं।

जैसे–गतः दिवसः, गता रात्रि, गतम् वयः।

प्रयोग-

१. सकर्मक धातु के कर्मवाच्य और भाववाच्य में क्त प्रत्ययान्त शब्द लगता है।

सकर्मक धातु में कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया होती है। कर्म में प्रथमा होती है। क्त प्रत्ययान्त शब्द उसी कर्म के लिङ्ग, वचन और विभक्ति के अनुसार होता है।

जैसे–मया बालिका दृष्टा, मया श्यामः दृष्टः, मया फलम् दृष्टम्।

मया पुस्तकानि पठितानि। तेन श्लोकाः रचिताः। स्त्रीभिः कस्य मनः न मोहितम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१. अकर्मक धातु के भाववाचक में कर्त्ता में तृतीया होती है। कर्म नहीं रहता। तब क्तप्रत्ययान्त शब्द केवल नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग में आते हैं।

जैसे–मया जितम्, त्वया भुक्तम्, तया दृष्टम्।

२. गम् अर्थ में आने वाली धातुओं तथा जागृ के अतिरिक्त उपसर्गयुक्त श्लिष्, शीङ्, स्था, आस् वस्, जन्, रुह् और तृ इन धातुओं से क्रमशः गतः, जागरितः, उपश्लिष्ट, उपशयितः, अधिष्ठितः, उपासितः, उपोषितः, अनुज्ञातः, आरूढः, अनुतीर्ण क्त प्रत्यय लगने से बनते हैं। इसके प्रयोग इस प्रकार होते हैं।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
रामः ग्रामं गतः	रामेण ग्रामः गतः	रामेण गतम्
ते मम ग्रामं अधिष्ठिताः	तैः मम ग्रामः अधिष्ठितः	तैः अधिष्ठितम्
बालिका वृक्षं अधिरूढा	बालिकया वृक्षः अधिरूढा	बालिकया अधिरुढम्
रामः जागरितः		रामेण जागरितम्
बालकौ ग्रामं गतौ	बालकाभ्याम् ग्रामः गतः	बालकाभ्याम् गतम्

३. अकर्मक क्रिया में कर्तृवाच्य में जब क्त प्रत्ययान्त शब्द आता है तो कर्त्ता के अनुसार उसका लिङ्ग, वचन होता है।

जैसे–सः गतः। सा गता। तौ गतौ। ते गताः। मम पुत्रः सुप्तः। मम पुत्री सुप्ता। मम गृहाणि पतितानि।

प्रत्ययान्त शब्द सभी क्रिया का काम देते मालूम पड़ते हैं किन्तु वस्तुतः ये विशेषण होते हैं। ऐसे वाक्यों में अस्ति क्रिया छिपी रहती है। जैसे–सः भीतः। यहाँ सः भीतः (अस्ति) ऐसा समझना चाहिये। इसी प्रकार सः गतः (अस्ति) आदि।

नीचे प्रसिद्ध धातुओं के क्त प्रत्यय लगे प्रथमा विभक्ति के तीनों लिङ्गों के रूप दिये गये हैं।

क्त प्रत्यय

कृ	कृतः	कृता	कृतम्
ज्ञा	ज्ञातः	ज्ञाता	ज्ञातम्
पा	पीतः	पीता	पीतम्
पा	पातः	पाता	पातम्
दृश्	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्
वच्	उक्तः	उक्ता	उक्तम्
भिद्	भिन्नः	भिन्ना	भिन्नम्
पच्	पक्वः	पक्वा	पक्वम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुष्	शुष्कः	शुष्का	शुष्कम्
ग्रह्	गृहीतः	गृहीता	गृहीतम्
हन्	हतः	हता	हतम्
चुर्	चोरितः	चोरिता	चोरितम्
लिख्	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
पठ्	पठितः	पठिता	पठितम्
कारि	कारितः	कारिता	कारितम्
गम्	गतः	गता	गतम्
जागृ	जागरितः	जागरिता	जागरितम्
श्लिष्	आश्लिष्टः	आश्लिष्टा	आश्लिष्टम्
जन्	जातः	जाता	जातम्
जृष्	जीर्णः	जीर्णा	जीर्णम्
तुष्	तुष्टः	तुष्टा	तुष्टम्
क्रीड्	क्रीडितः	क्रीडिता	क्रीडितम्
भुज्	भुक्तः	भुक्ता	भुक्तम्
त्यज्	त्यक्तः	त्यक्ता	त्यक्तम्
दा	दत्तः	दत्ता	दत्तम्
नश्	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
रुध्	रुद्धः	रुद्धा	रुद्धम्
हृष्	हृष्टः	हृष्टा	हृष्टम्
भृ	भीतः	भीता	भीतम्
छिद्	छिन्नः	छिन्ना	छिन्नम्

क्तवतु प्रत्यय

इसमें तवत् रह जाता है। इसको धातु से जोड़ कर या क्त प्रत्यय के शब्द में वत् लगा कर बनाया जाता है। जैसे–गत से गतवत्, पठित से पठितवत् आदि। इसका भी तीनों लिङ्गों में रूप चलता है।

जैसे–पठितवान्, पठितवती, पठितवत्।

प्रयोग–यह प्रत्यय सदा सभी धातुओं से बनाया जाता है। क्तवत् प्रत्यय सदा कर्तृवाच्य में प्रयोग किया जाता है। यह कर्त्ता के सभी विशेषण के रूप में होता है। कर्त्ता के लिङ्ग, वचन और विभक्ति के अनुसार उनका प्रयोग होता है। क्तवत् प्रत्यय वाले शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में बनते है। नपुंसक और पुल्लिङ्ग में श्रीमत् के समान, स्त्रीलिङ्ग में नदी के समान रूप होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–	पठितवान्	पठितवन्तौ	पठितवन्तः	(पु०)
	पठितवती	पतिवत्यौ	पठितवत्यः	(स्त्री०)
	पठितवत्	पठितवती	पठितवन्ति	(नपु०)

वाक्यों में इनका प्रयोग इस प्रकार होता है। क्रिया के रूप में भी इसका प्रयोग होता है। सः दुर्गं दृष्टवान्। सा दुर्गं दृष्टवती। मम मित्रम् दुर्गं न दृष्टवत्। ते पुस्तकानि पठितवन्तः। बालिकाः पुस्तकानि पठितवत्यः। मम मित्राणि अद्यापि पुस्तकं न पठितवन्ति।

अन्य उदाहरण

त्वदीया माता त्वाम् किं पृष्टवती। रुदितवन्तं बालकं समुपसृत्य माता अपृच्छत्। मृतवतां चिन्तां विहाय जीवतः रक्ष।

भोजनं कृतवद्भ्यः सर्वेभ्यः ताम्बूलं देहि। चोरेभ्यः भीतवतीं बालिकां अहं अकथयम्। तस्य माता तव चातुर्य ज्ञातवती।

नीचे प्रमुख धातुओं से क्तवत् प्रत्यय के रूप प्रथमा विभक्ति के तीनों वचन में दिये गये हैं। रूप सभी विभक्तियों में होते हैं जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से विदित है।

क्तवतु प्रत्ययः

कृ	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
श्रु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
हृ	हृतवान्	हृतवती	हृतवत्
दृ	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
पा	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
प्रच्छ्	पृष्टवान्	पृष्टवती	पृतवत्
वच्	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्
वप्	उप्तवान्	उप्तवती	उप्तवत्
इष्	इष्टवान्	इष्टवंती	इष्टवत्
पच्	पक्ववान्	पक्ववती	पक्ववत्
वह्	ऊढवान्	ऊढवती	ऊढवत्
भिद्	भिन्नवान्	भिन्नवती	भिन्नवत्
छिद्	छिन्नवान्	छिन्नवती	छिन्नवत्
मृ	मृतवान्	मृतवती	मृतवत्
हन्	हतवान्	हतवती	हतवत्
ज्ञा	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
दह्	दग्धवान्	दग्धवती	दग्धवत्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिष्	पिष्टवान्	पिष्टवती	पिष्टवत्
गम्	गतवान्	गतवती	गतवत्
आगम्	आगतवान्	आगतवती	आगतवत्
मुच्	मुक्तवान्	मुक्तवती	मुक्तवत्
तुष्	तुष्टवान्	तुष्टवती	तुष्टवत्
ग्रह	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
रुद्	रुदितवान्	रुदितवती	रुदितवत्
विद्	विदितवान्	विदितवती	विदितवत्
क्रीड्	क्रीडितवान्	क्रीडितवती	क्रीडितवत्
भक्ष्	भक्षितवान्	भक्षितवती	भक्षितवत्
चुर्	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्

क्त्वा प्रत्ययः

एक ही कर्त्ता के द्वारा लगातार की जा रही दो क्रियाओं में से पूर्व की क्रिया वाली धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। इसको पूर्वकालिक क्रिया भी कहते हैं।

जैसे–रामः स्नात्वा खादति। यहाँ पर स्नान करके पूर्व क्रिया है और खादति बाद की क्रिया है। अतः स्ना धातु से क्त्वा प्रत्यय बनेगा। क्त्वा में क् हट् जायेगा। त्वा रहेगा। स्नात्वा बनेगा।

इसी प्रकार कृ धातु से कृत्वा। दद् धातु से दत्त्वा, ज्ञा से ज्ञात्वा, नी से चीत्वा आदि।

क्त्वा प्रत्यय लगी हुई क्रिया का रूप अव्यय होता है। उसका कोई रूप नहीं चलता।

सेट् धातुओं में क्त्वा लगने पर धातु के अन्त के अक्षर में इ बढ़ जाता है। जैसे–पठ् + इ + त्वा = पठित्वा। इसी प्रकार हसित्वा, खादित्वा, विदित्वा, याचित्वा, भ्रमित्वा, गणयित्वा आदि।

प्रयोग–त्वम् कार्यं कृत्वा तत्र गच्छ। गुरून् नत्वा पठेत्। सः माम् पृष्ट्वा तत्र गच्छति। अग्रे भूत्वा अहं गच्छामि, त्वं माम् अनुगच्छ। पाठं श्रुत्वा तस्य अर्थं जानातु। नारिकेलं भित्वा तस्य जलं पिब।

क्त्वा के पहले अ, अन् और अलम् तथा खलु का भी प्रयोग होता है।

जैसे–केचित् दानं अदत्त्वा भोजनं न कुर्वन्ति। अभिप्रायं ज्ञात्वा उत्तरं देहि। अपृष्ट्वा तत्र न गच्छ। अलं भुक्त्वा। अलं सन्धावेलायां सुप्त्वा। अनुप्त्वा बीजानि कः अन्नं लभते ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नोट–अन् केवल ऐसे धातु में लगता है जिसका प्रथम अक्षर स्वर हो। जैसे–उप् + त्वा = उप्त्वा। न + उप्त्वा = अनुप्त्वा = न बो कर (बिना बोये) नीचे क्त्वा प्रत्यय लगे हुये रूपों की सूची दी गई है। इससे वाक्य बनाने का अभ्यास करें।

क्त्वा :-करके		उप्त्वा	बो कर
गत्वा	जा कर	पृष्ट्वा	पूछ कर
भृत्वा	भर कर, पोषण करके	युद्ध्वा	युद्ध करके
भूत्वा	हो कर	असित्वा	रह कर
इष्ट्वा	यज्ञ करके	खादित्वा	खा कर
पक्त्वा	पका कर	लिखित्वा	लिख कर
पिष्ट्वा	पीस कर	चलित्वा	चल कर
दृष्ट्वा	देख कर	भ्रमित्वा	घूम कर
घृष्ट्वा	घिस कर	विदित्वा	जान कर
दत्त्वा	दे कर	शयित्वा	सो कर
हित्वा	छोड़ कर	याचित्वा	माँग कर
ज्ञात्वा	जान कर	गृहीत्वा	ले कर
स्नात्वा	नहा कर	पठित्वा	पढ़ कर
स्थित्वा	ठहर कर	हसित्वा	हँस कर
श्रुत्वा	सुन कर	चोरयित्वा	चुरा कर
कृत्वा	कर के	भक्षयित्वा	खा कर
बद्ध्वा	बाँध कर	नत्वा	प्रणाम करके
मुक्त्वा	छोड़ कर	पीत्वा	पी कर
भित्त्वा	फोड़ कर	नीत्वा	ले कर
छित्त्वा	काट कर	गणयित्वा	गिन कर
रूद्ध्वा	रोक कर	दुग्ध्वा	दुह कर
सुप्त्वा	सो कर	लीढ्वा	चाट कर
दग्ध्वा	जला कर	ऊढ्वा	ढो कर
उक्त्वा	कह कर		

ल्यप् प्रत्यय

एक ही कर्त्ता द्वारा लगातार की जा रही दो क्रियाओं में से पूर्वकाल की क्रिया में यदि कोई उपसर्ग लगा हो तो उसमें क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय लगाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–प्र उपसर्ग नम् धातु = प्रनम् + ल्यप् = प्रणम्य = प्रणाम करके ।

उपसर्ग में र् होने से न को ण हुआ । ल्यप् में ल् और प् हट जाने से केवल य रहता है । इसी प्रकार निहत्य = मार कर, अवबुध्य = जान कर, आकर्ण्य = सुन कर, विमुच्य = छोड़ कर, निपीय = पी कर, निगृह्य = बाँध कर आदि । ल्यप् प्रत्यय लगने पर किसी भी धातु में इ नहीं बढ़ता । जैसे सेट् में क्त्वा में पठित्वा आदि में लगता है ।

प्रयोग–दैवं निहत्य आत्मशक्त्या पौरुषं कुरु=भाग्य को मार कर शक्तिभर पुरुषार्थ करो ।

त्वं मम वचनं आकर्ण्य ततः तत्र गच्छ = तुम मेरी बात सुन कर उसके बाद वहाँ जाओ ।

ऋषेः धेनुं विमुच्य मया सह आगच्छ=ऋषि की गाय छोड़ कर मेरे साथ आओ ।

चौरं निगृह्य आरक्षिणः पार्श्वे आनय=चोर को बाँध सिपाही के पास ले आओ ।

पुष्पाणि अनाघ्राय देवाय समर्पय = फूलों को बिना सूँघे देवताओं को समर्पित करो ।

नीचे ल्यप् प्रत्यान्त रूप दिये गये हैं । उनसे वाक्य बनाने का अभ्यास करें ।

धातु	क्त्वा	ल्यप्
आस्	आसित्वा	उपास्य
ईक्ष	ईक्षित्वा	समीक्ष्य
कृ	कृत्वा	उपकृत्य
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय
गण	गणयित्वा	विगणय्य
ग्रह	ग्रहीत्वा	संगृह्य
घ्रा	घ्रात्वा	आघ्राय
चुर्	चोरयित्वा	संचोर्य
जि	जित्वा	विजित्य
त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
दुह्	दुग्ध्वा	संदुह्य
दृश्	दृष्ट्वा	संदृश्य
नम्	नत्वा	प्रणम्य
पठ्	पठित्वा	प्रपठ्य
भुज्	भुक्त्वा	उपभुज्य
मिल	मिलित्वा	संमिल्य
युध्	युध्वा	प्रयुध्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिख्	लिखित्वा	आलिख्य
विद्	विदित्वा	संविद्य
हस	हसित्वा	विहस्य

शतृ प्रत्यय

वर्तमान काल में लट् के स्थान पर परस्मैपद धातु से शतृ प्रत्यय लगता है। उभयपदी धातु में भी परस्मैपद में शतृ प्रत्यय जोड़ा जाता है। शतृ में श और तृ हट जाने पर केवल अत् रह जाता है। यह प्रत्यय भविष्यत् काल लृट् में भी उसके स्थान् पर विकल्प से लगाया जाता है।

जैसे–गच्छ् + अत् = गच्छत् (यह परस्मैपदी से बना हुआ है)।

नय् + अत् = नयत् (यह उभयपदी धातु का परस्मैपदी रूप है)।

इनके वर्तमान के स्थान पर शतृ (अत्) होने से इसको वर्तमान स्थानीय शतृ कहते हैं। इनका रूप तीनों लिङ्गों, तीनों वचनों और सभी विभक्तियों में चलता है। जैसे–

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः	पुँ०, प्रथमा
गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः	स्त्री० प्रथमा
गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति	नपुं० प्रथमा

इसका अर्थ जाता हुआ, खाता हुआ, हँसता हुआ आदि होता है। धातु का सामान्य भविष्यत् काल में जो रूप बनता है उसमें ति के स्थान पर त् कर देने से शतृ प्रत्ययान्त रूप हो जाता है। जैसे–

गमिष्यत्, भविष्यत्, पठिष्यत्, हसिष्यत् आदि

पुं०	गमिष्यन्	गमिष्यन्तौ	गमिष्यन्तः
स्त्री०	गमिष्यन्ती	गमिष्यन्त्यौ	गमिष्यन्त्यः
नपुं०	गमिष्यत्	गमिष्यन्ती	गमिष्यन्ति

इसको भविष्यत् स्थानीय शतृ कहते हैं। इसका अर्थ जानेवाला, हँसने वाला होगा।

ये शतृ प्रत्यय् से बने शब्द विशेषण के रूप में प्रयोग में आते हैं।

प्रयोग–सः गच्छन् अस्ति। वह जा रहा है।

गृहं गच्छन्ती कमला मां अवदत्। घर जाती हुई कमला ने मुझसे कहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वं वृक्षात् पतन्ति पक्वानि फलानि आनय। तुम वृक्ष से गिरते हुये पके फल लाओ।

रुदन्तं बालकं दृष्ट्वा माता तम् अपृच्छत्। रोते हुये बालक को देख कर माता ने उससे पूछा।

भवति जीवति अहम् जीवामि। आपके जीवित रहते मैं जीवित हूँ।

किं तस्य नासिकात: बृहत् शोणितं त्वं न अपश्य: ? क्या उसके नाक से बहते हुये खून को तुमने नहीं देखा ?

शतृ : करते हुये

क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
पतन्	पतन्ती	पतत्
पठन्	पठन्ती	पठत्
गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
हसन्	हसन्ती	हसत्
खादन्	खादन्ती	खादत्
जीवन्	जीवन्ती	जीवत्
खेलन्	खेलन्ती	खेलत्
पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
इच्छन्	इच्छन्ती	इच्छत्
विकसत्	विकसन्ती	विकसत्
शृण्वन्	शृण्वन्ती	शृण्वत्
जयन्	जयन्ती	जयत्
विभ्यन्	विभ्यती	विभ्यत्
भ्रमन्	भ्रमन्ती	भ्रमत्
रुदन्	रुदती	रुदत्
जाग्रन्	जाग्रती	जाग्रत्
यास्यन्	यास्यन्ती	यास्यत्
पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
भक्षयन्	भक्षयन्ती	भक्षयत्
तर्जयन्	तर्जयन्ती	तर्जयत्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्थापयन्	उत्थापयन्ती	उत्थापयत्
पिपठिषन्	पिपठिष्यन्ती	पिपठिष्यत्
भक्षयिष्यन्	भक्षयिष्यन्ती	भक्षयिष्यत्
श्रोष्यन्	श्रोष्यन्ती	श्रोष्यत्
पास्यन्	पास्यन्ती	पास्यत्

शानच् प्रत्यय

वर्तमान काल के स्थान पर आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय जोड़ा जाता है । सामान्य भविष्यत् काल स्थान में भी शानच् प्रत्यय होता है। जो उभयपदी धातु है उनके आत्मनेपद में विकल्प से शानच् प्रत्यय होता है। शानच् में श् और च् के हट जाने पर केवल आन बचता है ।

वर्तमान काल में कुछ धातुओं में आन प्रत्यय सीधे जोड़ दिया जाता है। जैसे–चिन्वानः, दधानः, भिन्दानः, क्रीणानः, पुनानः, आदि। कुछ धातु में आन से पहिले म बढ़ा कर लगाया जाता है। जैसे–वर्धमानः, पचमानः, यजमानः, प्रार्थयमानः, मोदमानः आदि। आस् धातु में आन लगाने पर आस् + आन = आसान में स के आ को ई करके आसीनः बनाया जाता है। इनका अर्थ बढ़ता हुआ, लजाता हुआ, धारण करता हुआ, देता हुआ आदि होता है । यह वर्तमान स्थानीय शानच् कहलाता है।

भविष्यत, स्थानीय शानच् में सब धातुओं के साथ आन के पहले म बढ़ा दिया जाता है। जैसे–यतिस्यमानः, लप्स्यमानः, शयिष्यमाणः, दास्यमानः, करिष्यमाणः, क्रेष्यमाणः, पविष्यमाणः, पठिष्यमाणः आदि।

शानच् प्रत्ययान्त के रूप तीनों लिङ्गों, तीनों वचनों और सभी विभक्तियों में होते हैं। पुंल्लिङ्ग में राम के समान, स्त्रीलिङ्ग में रमा के समान और नपुंसकलिङ्ग में ज्ञान शब्द के समान होते हैं।

नीचे शानच् लगे हुये धातुओं के कुछ रूप दिये गये हैं।

	शानच्	
मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
लभमानः	लभमाना	लभमानम्
रममाणः	रममाणा	रममाणाम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शयानः	शयाना	शयानम्
म्रियमाणः	म्रियमाणा	म्रियमाणाम्
मन्यमानः	मन्यमाना	मन्यमानम्
यजमानः	यजमाना	यजमानम्
भजमानः	भजमाना	भजमानम्
याचमानः	याचमाना	याचमानम्
ददानः	ददाना	ददानम्
ब्रुवाणः	ब्रुवाणा	ब्रुवाणम्
कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
अधीयानः	अधीयाना	अधीयानम्
मोदिष्यमाणः	मोदिष्यमाणा	मोदिष्यमाणम्
सेविष्यमाणः	सेविष्यमाणा	सेविष्यमाणम्
शयिष्यमाणः	शयिष्यमाणा	शयिष्यमाणम्
रंस्यमानः	रंस्यमानाः	रंस्यमानम्
मंस्यमानः	मंस्यमाना	मंस्यमानम्
दास्यमानः	दास्यमाना	दास्यमानम्
अध्येष्यमाणः	अध्येष्यमाना	अध्येष्यमाणम्

प्रयोग—

यतमानानाम् नराणाम् कार्यं सिद्ध्यति।

यत्न करने वाले मनुष्यों का काम सिद्ध होता है।

ईश्वरं भजमानानाम् तपस्विनाम् रूपं दृष्ट्वा मम मनसि श्रद्धा अभवत्।

ईश्वर को भजने वाले तपस्वियों के रूप को देख कर मेरे मन में श्रद्धा हुई।

अपृष्ट्वा ब्रुवाणाः पुरुषाः आदरं न प्राप्नुवन्ति।

बिना पूछे बोलने वाले लोग आदर नहीं पाते हैं।

रामलक्ष्मणौ विश्वामित्रेण सह स्वयंवरे पतिं वरिष्यमाणायाः सीतायाः स्वयंवर स्थले जग्मतुः।

राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ स्वयंवर में पतिं को चुनने वाली सीता के स्वयंवर स्थल पर गये।

धर्मं जिज्ञासमानानाम् जनानाम् कृते श्रुतिः परम् प्रमाणम् अस्ति।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धर्म को जानने वाले लोगों के लिए वेद परम प्रमाण है।

याचमानान् भद्रपुरुषान् वीक्ष्य अहम् किञ्चित् दातुमिच्छामि।

माँगने वाले भले लोगों को देख कर मैं कुछ देना चाहता हूँ।

प्रयागात् आगमिष्यद्भिः तव मित्रैः सह मम पुत्रोऽपि आगमिष्यति।

प्रयाग से आने वाले तुम्हारे मित्रों के साथ मेरा पुत्र भी आने वाला होगा।

तव मातरि आगमिष्यति अहमपि तया सह गमिष्यामि। तुम्हारी माता के आने पर मैं भी उसके साथ जाऊँगा।

तुमुन्

जब कोई दूसरी क्रिया करने के लिये कोई कार्य किया जाता है तो जिस क्रिया के लिये कार्य किया जाता है उसकी धातु में भविष्यत् काल के अर्थ में तुमुन् प्रत्यय होता है। जैसे–

श्यामः पठितुं गच्छति। इस वाक्य में दो क्रिया है 'पढ़ना' और 'जाना' पढ़ना क्रिया को सफल करने के लिये जाना क्रिया की जा रही है। इस प्रकार की साधन क्रिया को क्रियार्थी क्रिया कहते हैं। इसलिये पठ् धातु में तुमुन् प्रत्यय होगा। उसमें से सु का उ और न् हट जाने से तुम् बचेगा।

जैसे–पठ् से पठितुं, पत् से पतितुं, हस् से हसितुम् आदि।

सेट् धातुओं में इ बढ जायेगा। जैसे पठितुम् में। अन्य में नहीं जैसे–द्रष्टुम्, प्रोक्तुम्, दोग्धुम् आदि।

तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूप नहीं चलते। इनके बनाने की सरल विधि है कि धातु के अनद्यतन भविष्य के प्रथमपुरुष के रूप में से 'ता' हटा कर उसके स्थान पर तुम् कर दिया जाय।

जैसे–श्रु धातु सुनना = श्रोता = श्रो + तुम् = श्रोतुम्।

इसी प्रकार पठिता=पठि+तुम्=पठितुम्, लज्जितुम्, क्रेतुम्, नर्तितुम्।

प्रयोग–

अहं मित्रम् द्रष्टुं गच्छामि। सः कथां श्रोतुम् इच्छति। बालिका पाठं पठितुम् याति। तं रोद्धुम् कः शक्नोति।

नोट–दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही होना चाहिये।

नीचे तुमुन् प्रत्ययान्त रूप दिये गये हैं। उनसे वाक्य बनाने का अभ्यास कीजिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुमुन्

धातु	रूप	धातु	रूप
यत्	यतितुम्	वृ	वरितुम्, वरीतुम्
पठ्	पठितुम्	मृ	मार्जितुम्, मार्ष्टुम्
गा	गातुम्	दृश्	द्रष्टुम्
लभ्	लब्धुम्	इष्	एषितुम्, एष्टुम्
पा	पातुम्	आप्	आप्तुम्
वह्	वोढुम्	नृत्	नर्तितुम्
वच्	वक्तुम्	क्री	क्रेतुम्
कृ	कर्त्तुम्	भुज्	भोक्तुम्
ग्रह्	ग्रहीतुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्
श्रु	श्रोतुम्	सृज्	स्रष्टुम्
दा	दातुम्	अधि इङ्	अध्येतुम्
धा	धातुम्	दुह्	दोग्धुम्
भू	भवितुम्	लिह्	लेढुम्
तृ	तरितुम्	शी	शयितुम्
गुप्	गोप्तुम्	तन्	तनितुम्
भक्ष	भक्षयितुम्	विक्री	विक्रेतुम्
कारि	कारयितुम्	पच्	पक्तुम्
ज्ञा	ज्ञातुम्	यज्	यष्टुम्
मन्	मन्तुम्	चुर्	चोरयितुम्
पाठ	पाठयितुम्	गणय	गणयितुम्
स्तु	स्तोतुम्	कथ	कथयितुं
सह्	सहितुम्, सोढुम्	नह्	नद्धुम्'

तव्य, अनीयर् और यत् प्रत्यय

ये प्रत्यय भाववाच्य और कर्मवाच्य में होते हैं। इनका प्रयोग संज्ञाओं के विशेषण के रूप में भी किया जाता है। जैसे–कर्त्तव्यं कर्म। वह कर्म जो करना चाहिये। गन्तव्यं स्थानम्। गमनीयम्।

'चाहिये' और 'योग्य' अर्थ में और विधि के अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है। इसके बनाते समय धातु की उपधा के इक् को गुण हो जाता है। जैसे–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृ + तव्य = कर्त्तव्य, चि + तव्य = चेतव्य, चि + अनीय = चयनीय। ये प्रत्यय कर्म या भाव में होते हैं। कर्म में होने पर कर्त्ता में तृतीया या षष्ठी होती है। जैसे– श्यामेन पाठः पठितव्यः, रामेण शोभा द्रष्टव्या। कृष्णेन पुस्तकम् पठितव्यम्।

कर्म में प्रथमा होती है और कर्म के अनुसार तव्यान्त शब्द की विभक्ति का लिङ्ग वचन होता है जैसा कि ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है। भाव में जब प्रयोग होगा तो कर्त्ता में तृतीया होगी। कर्म नहीं रहेगा। तव्य और अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द सदा प्रथमा का एकवचन और नपुंसकलिङ्ग होगा। जैसे–त्वया स्थातव्यम्, युवाभ्याम् स्थातव्यम्, युष्माभिः स्थातव्यम्।

इनके रूप पुँल्लिङ्ग में रामवत्, स्त्रीलिङ्ग में रमावत् और नपुंसकलिङ्ग में ज्ञानवत् चलते हैं।

प्रयोग

अस्माभिः पाठः पठितव्यः। हम लोगों को पाठ पढ़ना चाहिये।

त्वया इमानि पुस्तकानि पठनीयानि। पठितव्यानि। तुमको ये पुस्तकें पढ़नी चाहिये। पढ़ने योग्य हैं।

रामेण पत्रं लेखनीयम्। राम को पत्र लिखना चाहिये। मया इमे वार्ते ज्ञातव्ये। ज्ञानीये। मुझको ये बातें जाननी चाहिये।

किं त्वया इमानि कार्याणि कर्तव्यानि। करणीयानि। क्या तुझको ये कार्य करने योग्य है।

न भेतव्यम्। न डरो। सायङ्काले न शयितव्यम्। संध्या समय में न सोना चाहिये।

मम वार्ताः श्रोतव्याः। मेरी बातें सुनी जानी चाहिये।

एतादृशाः पापिनः हन्तव्याः। ऐसे अधर्मियों का वध करने योग्य है।

इनके अतिरिक्त कृदन्त के कुछ प्रत्ययों से कर्तृवाचक, भाववाचक, कर्मवाचक शब्द भी बनते हैं।

जैसे–

कर्तृवाचक –

पाठकः, नेता, नरः, पिपासु, आदि।

भाववाचक–

पाकः, जपः, करणम्, गतिः, पिपासा (स्त्रीलिङ्ग)

कर्मवाच्य–

दुष्करः।

कुछ अन्य प्रत्ययों से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–विधिः, अज्ञः आदि।

कृदन्तों में र् और ऋ पर विचार

कृदन्तों में क्त, क्तवत्, और क्त्वा में जहाँ, ये प्रत्यय लगते हैं उस धातु में जहाँ 'ऋ' है, वहाँ 'ऋ' होता है।

जैसे–दृश में द् में ऋ है तो दृष्टः, दृष्टवान्, दृष्ट्वा, किन्तु तुमुन्, तृच् आदि जुड़ने पर जहाँ 'ऋ' नहीं है, वहाँ र् हो जाता है। जैसे–द्रष्टव्यः, द्रष्टुम् आदि।

इसी प्रकार गृहीतः, गृहीत्वा व गृहीतम्।

इसी प्रकार 'इ' और 'व' तथा 'इ' और 'व' का भी भेद स्मरणीय है।

जैसे–सुप्तः, स्वप्तव्यः। इष्टः, यष्टव्यः।

नीचे तव्य और अनीयर प्रत्ययों के बने शब्द दिये गये हैं। इनसे वाक्य बनाने का अभ्यास करें।

धातु	तव्य	अनीयर
अट्	अटितव्यः	अटनीयः
अद्	अत्तव्यः	अद्नीयः
अर्च	अर्चितव्यः	अर्चनीयः
उप अर्ज्	उपार्जितव्यः	उपार्जनीयः
अर्थ्	अर्थयितव्यः	अर्थनीयः
	प्रार्थयितव्यः	प्रार्थनीयः
अश्	अशितव्यः	अशनीयः
अव्	अवितव्यः	अवनीयः
निर अस्	निरसितव्यः	निरसनीयः
प्र+अप्	प्राप्तव्यः	प्रापनीयः
अस्	आसितव्यः	आसनीयः
अधि+इङ्	अध्येतव्यः	अध्ययनीयः
इष्	एषितव्यः	एषणीयः
निर् ईक्ष	निरीक्षितव्यः	निरीक्षणीयः
अह्	अहितव्यः	अहनीयः
एध्	एधितव्यः	एधनीयः
कथ्	कथयितव्यः	कथनीयः
कम्प्	कम्पितव्यः	कम्पनीयः
आ+कर्ण	आकर्णितव्यः	आकरणीयः
आ+कांक्ष्	आकाङ्क्षयितव्यः	आकाङ्क्षनीयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्र+काश्	प्रकाशितव्यः	प्रकाशनीयः
कुप्	कोपितव्यः	कोपनीयः
कूज्	कूजितव्यः	कूजनीयः
कृ	कर्त्तव्यः	करणीयः
कृत्	कर्तितव्यः	कर्तनीयः
कृप्	कल्पितव्यः	कल्पनीयः
कुन्द्	कुन्दितव्यः	कुन्दनीयः
क्री	क्रेतव्यः	क्रयनीयः
क्रीड्	क्रीडितव्यः	क्रीडनीयः
क्षम्	क्षन्तव्यः	क्षमणीयः
क्षल्	क्षालयितव्यः	क्षालनीयः
क्षिप्	क्षेप्तव्यः	क्षेपनीयः
खाद्	खादितव्यः	खादनीयः
गण्	गणयितव्यः	गणनीयः
गम्	गन्तव्यः	गमनीयः
गर्ज्	गर्जितव्यः	गर्जनीयः
गर्ह्	गर्हितव्यः	गर्हणीयः
गोप्	गोपितव्यः	गोपनीयः
गै	गातव्यः	गानीयः
ग्रस्	ग्रसितव्यः	ग्रसनीयः
घट्	घटितव्यः	घटनीयः
दोष्	दोषयितव्यः	दोषणीय
चि	चेतव्यः	चयनीयः
चिन्त	चिन्तयितव्यः	चिन्तनीयः
चुर्	चोरयितव्यः	चोरणीयः
चेष्ट्	चेष्टितव्यः	चेष्टनीयः
छिद्	छेतव्यः	छेदनीयः
जन्	जनितव्यः	जननीयः
जप्	जपितव्यः	जपनीयः
जल्प्	जल्पितव्यः	जल्पनीयः
जीव	जीवितव्य	जीवनीयः
जागृ	जागरितव्यः	जागरणीयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जि	जेतव्य:	जयनीय:
ज्ञा	ज्ञातव्य:	ज्ञानीय:
तड्	ताडयितव्य:	ताडनीय:
तनु	तनितव्य:	तननीय:
तप्	तप्तव्य:	तपनीय:
तुल्	तोलयितव्य:	तोलनीय:
तुष्	तोष्टव्य:	तोषनीय:
तृ	तरितव्य:	तरणीय:
त्यज्	त्यक्तव्य:	त्यजनीय:
त्रै	त्रातव्य:	त्राणीय:
दण्ड्	दण्डयितव्य:	दण्डनीय:
दल् (दलना)	दलितव्य:	दलनीय:
दह्	दग्धव्य:	दहनीय:
दा	दातव्य:	दानीय:
दीप्	दीपितव्य:	दीपनीय:
दुह्	दोग्धव्य:	दोहनीय:
आ+दृ	आदर्तव्य:	आदरणीय:
दृश्	द्रष्टव्य:	दर्शनीय:
द्विष्	द्वेष्टव्य:	द्वेषणीय:
धा	धातव्य:	धातीय:
धाव् (भागना)	धावितव्य:	धावनीय:
ध्यै	धातव्य:	ध्यानीय:
नम्	नन्तव्य:	नमनीय:
नश्	नष्टव्य:, नशितव्य:	नृशनीय:
निन्द्	निन्दितव्य:	निन्दनीय:
नी	नेतव्य:	नयनीय:
नृत्	नर्तितव्य:	नर्तनीय:
पच्	पक्तव्य:	पचनीय:
पठ्	पठितव्य:	पठनीय:
पा (रक्षा)	पातव्य:	पानीय:
पा (पीना)	पातव्य:	पानीय:
पिष्	पेष्टव्य:	पेषणीय:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पीड्	पिडयितव्यः	पीडनीयः
पू	पवितव्यः	पवनीयः
पूज्	पूजयितव्यः	पूजनीयः
पृच्छ्	प्रष्टव्यः	प्रच्छनीयः
फल्	फलितव्यः	फलनीयः
बुध् (जागना)	बोद्धव्यः	बोधनीयः
बुध् (जानना)	बोधितव्यः	बोधनीयः
ब्रु	वक्तव्यः	वचनीयः
भक्ष्	भक्षयितव्यः	भक्षनीयः
भज्	भक्तव्यः	भजनीयः
भञ्ज्	भङ्क्तव्यः	भञ्जनीयः
भा	भातव्यः	भानीयः
भाष्	भाषितव्यः	भाषणीयः
भिक्ष्	भिक्षितव्यः	भिक्षणीयः
भिद्	भेत्तव्यः	भेदनीयः
भी	भेतव्यः	भयनीयः
भुज्	भोक्तव्यः	भोजनीयः
भू	भवितव्यः	भवनीयः
भूष्	भूषयितव्यः	भूषणीयः
भृ	भर्तव्यः	भरणीयः
भ्रम्	भ्रमितव्यः	भ्रमणीयः
मन् (मानना)	मन्तव्यः	मननीयः
मस्ज् (गोता)	मङ्तव्यः	मज्जनीयः
मा नापना	मातव्यः	मानीयः
मार्ग्	मार्गयितव्यः	मार्गणीयः
मिल्	मेलितव्यः	मेलनीयः
मील्	मीलितव्यः	मीलनीयः
मुच्	मोक्तव्यः	मोचनीयः
मुद्	मोदितव्यः	मोदनीयः
मृज्	मार्जितव्यः	मार्जनीयः
मृष्	मर्षितव्यः	मर्षणीयः
म्लै	म्लातव्यः	म्लानीयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यज्	यष्टव्य:	यजनीय:
यत्	यतितव्य:	यतनीय:
या	यातव्य:	यानीय:
याच्	याचितव्य:	याचनीय:
युध्	योद्धव्य:	योधनीय:
रच्	रचयितव्य:	रचनीय:
आ+रम्	आरब्धव्य:	आरम्भणीय:
रम् क्रीड़ा	रन्तव्य:	रमणीय:
रुच्	रोचितव्य:	रोचनीय:
रुद्	रोदितव्य:	रोदनीय:
रुध्	रोद्धव्य:	रोधनीय:
रुह्	रोढव्य:	रोहणीय:
लभ्	लब्धव्य:	लम्भनीय:
लष्	लषितव्य:	लषणीय:
लिख्	लेखितव्य:	लेखनीय:
लिह्	लेढव्य:	लेहनीय:
लू	लवितव्य:	लवनीय:
अव+लोक्	अवलोकितव्य:	अवलोकनीय:
आ+लोच्	आलोचितव्य:	आलोचनीय:
वद्	वदितव्य:	वदनीय:
वन्द्	वन्दितव्य:	वन्दनीय:
वप्	वप्तव्य:	वपनीय:
वम्	वमितव्य:	वमनीय:
वर्ण	वर्णयितव्य:	वर्णनीय:
वस्	वस्तव्य:	वसनीय:
वह्	वोढव्य:	वहनीय:
वाञ्छ्	वाञ्छितव्य:	वाञ्छनीय:
विद्	वेदितव्य:	वेदनीय:
विद् (पाना)	वेत्तव्य:	वेदनीय:
प्रविश्	प्रवेष्टव्य:	प्रवेशनीय:
वृञ् वरणे	वरीतव्य: वर्णतव्य:	वरणीय:
वृत्	वर्तितव्य:	वर्तनीय:
वृध्	वर्धितव्य:	वर्धनीय:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्रज्	व्रजितव्यः	व्रजनीयः
व्रश्च (काटना)	व्रश्चितव्यः	व्रश्चनीयः
शंक	शङ्कितव्यः	शङ्कनीयः
प्र+शंस्	प्रशंसितव्यः	प्रशंसनीयः
शास्	शासितव्यः	शासनीयः
शिक्ष्	शिक्षितव्यः	शिक्षणीयः
शी	शयितव्यः	शयनीयः
शुच्	शोचितव्यः	शोचनीयः
शुभ् शोभा पाना	शोभितव्यः	शोभनीयः
आ+श्रि	आश्रयितव्यः	आश्रयणीयः
श्रु	श्रोतव्यः	श्रवणीयः
श्लाघ्	श्लाघितव्यः	श्लाघनीयः
श्वस्	श्वसितव्यः	श्वसनीयः
सह्	सहितव्यः सोढव्यः	सहनीयः
सिच्	सेक्तव्यः	सेचनीयः
सृ (जाना)	सर्तव्यः	सरणीयः
सृज् (छोड़ना, पैदा करना)	स्रष्टव्यः	सर्जनीयः
सेव्	सेवितव्यः	सेवनीयः
स्तु	स्तोतव्यः	स्तवनीयः
स्था	स्थातव्यः	स्थानीयः
स्मृ	स्मर्त्तव्यः	स्मरणीयः
स्वप्	स्वप्तव्यः	स्वपनीयः
हन्	हन्तव्यः	हननीयः
हस्	हसितव्यः	हसनीयः
हा	हातव्यः	हानीयः
हिंस्	हिंसितव्यः	हिंसनीयः
हु	होतव्यः	हवनीयः
हृ	हर्तव्यः	हरणीयः
ह्री (लजाना)	ह्रेतव्यः	ह्रयणीयः
आह्व	आह्वीतव्यः	आह्वनीयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत् प्रत्यय

धातु से यत् प्रत्यय के रूप निम्नलिखित स्वरूप में होते हैं :–

धातु	यत्	तव्य	अनीयर्
पा	पेयः	पातव्यः	पानीयः
स्था	स्थेयः	स्थातव्यः	स्थानीयः
चि	चेयः	चेतव्यः	चयनीय
नी	नेयः	नेतव्यः	नयनीयः
ल	लव्यः	लवितव्यः	लवनीयः
गै	गेयः	गातव्यः	गानीयः
शी	शय्यः	शय्तव्यः	शयनीयः
लभ्	लभ्यः	लब्धव्यः	लम्भनीयः
गम्	गम्यः	गन्तव्यः	गमनीयः
शक्	शक्यः	शक्तव्यः	शकनीयः
सह्	सह्यः	सहितव्यः सोढव्यः	सहनीयः
गद्	गद्यः	गदितव्यः	गदनीयः
चर्	चर्यः	चरितव्यः	चरणीयः
चुर्	चोर्यः	चोरितव्यः	चोरणीयः
चिन्त	चिन्त्यः	चिन्तितव्यः	चिन्तनीयः
कारि	कार्यः	कारितव्यः	कारणीय
जिज्ञास्	जिज्ञास्यः	जिज्ञासितव्यः	जिज्ञासनीयः
पाठि	पाठ्यः	पाठितव्यः	पाठनीयः

इन प्रत्ययों से बने शब्दों के स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग के भी रूप बनते हैं । जैसे–

लभ्यः	लभ्या	लभ्यम्
लब्धव्यः	लब्धव्या	लब्धव्यम्
गम्यः	गन्तव्या	गन्तव्यम्
शक्यः	शक्या	शक्यम्
कृत्यः	कृत्या	कृत्यम्
कर्त्तव्यः	कर्त्तव्या	कर्तव्यम्
करणीयः	करणीया	करणीयम्
हार्यः	हार्या	हार्यम्
हर्त्तव्यः	हर्त्तव्या	हर्त्तव्यम्
हरणीयः	हरणीया	हरणीयम्

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय १०

तद्धित

'तद्धित' (तत् + हित) शब्द का अर्थ है ऐसे प्रत्यय जो भिन्न-भिन्न प्रयोगों में काय आ सके ।

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण आदि शब्दों के अन्त में विशेष अर्थबोधक कुछ प्रत्यय होते हैं । वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं । ये प्रत्यय अनेक प्रकार के होते हैं । उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

अपत्य अर्थबोधक प्रत्यय

अण् = अ - वसुदेवस्य अपत्यम् वासुदेवः

यञ् = य - गर्गस्य अपत्यम् गार्ग्य : जमदग्नस्य अपत्यं जामदग्न्यः

इञ् + श्र - दशरथस्य अपत्यं दाशरथिः, शूरस्य अपत्यम् शौरिः ।

ढक् = एय - गङ्गायाः अपत्यम् गाङ्गेयः । राधायाः अपत्यम् राधेयः ।

यथार्थबोधक प्रत्यय

ता = (स्त्रीलिङ्ग) = प्रभोर्भावः = प्रभुता, इसी प्रकार साधुता, पशुता ।

त्व = (नपुंसक लिङ्ग) = प्रभुत्व, साधुत्व, पशुत्व, निर्दयत्व आदि ।

भावार्थबोधक प्रत्यय

इमन् - मा = शुक्लस्य भावः शुक्लिमा ।

तल + ता = शुक्लस्य भावः शुक्लता ।

त्व - शुक्लस्य भावः शुक्लत्व ।

ण- गुरोर्भावः गौरवम् ।

मतुप् प्रत्यय

'जिसमें है' इस अर्थ में मतुप् प्रत्यय लगता है ।

मतुप् := मत् = श्री अस्य अस्तीति श्रीमत् = श्रीमान् । इसी प्रकार बुद्धिमान्, मतिमान् ।

नोट–जिस शब्द के अन्त में अ, आ वर्ण होता है उसके मत् का न् हो जाता है । जैसे–धनमस्तीति धनवान् इसी प्रकार पुण्यवान्, गुणवान्, विद्यावान्, दयावान् आदि ।

सादृश्यबोधक वतिप् प्रत्यय

वतिप् में वत् शेष हो कर लगता है । जैसे–हिमवत्, पुत्रवत्, मातृवत्, लोष्ठवत्, आत्मवत् आदि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन् प्रत्यय

जिसका अथवा जिसमें के अर्थ से अ वर्ण वाले शब्द में इन् प्रत्यय लगता है। जैसे-ज्ञानमस्तीति ज्ञानी। इसी प्रकार धनी-गुणी आदि।

तर (ईयस्) प्रत्यय

दो में से एक को बड़ा बताने में तर् प्रत्यय लगता है। जैसे–दृढ़ से दृढ़तर इसका अर्थ है जो दो में एक दूसरे की अपेक्षा अधिक दृढ़ हो, इसी अर्थ में ईयस् प्रत्यय भी लगता है। जैसे–गरीयान्, लघीयान् आदि।

तम् (इष्टन्)

अनेकों में से एक को सबसे अधिक उत्कर्ष बताने के लिए तम और इष्टन् का प्रयोग किया जाता है। जैसे–दृढतमः, लघुतमः, वरिष्ठः, कनिष्ठः आदि।

तुलनात्मक

शब्द	दो में से अधिक	बहुतों में से अधिक
पटु	पटुतरः, पटीयान्	पटिष्ठः, पटुतमः
लघु	लघुतरः, लघीयान्	लघिष्ठः, लघुत्तमः
स्थूल	स्थूलतरः, स्थूलीयान्	स्थविष्ठः, स्थूलतमः
दूर	दूरतरः, दवीयान्	दविष्ठः दूरतमः
युवन्	युवतरः, कनीयान्	कनिष्ठः, युवतमः
ह्रस्व	ह्रस्वतरः, ह्रसीयान्	ह्रसिष्ठः, ह्रस्वतमः
क्षिप्र	क्षिप्रतरः, क्षेपीयान्	क्षेपिष्ठः, क्षिप्रतमः
क्षुद्र	क्षुद्रतरः, क्षोदीयान्	क्षोदिष्ठः, क्षुद्रतमः
प्रिय	प्रियतरः, प्रेयान्	प्रेष्ठः, प्रियतमः
बहु	बहुतरः, भूयान्	भूयिष्ठः, बहुतमः
स्थिर	स्थिरतरः, स्थेयान्	स्थेष्ठः, स्थिरतमः
उरु	उरुतरः, वरीयान्	वरिष्ठः, उरुतमः
बहुल	बहुलतरः, बंहियान्	बंहिष्ठः, बहुलतमः
गुरु	गुरुतरः, गरीयान्	गरिष्ठः, गुरुतमः
वृद्ध	वृद्धतरः, वर्षीयान्	वर्षिष्ठः, वृद्धतमः
दीर्घ	दीर्घतरः, द्राघीयान्	द्राघिष्ठः दीर्घतमः
प्रशस्य	प्रशस्यतरः, श्रेयान्, ज्यायान्	श्रेष्ठः, ज्येष्ठः,प्रशस्यतमः
अन्तिक	अन्तिकतरः, नेदीयान्	नेदिष्ठः, अन्तिकतमः
साधु	साधुतरः, साधीयान्	साधिष्ठः, साधुतमः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अल्प	अल्पतरः, अल्पीयान्	अल्पिष्ठः, अल्पतमः
कृशः	कृशतरः, क्रशीयान्	क्रशिष्टः, कृशतमः
पचति	पचतितराम्	पचतितमाम्
दर्शनीयः	दर्शनीयतरः	दर्शनीयतमः

तद्धित

ण्वुल् = अक

धातु	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पच्	पाचकः	पाचिका	पाचकम्
भिद्	भेदकः	भेदिका	भेदकम्
भुज्	भोजकः	भोजिका	भोजकम्
वृध्	वर्धकः	वर्धिका	वर्धकम्
सेव्	सेवकः	सेविका	सेवकम्
चि	चायकः	चायिका	चायकम्
स्तु	स्तावकः	स्ताविका	स्तावकम्
लू	लावकः	लाविका	लावकम्
कृ	कारकः	कारिका	कारकम्
जृ	जारकः	जारिका	जारकम्
स्था	स्थापकः	स्थापिका	स्थापकम्
पा	पावकः (ना)	पाविका	पावकम्
गा	गायकः	गायिका	गायकम्
दा (णिच्)	दायकः	दायिका	दायकम्
पा (णिच्)	पायकः (पिलाना)	पायिका	पायिकम्

मयट् प्रत्यय

व्याप्ति सूचक अर्थ में मयट् प्रत्यय लगता है। इसका 'मय़' शेष रह जाता है। जैसे–स्वर्णस्य विकारः स्वर्णमयः, स्वर्णमयी। इसी प्रकार मृन्मयः मृन्मयी आदि।

ठञ् प्रत्यय

कालवाची शब्दों के अन्त में ठञ् प्रत्यय लगता है। ठञ् का 'इक' हो जाता है। जैसे–मास से मासिकः, वर्ष से वार्षिकः आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय ११

शब्दों के लिङ्ग का निर्णय

संस्कृत में पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं। कौन शब्द का कौन लिङ्ग है ? इसका निर्णय संस्कृत के कोश को देख कर करना चाहिये। कुछ प्रसिद्ध नियम निम्नलिखित हैं :–

पुँल्लिङ्ग –

१. स्वर्गवाचक शब्द, विशेषतः पुँल्लिङ्ग होते हैं। जैसे–स्वर्ग, नाक, त्रिदिव।
२. यज्ञवाचक जैसे–याज्ञः, यज्ञः क्रतुः।
३. पर्वतवाचक शब्द जैसे–पर्वतः, अद्रिः, गिरिः।
४. मेघवाचक शब्द जैसे–मेघः, घनः, जलदः,
५. समुद्रवाचक शब्द जैसे–समुद्रः, सागरः, रत्नाकरः।
६. वृक्षवाचक शब्द जैसे–द्रुमः, वृक्षः, तरुः।
७. कालवाचक शब्द जैसे–कालः, समयः, मासः। किन्तु दिनम्, वर्षम् छोड़ कर।
८. तलवारवाचक शब्द जैसे–असिः, खड्गः, करवालः, कृपाणः।
९. बाणवाचक शब्द जैसे–शरः, बाणः, शायकः।
१०. अङ्गवाचक शब्द जैसे–करः, पाणि, हस्तः, दन्तः, कपोलः, ओष्ठः, कण्ठः।
११. तद्धित के कुछ प्रत्ययान्त शब्द गरिमा, लघिमा, पाकः, त्यागः, रागः आदि।

स्त्रीलिङ्ग –

१. अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से, आ जोड़ कर, जैसे–अजा, स्थिरा, प्रबला, अश्वा।
२. मत् या वत् शब्दों के अन्त वाले शब्द–बुद्धिमती, गुणवती, बलवती, विद्यावती।
३. शतृ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग–गच्छत् से गच्छन्ती, पतत् से पतन्ती।
४. पुँलिङ्ग अकारान्त शब्दों में 'ई' लगा कर भी बनता है। गौर से गौरी, कुमार से कुमारी, ब्राह्मणी, महिषी, राक्षसी, गोपी आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. ऋकारान्त शब्दों के अन्त में 'ई' होता है। जैसे–कर्ता से कर्त्री, धाता से धात्री, सविता से सावित्री।

६. बहुव्रीहि समास के अङ्गवाचक शब्दों में। जैसे–सुमुखी, कृशाङ्गी, बिम्बोष्ठी आदि।

७. 'इन्' अन्त वाले शब्दों में 'ई' लगा कर जैसे–कमलिन् से कमलिनी, मालिन् से मालिनी, मनोहारिन् से मनोहारिणी आदि।

८. ह्रस्व उकारान्त शब्दों में 'ई'कार विकल्प से, जैसे–मृदु से मृद्वी, मृदुः। साधु से साध्वी, साधुः, लघु से लघ्वी, लघुः गुरु से गुर्वी, गुरुः। यदि शब्द के अन्त में 'क' रहे तो पूर्व अक्षर में 'इ' लगता है। जैसे–कारिका, मूषिका इत्यादि।

नपुंसकलिङ्ग –

नीचे लिखे अर्थ को बताने वाले शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

१. लवणम्, सैन्धवम्।
२. अम्बुजम्, कमलम्, उत्पलम्, कुमुदम्।
३. व्योम, गगनम्, आकाशम्।
४. अरण्यम्, विपिनम्, काननम्, वनम्।
५. पर्वम्, पत्रम्, दलम्।
६. विलम्, रन्ध्रम्, छिद्रम्।
७. हिमम्, तुहिनम् (नीहारः तुषारः नहीं)
८. उदकम्, सलिलम्, जलम्, नीरम्।
९. फलम्, पनसम्, आम्रम्
१०. इन्द्रियम्, नयनम्, लोचनम्, नेत्रम्,
११. हेम, हेमम्, स्वर्णम्, काञ्चनम्।
१२. लोहम्, अयम्, रजसम्, ताम्रम्।
१३. सुखम्, शर्म, दुःखम्, कष्टम्।
१४. शुभम्, कल्याणम्, भद्रम्, मङ्गलम्, अशुभम्।
१५. भाववाचकत्व जैसे–गुरुत्वम्।

अन्य शब्द हैं–जैसे—गौरवम्, धैर्यम्, गमनम्, पठनम्, स्वागतम्, जीवितम्, कर्त्तव्यम्, करणीयम् आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय १२

कारक

जब हम कोई वाक्य बोलते हैं तो उसमें कोई क्रिया अवश्य रहती है। जैसे–बालकः गच्छति। शुकः फलं खादति। इनमें गच्छति = जाता है। खादति = खाता है। ये क्रियायें हैं। क्रिया के कई कारण होते हैं। उनके होने से ही क्रिया संभव होती है। क्रिया के उन कारणों को 'कारक' कहते हैं। कारक सात प्रकार के होते हैं :–

कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध और अधिकरण।

कर्त्ता को सूचित करने के लिये प्रथमा, कर्म के लिये द्वितीया, करण के लिए तृतीया, सम्प्रदान के लिए चतुर्थी, अपादान के लिये पंचमी, सम्बन्ध के लिये षष्ठी और अधिकरण में सप्तमी इस प्रकार विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है। किसी को सम्बोधित करने के लिये सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

वचन –

कर्त्ता, कर्म आदि एक, दो और दो से अधिक भी हो सकते हैं। एक को कहने के लिए एकवचन, दो के लिए द्विवचन और बहुत के कहने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। इनको सूचित करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है–उनको प्रत्यय कहते हैं।

जैसे–

कारक	विभक्तिनाम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्त्ता	प्रथमा	:	औ	अः
कर्म	द्वितीया	अम्	औ	अः
करण	तृतीया	आ	भ्याम्	भिः
सम्प्रदान	चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यः
अपादान	पञ्चमी	अः	भ्याम्	भ्यम्
सम्बन्ध	षष्ठी	अः	ओः	आम्
अधिकरण	सप्तमी	इ	ओः	सु
सम्बोधन	प्रथमा	:	औ	अः

इन सात विभक्तियों में प्रत्येक के तीन वचन होने से सामान्य रूप से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शब्द के साथ इन २१ प्रत्ययों के लगने से २१ रूप होते हैं।

जैसे– बालक शब्द के रूप इस प्रकार होंगे।

प्रथमा	बालक:	बालकौ	बालका:
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकै:
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
पंचमी	बालकात्-द्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक	हे बालकौ	हे बालका:

कारकों की परिभाषा

कर्त्ता–जिसका क्रिया से सीधा सम्बन्ध रहता है, उसको कर्त्ता कहते हैं। जैसे–राम:पुस्तकम् पठति। इस वाक्य में पठति क्रिया से राम का सीधा सम्बन्ध है। वह क्रिया के करने में स्वतन्त्र है। इसलिए राम कर्त्ता है। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसलिए 'राम:' में प्रथमा विभक्ति हुई है।

कर्म–क्रिया के करने में कर्त्ता का जो इष्टतम पदार्थ है उसको कर्म कहते हैं। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि जिसके ऊपर क्रिया का फल पड़ता है उसे कर्म कहते हैं।

जैसे–राम: पुस्तकम् पठति। इस वाक्य में कर्त्ता राम को सबसे इष्ट पदार्थ पुस्तक है। उसी पर पठति क्रिया का फल भी पड़ता है। अत: 'पुस्तकम्' कर्म है।

करण–क्रिया की सिद्धि में जो वस्तु कर्त्ता को सबसे अधिक सहायक होती है उसको करण कहते हैं।

जैसे–राम: बाणेन राक्षसं हन्ति। इस वाक्य में मारने में सहायक 'बाण' ही कर्त्ता का सबसे अधिक सहायक है। अत: बाण करणकारक है और उसमें तृतीया विभक्ति हुई।

सम्प्रदान–जिसको लक्ष्य में रख कर कोई क्रिया की जाती है या कोई वस्तु दी जाती है उसे सम्प्रदान कहते हैं।

जैसे–माता बालकाय दुग्धं ददाति। इस वाक्य में बालक को दूध दिया जाता है। इसलिए बालक सम्प्रदान कारक है और उसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।

अपादान–किसी वस्तु के दूसरी वस्तु से अलग होने की क्रिया में जो वस्तु स्थिर रहती है उसे अपादान कहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–श्यामः वृक्षात् पतति । यहाँ श्याम वृक्ष से अलग होता है । इस लिए वृक्ष अपादान है । उसमें पञ्चमी विभक्ति हुई ।

सम्बन्ध–जिस शब्द का क्रिया से सीधा सम्बन्ध न हो किन्तु अन्य किसी सम्बन्ध को सूचित करे वह कारक न हो कर केवल सम्बन्ध बतलाता है । इसको सम्बन्ध कारक कहते हैं । जैसे–देवदत्तस्य पुत्रः सोमदत्तः गच्छतिं । इस वाक्य में देवदत्त का गच्छति क्रिया (जाने से) कोई सम्बंध नहीं है किन्तु जाने वाले से देवदत्त का सम्बन्ध है । इसलिये सम्बन्ध सूचक देवदत्त में षष्ठी विभक्ति हुई ।

सप्तमी–जो क्रिया का आधार हो उसको 'अधिकरण' कहते हैं ।

जैसे–वृक्षे पुष्पाणि सन्ति । इस वाक्य में पुष्पों का आधार वृक्ष है । इसलिये 'वृक्ष' अधिकरण है । उसमें सप्तमी विभक्ति हुई ।

सम्बोधन–किसी को सम्बोधित करने में सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है । जैसे–हे देवदत्त ! इह आगच्छ ।

यहाँ देवदत्त में प्रथमा विभक्ति हुई जिसमें विसर्ग का लोप हो गया है । सम्बोधन की अलग कोई विभक्ति नहीं होती ।

विभक्तियों का उपयोग

प्रथमा आदि विभक्तियों के लगाने के सम्बन्ध में व्याकरण में विस्तार से नियम दिये गये हैं । संस्कृत भाषा में अनुवाद करने, लिखने और बोलने में इन नियमों में से कुछ खास-खास नियमों का जानना आवश्यक है । वे यहाँ दिये जा रहे हैं ।

प्रथमा विभक्ति

कर्त्ता और सम्बोधन में प्रथमा होती है । इसके अतिरिक्त निम्नलिखित में प्रथमा होती है ।

प्रातिपदिक ! (सत्ता) मात्र में- जैसे–घटः, गौः, रामः, उच्चैः आदि ।

लिङ्गमात्र में–फलम्, लता, पुरुष आदि ।

परिमाण मात्र में–द्रोणः, आढकम् ।

वचन मात्र में–एकः, द्वौ, त्रयः । एकं फलम्, द्वे फले, त्रीणि फलानि ।

द्वितीया विभक्ति

(१) कर्म कारक में द्वितीया होती है । जैसे–सः ग्रामं गच्छति । बालकः पुस्तकं पठति ।

(२) गति (चलना) के अर्थ में आने वाली धातुओं के योग में द्वितीया होती है । जैसे–सः प्रयागं याति । साधुः वनं गच्छति । अहम् वनं व्रजामि । यहाँ व्रज और या धातु ज़ाने के अर्थ में होने से प्रयागं और वनं में द्वितीया हुई है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३) क्रुध और द्रुह धातु तथा उस अर्थ में आने वाली धातुओं में यदि उपसर्ग लगा हो तो जिसके प्रति क्रोध या द्रोह किया जाय उसमें द्वितीया विभक्ति होती है । जैसे–स: महेन्द्रम् अभिक्रुध्यति ! मोहन: पितरम् अभिद्रुह्यति ।

(४) शीङ् (शयन करना), स्था (ठहरना) आस् (बैठना) इन धातुओं के साथ अधि उपसर्ग लगने पर इन क्रियाओं के आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–स: पर्यङ्कम् अधिशेते । वह पलंग पर सोता है । यहाँ पर्यङ्के आधार है। अत: पर्यङ्के न हो कर पर्यङ्कम् हुआ है । इसी प्रकार अहम् ग्रामम् अधितिष्ठामि । मैं गाँव में ठहरता हूँ। अध्यापक: आसन्दीम् अध्यास्ते । अध्यापक कुर्सी पर बैठता है।

(५) उप, अनु, नि, आङ् उपसर्ग लगने पर वस् धातु की क्रियाओं के साथ आधार में द्वितीया होती है ।

जैसे–स: गुहाम् अभिनिविशते । वह गुफा में घुसता है ।

ऋषि: पर्वतम् उपविशति । गुरु: गुरुकुलं आवसति ।

(६) उभयत:, सर्वत:, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽध: तथा अध्यधि शब्दों के योग में द्वितीया होती है ।

जैसे– ग्रामम् उभयत: नदी अस्ति । गाँव के दोनों ओर नदी है ।

लङ्काम् अभित: समुद्र: अस्ति । लंका के चारों ओर समुद्र है ।

धिक् त्वाम् । तुमको धिक्कार है ।

उपर्युपरि लोकं हरि: । हरि सब लोकों से ऊपर हैं ।

तपस्विन: अधोऽध: वृक्षान् शेरते । तपस्वी पेड़ों के नीचे सोते हैं ।

अध्यधि मेघान् वायुयानानि उड्डीयन्ते । बादलों के ऊपर विमान उड़ते हैं ।

(७) अभित:, परित:, समया, निकषा, हा, प्रति के योग में द्वितीया होती है।

जैसे–नगरम् अभित: पर्वता: सन्ति । पृथ्वीं परित: वायुमण्डलम् अस्ति । विद्यालयं निकषा क्रीडास्थलम् अस्ति । हा! सीते इति कृत्वा राम: रुरोद । विद्यालयं समया चिकित्सालय: अस्ति । रामम् प्रति भक्तिं कुरु ।

(८) बिना और अन्तरा एवं अन्तरेण (बीच के अर्थबोधक) के साथ द्वितीया विभक्ति होती है ।

जैसे–अन्तरा त्वाम् माम् परमेश्वर: अस्ति । पुत्रम् बिना मुक्तिर्न भवति ।

(९) यदि अत्यन्त संयोग की प्रतीति हो तो कालवाची और मार्गवाची शब्दों से द्वितीया विभक्ति होती है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–स: मासं दधि खादति । वह महीने भर दही खाता है । यहाँ लगातार दही खाने की क्रिया मास भर होने से मास शब्द में द्वितीया हुई है ।

इसी प्रकार स: क्रोशं धावति । यहाँ क्रोश मार्गवाची है । अत: उसमें द्वितीया हुई है ।

द्विकर्मक क्रियाएँ

(१) कुछ वाक्यों में दो कर्म होते हैं । उनमें से एक प्रधान कर्म होता है और दूसरा गौण या अप्रधान कर्म ।

दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ (पूछना), चि (इकट्ठा करना), ब्रू (बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (चुराना), नी (ले जाना), हृ (हरना), कृष् (खींचना) वह् (ढोना) ये धातुएँ और इनके समान अर्थ रखने वाली धातुएँ द्विकर्मक होती है । जैसे–श्याम: गां पय: दोग्धि । श्याम गाय से दूध दुहता है ।

यहाँ दोग्धि का अर्थात् दुहने का सम्बन्ध दुग्ध (दूध) से है । वह प्रधान कर्म है । उस दूध का सम्बन्ध गाय से है । वह अप्रधान कर्म है । सामान्य रूप से गो शब्द में पञ्चमी होनी चाहिये । गो: पय: दोग्धि । गाय से दूध दुहता है । किन्तु इस नियम के अनुसार गो पञ्चमी के स्थान पर गो: में द्वितीय होगी क्योंकि यह धातु द्विकर्मक है । अत: शुद्ध वाक्य हुआ–स: गां पय: दोग्धि ।

इसी प्रकार अन्य क्रियाओं के साथ भी होगा ।

बलिं याचते वसुधाम् में बले: के स्थान पर बलिं ।

ग्रामम् अजां नयति में ग्रामे के स्थान पर ग्रामं ।

(२) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने की प्रेरणा देता है तो वह क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया होती है । उसके प्रेरक कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और जिसको प्रेरित किया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है किन्तु कर्म में अन्तर नहीं पड़ता है ।

जैसे–राम: वनं गच्छति । कैकयी तं प्रेरयति । अत: कैकयी रामेण वनं गमयति ।

पूर्व स्थिति	प्रेरणार्थ स्थिति
बालक: पुस्तकं पठति	गुरु: बालकेन पुस्तकम् पाठयति
श्याम: पाठशालाम् गच्छति	पिता श्यामेन पाठशालां गमयति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीया विभक्ति

करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे–सः लेखन्या पत्रम् लिखति। वह कलम से पत्र लिखता है।

अन्य नियम

१. भाववाच्य और कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृतीया होती है। जैसे :–
बालकः पुस्तकं पठति = बालकेन पुस्तकम् पठ्यते (कर्मवाच्य)
अमितः स्वपिति = अमितेन स्वप्यते (भाववाच्य)

२. हेतु में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे :–
धनेन कुलम् वर्धते। विद्यया विनयम् आयाति।

३. सह (साथ) और तुल्य (बराबर) के अर्थ में जो शब्द होते हैं उनके साथ तृतीया विभक्ति होती है। जैसे :–
सः गुरुणा सह आगच्छति। देवदत्तः तेन साकं प्रयागं गमिष्यति। अर्जुनेन तुल्यः धनुर्धरः दुर्लभः अस्ति। रामेण सदृशः रामः एव अस्ति। गान्धिना तुल्यः अहिंसावादी कोऽपि नास्ति।

४. जिस अङ्ग से अङ्गधारी का विकार मालूम हो उस अङ्गवाची शब्द में तृतीया होती है।
जैसे–अक्ष्णा काणः। कर्णेन बधिरः। शिरसा खल्वाटः। पादेन खञ्जः।

५. शपथ खाने के अर्थ में आनेवाली धातुओं के अर्थ की योग हो तो यह जिसकी शपथ खाई जाय उस शब्द में तृतीया होती है।
जैसे–अहम् प्राणैः शपामि।

६. पृथक्, विना और नाना शब्द के योग में विकल्प से तृतीया होती है।
जैसे–सः तेन खलेन पृथक् भूत्वा सुखम् प्राप्स्यति।
नयनेन विना जगत् शून्यम् अस्ति।

७. जिस दिशा या मार्ग से कहीं जाया जाता है वह भी तृतीया में होता है। जैसे :–सः केन मार्गेण प्रयागम् अगच्छत्।

८. जिस वस्तु से कोई पहिचाना जाय उस शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–जटाभिः तापसः प्रतिभाति। काषायवस्त्रैः सन्यासी। यज्ञोपवीतेन द्विजः।

९. जिस वस्तु पर कोई वस्तु ढोई (ले जाई) जाती है उसमें तृतीया होती है। जैसे–भृत्यः पृष्ठेन भारं वहति। हनुमान् रामम् स्कन्धेन अवहत्।

१०. जिस दाम में कोई वस्तु खरीदी जाती है उसमें तृतीया होती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–मया दशभिः रुप्यकैः इदम् पुस्तकम् क्रीतम् ।

चतुर्थी विभक्ति

जिसको कोई वस्तु दी जाय या जिसके लिए कोई कार्य किया जाय उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं । सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है । जैसे–सः बालकाय मोदकम् ददाति । वह बालक के लिए लड्डू देता है ।

१. रुचि अर्थ (अच्छा लगना) के अर्थ में आनेवाली धातुओं के प्रयोग में जिसको कोई वस्तु अच्छी लगती है उस प्राणी में चतुर्थी विभक्ति होती है ।

जैसे–गणेशाय मोदकाः रोचन्ते । गणेश को लड्डू अच्छे लगते हैं ।

२. क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या और असूया के अर्थ वाली धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाता है, उसको सम्प्रदान मान कर चतुर्थी होती है । जैसे–नृपः दुष्टेभ्यः कुध्यति । ते सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति । सः मह्यम् अकुप्यत् । मूर्खाः पण्डितेभ्यः ईर्ष्यन्ति ।

३. तुमुन् प्रत्यय के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द के समान अर्थ वाले भाववाचक शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है ।

जैसे–गोदोहनाय गच्छति (मां दोग्धुं गच्छति) ।

४. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् के योग में अन्य शब्द में चतुर्थी होती है ।

जैसे–गुरवे नमः । भवते स्वस्ति । सूर्याय स्वाहा । पितृभ्यः स्वधा । अग्नये वषट् । गामा एभ्यः मल्लेभ्यः अलम् ।

५. तादर्थ्य अर्थात् जिस प्रयोजन के लिये कोई काम किया जाय उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है ।

जैसे–मुक्तये शिवं भजति । मुक्ति के लिए शिव की सेवा करता है ।

यूपाय दारु आनय । यज्ञ के खम्भ के लिए लकड़ी लाओ ।

शिशुः दुग्धाय रोदिति । शिशु दूध के लिए रोता है ।

६. आशीर्वाद के अर्थ में भद्र, कुशल, सुख और हित शब्द आवे तो इनके साथ वाले शब्द में चतुर्थी होती है तथा विकल्प से षष्ठी भी होती है ।

जैसे–युष्मभ्यं कुशलं भूयात् ।
युष्माकं कुशलं भूयात् ।
तेभ्यः सुखं भवतु ।
तेषां सुखं भवतु ।

पञ्चमी विभक्ति

दूर होने की क्रिया में जो स्थिर (ध्रुव) रहती है उसको अपादान कहते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे–राम अश्वात् पतति । राम घोड़े से गिरता है । वृक्षात् पर्णानि पतन्ति । पेड़ से पत्ते गिरते हैं । इन उदाहरणों में घोड़े से राम का और वृक्ष से पत्तों का अलग होना पाया जाता है । अतः उनमें पञ्चमी हुई ।

१. भय और रक्षा के अर्थ में आनेवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे भय मालूम हो या जिससे डर से रक्षा करनी हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है ।

जैसे–रमेशः सिंहात् बिभेति । रमेश सिंह से डरता है ।

यष्टिका कुक्कुरेभ्यः रक्षति । छड़ी कुत्तों से रक्षा करती है ।

२. जिससे कोई वारण (रोकने या मना करने) के अर्थ में जिससे कोई वस्तु या पुरुष रोका जाय उस इच्छित वस्तु में पञ्चमी विभक्ति होती है ।

जैसे–दुग्धात् मार्जारीं वारयति । दूध से बिल्ली को रोकता है ।

३. छिपने की क्रिया में जिससे छिपना हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है । जैसे–कृष्णः मातुः निलीयते । कृष्ण माता से छिपते हैं ।

अधर्मणः उत्तमर्णात् निलीयते । कर्जदार महाजन से छिपता है ।

४. नियमपूर्वक किसी से कुछ पढ़ने या सुनने की स्थिति में उस गुरु आदि में पञ्चमी होती है ।

जैसे–अहं नन्दकिशोरद्विवेदिनः ज्यौतिषम् अध्यैयि ।

मैंने नन्दकिशोर द्विवेदी से ज्यौतिष पढ़ा ।

सः अध्यापकात् संस्कृतं पठति ।

अर्जुनः इन्द्रात् दिव्यास्त्रम् शिशिक्षे ।

५. जन्म लेने की क्रिया में मूल उपादान कारण में पञ्चमी होती है ।

जैसे–गोमयात् वृश्चिकाः जायन्ते । गोबर से बिच्छू पैदा होते हैं ।

भूमेः वनस्पतयः प्ररोहन्ति । भूमि से वनस्पतियाँ उगती हैं ।

६. जिस स्थान से नदी आदि निकलती हैं उस स्थान वाच्य शब्द में पञ्चमी होती है । जैसे–हिमवतः गङ्गा प्रभवति । हिमालय से गङ्गा निकलती है ।

७. अन्य, आरात्, ॠते, इतर, इन शब्दों से युक्त शब्दों में तथा दिशावाची, शब्दों से युक्त शब्द में पञ्चमी विभक्ति होती है । जैसे–मोहनात् अन्यः श्यामः । आम्रस्य वृक्षाः ग्रामात् आरात् सन्ति ।

ऋते ज्ञानात् मुक्तिर्न भवति । वाराणसी नगरं प्रयागात् पूर्वम् अस्ति ।

षष्ठी विभक्ति

कर्त्ता आदि छः कारकों के अतिरिक्त जो शेष रहता है जिसका क्रिया की सिद्धि में कोई सहयोग नहीं रहता, ऐसे शब्दों में षष्ठी विभक्ति होती है ।

जैसे–रामस्य सेवकः देवदत्ताय मोहनस्य उद्याने आम्रवृक्षात् दण्डेन आम्रफलानि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम का नौकर देवदत्त के लिये मोहन के बाग में आम के पेड़ से डंडे द्वारा आम का फल तोड़ता है। यहाँ सेवक कर्त्ता है। आम का फल कर्म है। डंडा करण है। देवदत्त सम्प्रदान है। आम का वृक्ष अपादान है। उद्यान अधिकरण है। शेष बचा राम और मोहन। इन दोनों में षष्ठी विभक्ति होगी क्योंकि ये सेवक और उद्यान से सम्बन्ध रखते हैं। क्रिया की पूर्णता में इनका कोई सहयोग नहीं है।

इसको सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसका चिह्न वाक्य में का, की, के, रा, री, रे, ना, नी ने होता है जो सम्बन्ध प्रकट करता है।

दो या दो से अधिक संज्ञा शब्दों में अथवा सर्वनाम तथा संज्ञा शब्दों में सम्बन्ध दिखलाने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे–तस्य इदम् पुस्तकम् अस्ति। अर्जुनस्य बाणाः तीक्ष्णाः भवन्ति। आम्राणाम् फलानि शक्तिप्रदानि भवन्ति। गङ्गायाः जलम् स्वास्थ्यप्रदं भवति।

१. दक्षिणतः, उत्तरतः, परतः, उपरि, पश्चात्, पुरस्तात्, अधस्तात्, उत्तरात् इन शब्दों के प्रयोग में साथवाले शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे–भारतस्य दक्षिणतः हिन्दमहासागरः अस्ति। मम गृहस्य उत्तरतः गङ्गा अस्ति। तस्य वृक्षस्य अधः सर्पस्य बिलम् अस्ति। अस्माकम् गृहस्य उपरि एकः प्रकोष्ठः वर्तते।

२. तुलना और उपमा शब्दों के योग में षष्ठी होती है। जैसे–
गुरुभक्तेषु रामस्य तुला नास्ति।
संस्कृताध्यापकेषु ईश्वरचन्द्रविद्यासागरस्य उपमा न विद्यते।

३. वर्तमान काल में क्त प्रत्यय के प्रयोग में साथ वाले शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे-शिवः देवानां पूजितः अस्ति।

४. स्मरणार्थ धातुओं के कर्म में षष्ठी होती है।

जैसे–सः मातुः स्मरति।

५. प्रवृत्ति या भ्रान्ति अर्थवाली ज्ञा धातु के करण कारक में षष्ठी होती है।

जैसे–तक्रं घृतस्य जानीते। मट्ठे को घी समझता है।

सप्तमी विभक्ति

क्रिया के आधार रूप कारक को अधिकरण कहते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। हिन्दी में इसका चिह्न 'में' 'पर' हैं।

जैसे–सः खट्वायां शेते। वह चारपाई पर सोता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहं पाठशालायाम् पठामि । मैं पाठशाला में पढ़ता हूँ ।
तिलेषु तैलम् अस्ति । तिलों में तेल है ।
तस्य साहित्ये रुचिर्नास्ति । उसकी साहित्य में रुचि नहीं है ।

१. दूर और समीप वाची शब्दों में विकल्प से सप्तमी होती है । तस्य गृहं मम गृहस्य दूरे अस्ति । अथवा दूरं, दूरात्, दूरेण । वाराणसी प्रयागस्य अन्तिके अस्ति ।

२. जब किसी काम के पूरा होने पर दूसरे काम का होना प्रकट होता है तो पहले हुये काम में सप्तमी विभक्ति होती है । जैसे–
रमेशे गायति सर्वे अहसन् । रमेश के गाना गाने के बाद सब हँस पड़े ।
सन्ध्यां उपासीनेषु तेषु अहम् अगच्छम् । जब वे सन्ध्या कर रहे थे तब मैं आया ।
रामे वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत् । राम के वन जाने पर दशरथ ने प्राण त्याग दिया ।
इसको सति सप्तमी या भावे सप्तमी भी कहते हैं ।

३. जाति, गुण अथवा क्रिया के कारण किसी समुदाय में से उसके किसी एक अवयव को विशिष्ट बताने में विकल्प से सप्तमी होती है ।
जैसे–सर्वेषु सैनिकेषु सुरेन्द्रः वरिष्ठः वर्तते ।
कविषु कालिदासः अद्यापि श्रेष्ठोऽस्ति ।
गोषु कृष्णा गौः बहुक्षीरा भवति ।

४. साधु और असाधु शब्द के योग में साथ वाले शब्द में सप्तमी होती है ।
जैसे–रामः सज्जनेषु साधुः, दुष्टेषु च असाधुः आसीत् ।

५. जिस वस्तु की प्राप्ति के लिए किसी वस्तु को मारा जाय, काटा जाय या तोड़ा जाय उसके वाचक में सप्तमी होती है ।
जैसे–चर्मणि द्वीपिनं हन्ति । चमड़े के लिए चीते को मारता है ।
दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् । दाँतों के लिए हाथी को मारता है ।

६. प्रेम आदर और आसत्ति का भाव जिसके प्रति हो उसमें सप्तमी होती है । जैसे :–मम रामे भक्तिः अस्ति । अधर्मे रतिः न कर्त्तव्या ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय १३

अभ्यास

संस्कृत भाषा को समझने, लिखने, पढ़ने और बोलने के लिये अभ्यास की आवश्यकता है। अभ्यास के लिए इस पुस्तक में दिये गये अध्यायों को बार-बार पढ़ना चाहिये। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, अव्यय को और कृदन्त प्रत्ययों को समझना चाहिये। शब्दों की श्रेणियों के परस्पर सम्बन्धों का ताल-मेल बैठा कर छोटे-छोटे वाक्य बना कर लिखना चाहिये।

अब यहाँ पर कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

१. वाक्य रचना

वाक्य में कम से कम कर्त्ता और क्रिया का होना आवश्यक है। वाक्य में कर्त्ता के साथ एकवचन के साथ एकवचन, द्विवचन के साथ द्विवचन और बहुवचन के साथ उसी अनुसार क्रिया रखनी चाहिये।

प्रथमपुरुष में कोई व्यक्ति वाचक नाम या सर्वनाम सः तौ ते आदि का प्रयोग करना चाहिये। कालक्रम से कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

वर्तमान काल पठ् धातु

प्रथम पुरुष

बालकः पठति	एक बालक पढ़ता है।
बालकौ पठतः	दो बालक पढ़ते हैं।
बालकाः पठन्ति	बहुत से बालक पढ़ते हैं।

मध्यम पुरुष

त्वम् पठसि	तुम पढ़ते हो।
युवाम् पठथः	तुम दोनों पढ़ते हो।
यूयम् पठथ	तुम सब पढ़ते हो।

उत्तम पुरुष

अहम् पठामि	मैं पढ़ता हूँ।
आवाम् पठावः	हम दोनों पढ़ते हैं।
वयम् पठामः	हम सब पढ़ते हैं।

बालकः की जगह बालिका या कोई व्यक्तिवाचक नाम रामः आदि कर्त्ता हो सकता है किन्तु क्रिया का कोई बदलाव नहीं होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे:–बालिका पठति । बालिके पठत: । बालिका: पठन्ति ।
भवान् (आप) शब्द को कर्ता के रूप में प्रथमपुरुष में ही रखा जाता है ।
जैसे–भवान् पठति । (आप पढ़ते हैं) भवन्तौ पठत: (आप दोनों पढ़ते हैं) भवन्त: पठन्ति (आप लोग पढ़ते हैं) ।

भूतकाल

प्रथमपुरुष

बालक:	अपत:	बालक ने पढ़ा ।
बालकौ	अपठताम्	दो बालकों ने पढ़ा ।
बालका:	अपठन्	बहुत बालकों ने पढ़ा ।

मध्यमपुरुष

त्वम्	अपठ:	तुमने पढ़ा ।
युवाम्	अपठतम्	तुम दोनों ने पढ़ा ।
यूयम्	अपठत	तुम सबने पढ़ा ।

उत्तमपुरुष

अहम्	अपठम्	मैंने पढ़ा ।
आवाम्	अपठाव	हम दोनों ने पढ़ा ।
वयम्	अपठाम	हम सबने पढ़ा ।

भविष्यत् काल

प्रथमपुरुष

बालक:	पठिष्यति	बालक पढ़ेगा ।
बालकौ	पठिष्यत:	दोनों बालक पढ़ेंगे ।
बालका:	पठिष्यन्ति	सब बालक पढ़ेंगे ।

मध्यमपुरुष

त्वम्	पठिष्यसि	तुम पढ़ोगे ।
यूवाम्	पठिष्यथ:	तुम दोनों पढ़ोगे ।
यूयम्	पठिष्यथ	तुम सब पढ़ोगे ।

उत्तमपुरुष

अहम्	पठिष्यामि	मैं पढ़ूँगा ।
आवाम्	पठिष्याव:	हम दोनों पढेंगे ।
वयम्	पठिष्याम:	हम सब पढ़ेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधि

प्रथमपुरुष

बालकः पठेत्	बालक को पढ़ना चाहिये ।
बालकौ पठेताम्	दोनों बालकों को पढ़ना चाहिये ।
बालकाः पठेयुः	सब बालकों को पढ़ना चाहिये ।

मध्यमपुरुष

त्वम् पठेः	तुमको पढ़ना चाहिये ।
युवाम् पठेतम्	तुम दोनों को पढ़ना चाहिये ।
यूयम् पठेत	तुम सबको पढ़ना चाहिये ।

उत्तमपुरुष

अहम् पठेयम्	मुझको पढ़ना चाहिये ।
आवाम् पठेव	हम दोनों को पढ़ना चाहिये ।
वयम् पठेम	हम सबको पढ़ना चाहिये ।

यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि हिन्दी के वाक्य में 'बालक को पढ़ना चाहिये'। हिन्दी में वाक्य 'को' देख कर द्वितीया विभक्ति का रूप न लिखना चाहिये। कर्ता में प्रथमा विभक्ति का ही रूप लिखना चाहिये। जैसे–रामः पठेत्। देवदत्तः पठेत्। बालिका पठेत् आदि।

आज्ञा, विनय आदि

प्रथमपुरुष

बालकः पठतु	बालक पढ़े ।
बालकौ पठताम्	दोनों बालक पढ़ें ।
बालकाः पठन्तु	सब बालक पढ़ें ।

मध्यमपुरुष

त्वम् पंठ	तुम पढ़ो ।
यूवाम् पठतम्	तुम दोनों पढ़ो ।
यूयम् पठत	तुम पढ़ो ।

उत्तमपुरुष

अहम् पठानि	मैं पढ़ूँ ।
आवाम् पठाव	हम दोनों पढ़े ।
वयम् पठाम	हम सब पढ़े ।

इसमें प्रार्थना करने, आज्ञा लेने का भाव भी रहता है। जैसे अहम् पठानि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं पढू का अर्थ क्या मैं पढू ? भी होता है।

सकर्मक क्रिया में कर्म का प्रयोग

पठ् धातु सकर्मक है। बालक क्या पढ़ता है ? के उत्तर में 'पुस्तक' शब्द मिलेगा। अतः ऊपर जो वाक्य बनाये गये हैं। वहाँ सभी वाक्यों में कर्ता के बाद कर्म के लिए 'पुस्तक' शब्द बीच में रखने से निम्नलिखित रूप में वाक्य बनेंगे :-

बालकः पुस्तकम् पठति।	बालक पुस्तक पढ़ता है।
बालिका पुस्तकम् पठति।	बालिका पुस्तक पढ़ती है।
त्वम् पुस्तकम् पठसि ?	तुम पुस्तक पढ़ते हो ?
अहम् पुस्तकम् पठामि।	मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
बालकः पुस्तकम् अपठत्।	बालक ने पुस्तक को पढ़ा।
त्वम् पुस्तकम् अपठः।	तुमने पुस्तक पढ़ा।
अहम् पुस्तकम् अपठम्।	मैंने पुस्तक को पढ़ा।
बालकः पुस्तकम् पठिष्यति।	बालक पुस्तक पढ़ेगा।
अहम् पुस्तकम् पठिष्यामि।	मैं पुस्तक पढूँगा।
बालकः पुस्तकम् पठेत्।	बालक को पुस्तक पढ़नी चाहिये।
बालकः पुस्तकम् पठतु।	बालक पुस्तक को पढ़े। इत्यादि।

यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि ये वाक्य कर्तृवाच्य हैं। अर्थात् इसमें क्रिया कर्त्ता के अनुसार होगी। जैसे-ऊपर के उदाहरणों में है। कर्म के बहुवचन होने पर भी क्रिया कर्म के अनुसार बहुवचन नहीं होगी।

जैसे-बालकः पुस्तकानि पठति।	बालक पुस्तकें पढ़ता है।
अहम् पुस्तकानि पठामि।	मैं पुस्तकों को पढ़ता हूँ।

अकर्मक क्रिया

क्रिया के अध्याय में अकर्मक क्रिया को बताया गया है। लज्जा, स्थिति आदि अर्थों में आने वाली धातुएँ अकर्मक होती हैं। जैसे-बालकः रोदिति। बालकः हसति। बालकः क्रीडति आदि। अकर्मक क्रियाओं में कभी कोई पूरक शब्द जोड़ दिया जाता है। सः अस्ति, अहम् अस्मि में सः स्वस्थः अस्ति, अहम् प्रसन्नः अस्मि।

प्रयोग

राम शब्द के सातों विभक्तियों के एकवचन क्रियाओं के साथ वाक्य इस तरह बनाये जा सकेंगे-

रामः विराजते।	राम विराजमान हैं।
अहम् रामम् भजे।	मैं राम को भजता हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामः शरेण रावणम् जघान ।	राम ने बाण से रावण को मारा ।
रामाय नमः ।	राम के लिए नमस्कार ।
रामात् परतरम् कोऽपि नास्ति ?	राम से बढ़ कर कोई नहीं है ।
अहम् रामस्य दासोऽस्मि ।	मैं राम का सेवक हूँ ।
रामे मम भक्तिः अस्तु ।	राम में मेरी भक्ति हो ।
हे राम ! माम् पाहि ।	हे राम ! मेरी रक्षा करो ।

रामो राजमणिः सदा विजयते, रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशाचरचमू, रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोऽस्म्यहम् ।
रामे चित्तलयं सदा भवतु मे, भो राम ! मामुद्धर ॥१॥

अर्थ–राजाओं में श्रेष्ठ राम की सदा विजय होती है । मैं राम (लक्ष्मी स्वरूपा) सीतापति राम को भजता हूँ । राम ने राक्षसों की सेना का विनाश किया । उस राम को मैं नमस्कार करता हूँ । राम से बढ़ कर कोई शरण जाने योग्य नहीं है । मैं राम का दास हूँ । अतः मेरा चित्त सदा राम में लगा रहे । हे राम ! मेरा उद्धार करो ।

२. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

निम्नलिखित वाक्य अशुद्ध हैं । इनको शुद्ध कीजिये ।

१. सः मां न त्यजेः ।
२. त्वं दुष्टसङ्गं त्यजत् ।
३. धनं प्राप्य सः कुत्र अगच्छन् ।
४. किं त्वम् मम पुस्तकं अपश्यत् ।
५. अहं एतत् न जानाति ।
६. तं इदं न जानीयात् ।
७. मम गुरुः कदा आगमिष्यसि ।
८. अहं इदं न इच्छति ।
९. त्वं तत्र गन्तुं इच्छतु ।
१०. अहं शीतलं जलं अपिबत् ।
११. त्वम् मद्यं न पिवेत् ।
१२. वयं सुखं ऐच्छत ।
१३. अहं जलं पास्यसि ।
१४. वयं दुग्धं अपिवम् ।
१५. काकः दधि खादसि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६. किं त्वं दुग्धं न पिबति ।
१७. त्वं इदम् भक्षयतु ।
१८. अहं प्रतिदिनं ओदनं भक्षयति ।
१९. तौ अन्नं भक्षयथ ।
२०. ते किमपि न खादथ ।
२१. अहं इदं न अब्रूत ।
२२. बालकाः सत्यं वदथः ।
२३. सत्यं ब्रूयाः प्रियं ब्रूयाः ।
२४. अहं इदं न अपृच्छन् ।
२५. अहं न शेते ।
२६. यूयम् मां पृच्छ ।
२८. अहम् इदम् अपृच्छन् ।
२९. बृद्धः लगुडं गृहीत्वा गच्छन्ति ।
३०. त्वं मम क्रीडनकं गृह्णातु ।
३१. सा किं राजसखा असि ।
३२. सुहृदस्य वयं पठानि ।
३३. अहं इदं पुस्तकं गृहीतुं इच्छति ।
३४. श्रीयुत् देवदत्तः आगच्छन्ति ।
३५. श्रीमान् रामः राजा बभूबुः ।
३६. इमं पुस्तकं पश्यत ।
३७. सः इमम् बालिकां पश्यति ।
३८. कः तव मित्र असि ।
३९. त्वं कथं मिथ्या वदति ?
४०. त्वया कुत्र गम्यन्ते ।
४१. त्वं परिश्रमी भवति ।
४२. अहं सुखी भवति ।
४३. त्वं दुःखी भविष्यति ।
४४. यूयम् दरिद्राः भवानि ।
४५. आवाम् पीडितौ भवतः ।
४६. अहम् अत्र तिष्ठसि ।
४७. यूयम् अत्र तिष्ठावः ।
४८. बालकाः हसथ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४९. यूयम् हससि ।
५०. त्वं न हसेत् ।
५१. किमहं हसाव ।
५२. बालका: हसिष्यथ ।
५३. त्वं कथं न क्रीडन्ति ।
५४. छात्रा प्रतिदिनं क्रीडथ ।
५५. वृद्धं दृष्ट्वा त्वं न हसेत् ।
५६. अहं भिक्षुकं दृष्ट्वा न अहसः ।
५७. त्वं रोदिति ।
५८. सा कथं रोदिसि ।
५९. त्वं रोदिष्यति ।
६०. तौ न रोदिथ ।
६१. अहं वृक्षात् पतिष्यति ।
६२. वृक्षात्पत्राणि पतति ।
६३. त्वं पपतु ।
६४. त्वं मार्गे अपतत् ।
६५. वयमपतम् ।
६६. यूयम् किं करिष्यसि ।
६७. अहं किं करोति तत्र ?
६८. अहं हरिद्वारं गमिष्यति ।
६९. बालक: विद्यालयं गच्छेताम् ।
७०. यूयम् मम वाक्यं शृणु ।
७१. त्वं मम पितरं अपश्यम् ।
७२. शिक्षा चन्द्रं पश्यन्ति ।
७३. इदम् चिन्ताम् त्वं न अकरोत् ।
७४. ते रामम् द्रष्टुं आगमिष्यति ।
७५. कूपस्य जलं शीतलं भवन्ति ।
७६. अहं न अददाम ।
७७. वयं सर्वं दास्ये ।

३. अनुवाद और वाक्य शुद्धि

संस्कृत सीखने के लिए पहिले छोटे-छोटे हिन्दी के वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने का अभ्यास करना चाहिये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीचे कुछ हिन्दी वाक्य दिये गये हैं। इनका संस्कृत में अनुवाद कीजिये।

१. हम लोग प्रसन्न हैं।
२. तुम नास्तिक हो।
३. वह क्यों उदास है।
४. मेरा पुत्र बुद्धिमान है।
५. तुम आदमी नहीं हो।
६. मैं वाराणसी में ठहरता हूँ।
७. तुम्हारे भाई भी यहाँ रुकते हैं।
८. तुम यहाँ सदा नहीं रुकते हो।
९. उसको यहाँ ठहरने दो।
१०. मेरे घर में दो मित्र ठहरे थे।
११. वह यहाँ नहीं रुकेगा।
१२. मैं हँस रहा हूँ।
१३. तुम क्यों हँसते हो ?
१४. तब पाँच लड़के हँस पड़े।
१५. दो लड़कियाँ मुझको देख कर हँस पड़ी।
१६. तुंम क्यों रोते हो।
१७. हम लोग जोर से रोवेंगे।
१८. बच्चे व्यर्थ में चिल्लाते हैं।
१९. तुमको रोना नहीं चाहिये।
२०. तब तुम दोनों क्यों रो पड़े ?
२१. तुम जमीन पर गिर पड़ोगे।
२२. पेड़ों से पत्तियाँ गिरती हैं।
२३. वह एकाएक गिर पड़ा।
२४. वे नीचे गिर सकते हैं।
२५. नीचे मत गिरो।
२६. वह तुरन्त गिर पड़ा।
२७. यह काम करो।
२८. तुम क्या कर रहे हो ?
२९. मैंने ऐसा नहीं किया।
३०. हम लोगों ने कुछ नहीं किया।
३१. तुम लोग क्या करोगे ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२. हम लोग अपना काम करेंगे ।
३३. हमको यह नहीं करना चाहिये ।
३४. मेरे सेवक को इस काम को करने दो ।
३५. सब लोग अपना कर्त्तव्य करते हैं ।
३६. तुम लोग ऐसा क्यों नहीं करते हो ?
३७. दो लड़के जा रहे हैं ।
३८. वहाँ चार लोग कल गये ।
३९. मैं तो वहाँ नहीं जाऊँगा ।
४०. अगर वह जाता है तो उसके साथ तुम जाओ ।
४१. तुम कब जाओगे ?
४२. उसको घर जाने दो ।
४३. उसको वहाँ नहीं जाना चाहिये ।
४४. मुझको घर जाने दो ।
४५. हम पक्षियों का गाना सुनते हैं ।
४६. अपने अध्यापक को ध्यान से सुनो ।
४७. वह मेरी बात को ध्यान से नहीं सुनता ।
४८. तुम उसकी सलाह को गौर से सुनो ।
४९. मैंने एक कहानी सुनी थी ।
५०. क्या मैं आपकी बात सुनूँ ।
५१. तुम मुझको देखते हो ।
५२. लड़कियाँ किधर देख रही हैं ?
५३. हम चन्द्रमा को देखते हैं ।
५४. क्या तुमने उसको देखा ?
५५. नग्न स्त्रियों को न देखो ।
५६. मैंने सोमवार को एक शेर देखा ।
५७. हमको सूर्य को न देखना चाहिये ।
५८. मैंने उसको एक सेव दिया ।
५९. इन्होंने मुझको यह पुस्तक दी ।
६०. तुमने उसको कुछ दिया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नोट–ये वाक्य भू, स्था, दृश, पत्, नम्, श्रु, हस् धातु क्रियाओं से बने हैं। इसी प्रकार कभी क्रिया के पहले क्रिया का कोई क्रियाविशेषण शब्द जोड़ देते हैं। जैसे–बालकः उच्चैः रोदिति।

४. प्रश्नवाचक वाक्य

संस्कृत में प्रश्नवाचक वाक्य बनाने के लिए कुछ अव्यय शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे:– किं, कुत्र, कस्मिन्, कुतः, क्व आदि।

उदाहरण–

बालकः किम् खादति ?	बालक क्या खाता है ?
त्वम् कुत्र गच्छसि?	तुम कहाँ जाते हो।
ते कदा आगमिष्यन्ति।	वे कब आयेंगे।
यूयम् कस्मिन् नगरे वसथ ?	तुम सब किस नगर में रहते हो।
त्वम् कुतः आगच्छसि ?	तुम कहाँ से आते हो ?
त्वम् कथम् एवं कथयसि ?	तुम क्यों ऐसा कहते हो ?
नद्याम् कियत् जलमस्ति ?	नदी में कितना पानी है ?
सः क्व अगच्छत् ?	वह कहाँ गया ?
इत्यादि।	

५. पत्रलेखन

संस्कृत में पत्र लिखने की दो शैलियाँ हैं–१. प्राचीन शैली २. आधुनिक शैली। अब आधुनिक शैली में ही प्रायः पत्र लिखे जाते हैं। इस शैली में पत्र में दाहिनी ओर सिरे पर कोने में पत्र लिखने का स्थान तथा दिनाङ्क लिखा जाता है। फिर बाईं ओर ऊपर से कुछ नीचे जिसको पत्र लिखा जाता है उसको यथोचित सम्बोधित शब्द लिख करके प्रणाम आदि लिखते हैं। फिर समाचार लिख कर उसके समाप्त होने पर दाहिनी ओर अपना 'भवदीय' शब्द के साथ सम्बन्ध सूचक शब्द लिख कर अपना हस्ताक्षर कर देते हैं। मित्रों आदि के लिए प्रिय मित्राय प्रिय सुहृदाय आदि लिख कर अपना नमस्कार आदि लिखते हैं। अन्त में दर्शनाभिलाषी आदि लिख कर हस्ताक्षर कर देते हैं।

अपने से छोटों अर्थात् शिष्य, पुत्र आदि के लिये 'प्रिय' शब्द से सम्बोधित करके आशीर्वादात्मक शब्द 'स्वस्ति' कुशल आदि लिखते हैं और अन्त में शुभेच्छुः, शुभचिन्तकः मङ्गलाकांक्षी आदि कोई शब्द लिखते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरण

(पुत्र का पत्र पिता के नाम) प्रयागतः

परमादरणीयाः पितृवर्याः दिनांक १५-८-०५

मे प्रमाणाञ्जलयः स्वीकुर्वन्तु ।

अहमद्य काशीनगराद् प्रत्यागतोऽस्मि । तत्र गङ्गास्नानं श्रीविश्वनाथदर्शनञ्च अकुर्वम् । चौखम्बासंस्कृतसीरीजस्वामिना सह मिलित्वा स्वस्य नवनिर्मितस्य ग्रन्थस्य अनुबन्धोऽपि कृतः । अहम् स्वस्थोऽस्मि । गृहे शेषं सर्वं कुशलमस्ति ।

भवदीयपुत्रः

द्वारकाप्रसादमिश्रः

उदाहरण (२) प्रयागतः

प्रिय शिष्या रमेश

कल्याणमस्तु १५-८-०५

भवतः पुत्रयोः परीक्षायाम् समुत्तीर्णस्य समाचारं ज्ञात्वा प्रसन्नोऽस्मि । प्रयागे कदा आगमिष्यसि ? अहमपि त्वया सह तव गृहे गन्तुमिच्छामि । अस्य पत्रस्य उत्तरं यथाशीघ्रं प्रेषणीयम् ।

शुभाकांक्षी

द्वारकाप्रसादमिश्रः

६. वार्तालाप के लिए कुछ स्मरणीय वाक्य

अकारणमेतत् । यह अकारण है ।

अग्रे कथय । आगे कहिये ।

अतः परं किं विधेयम् ? इसके बाद क्या करना चाहिये ?

अतः परं त्वया न आगन्तव्यम् । इसके बाद तुमको न आना चाहिये ।

अत्यधिकमेतत् । इतना बहुत है ।

अथ किं बलात्कारेण ! और क्या जबरदस्ती से !

अत्र भवान् किं ब्रवीति । आप अब क्या कहते हैं ।

अनभिज्ञो भवान्, तेन एतत् ब्रवीति । आप नहीं जानते । इससे ऐसा कहते हैं ।

अपि सत्यमेतत् । क्या यह सत्य है ?

अयं किमपि न जानाति । यह कुछ नहीं जानता है ।

अश्राव्यमेतत् । यह बात सुनने योग्य नहीं है ।

असम्भावितमेतत् । यह असम्भव है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहो ! न शोभनं कृतम् । अरे ! यह अच्छा नहीं किया ।
अन्यत्र गम्यताम् । दूसरी जगह जाओ ।
आज्ञापयतु भवान् । आप आज्ञा दें ।
आशु गम्यताम् । तुरन्त जाओ ।
आस्ताम् तावत् । बैठिये ।
इदानीम् अन्यत्र गच्छामि । अब दूसरी जगह जाता हूँ ।
एतन्मम मनसि वर्तते । यह मेरे मन में हैं ।
एवं भवतु । ऐसा ही हो ।
कथं मे तत्र प्रवेशः ? मैरा वहाँ प्रवेश कैसे होगा ?
कथमेषं भविष्यति ? ऐसा कैसे होगा ?
किं कारणम् ? क्या कारण है ?
किं कुर्याम् ? क्या करूँ ?
किं मिथ्या जल्पसि ! क्यों झूठ बोलते हो ।
किमपि असौ अपि देयम् । उसको भी कुछ देना उचित है ।
किमिदं कृतं त्वया ? यह तुमने क्या किया ?
कुतः समागतोऽसि ? कहाँ से आये हो ?
को भवान् ? आप कौन ?
क्षणमात्रं प्रतीक्षस्व । क्षणमात्र प्रतीक्षा करो ।
क्षमस्व माम् । मुझको क्षमा करो ।
गच्छ ! यथेच्छं कुरु । जाओ ! जैसा चाहो वैसा करो ।
गम्यतामनेन सार्धम् । इसके साथ जाओ ।
गम्यताम् । गम्यताम् । जाओ, जाओ ।
गृह्यतामिदं ताम्बूलम् । यह पान लीजिये ।
चिरंजीव । दीर्घजीवी होओ ।
जानात्येव भवान् ? आप जानते ही हैं ।
ज्ञातं मया सम्यक् । मैंने अच्छी तरह जान लिया ।
जहीहि दुःखम् । दुःख करना छोड़ो ।
तत् तथैव क्रियताम् । तो वैसा ही करो ।
ततस्ततः । उसके बाद ।
तत् गच्छतु भवान् । तो आप जायें ।
तथाऽस्तु । वैसा ही हो ।
तिष्ठतु भवानत्रैव । आप यहीं ठहरिये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीयतामसौ पारितोषिकम् । उसको पुरस्कार दो ।
द्रुतं वद । जल्दी बोलो ।
द्रुततरं गच्छ ? जल्दी से जल्दी जाओ ।
धन्योऽसि । धन्य हो ।
धैर्यम्धारय । धीरज धारण करो ।
न त्वया कथितम् न च मया श्रुतम् । न तुमने कहा न मैंने सुना ।
न त्वया सुन्दरम् कृतम् । तुमने अच्छा नहीं किया ।
न शक्नुमः वयमिह स्थातुम् । हमलोग यहाँ ठहर नहीं सकते ।
नायं कथनस्य कालः । यह कहने का समय नहीं है ।
नाहं किममि जानामि ? मैं कुछ नहीं जानता हूँ ।
नाहं किमपि श्रोतुमिच्छामि । मैं कुछ सुनना नहीं चाहता हूँ ।
निष्कासय एनम् । इसको निकालो ।
नैवं भूयोऽपि वाच्यम् ? ऐसा फिर न कहना ।
न भूतो न भविष्यति । न हुआ है न होगा ।

निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करें

द्वौ इमौ पुरुषौ गच्छतः ।
[illegible] पठन्तीम् बालिकाम् पश्यामि ।
तीक्ष्णेन बाणेन विद्धौ पक्षिणौ भूमौ पततः ।
केन प्रयोजनेन त्वम् इह आगतोऽसि ?
उत्तुङ्गात् शिखरात् पर्वतारोहिणः अपतन् ।
सामवेदं पठताम् वटूनाम् वेदध्वनिं शृणु ।
शूरस्य धनुर्धारिणः युद्धे पराभवः न भवति ।
तस्मै मेधाविने छात्राय पुस्तकं देहि ।
रामे वने गते दशरथः प्राणान् तत्याज ।
अहं अकृत्रिमेन तव स्नेहेन उत्साहितोऽस्मि ।
अत एव भवद्विधाः महान्तः सन्ति ।
अथ निर्विघ्नः ते मनोरथः ।
अद्भुतमिदं पण्डितमानिनश्चरितम् ।
अस्मात् स्थानात् पदात्पदमपि न गन्तव्यम् ।
अनाश्रयाः न शोभन्ते पण्डिता वनिता लताः ।
अनेकोपायैः सद्वैद्यैश्चिकितस्यमानोऽपि न स्वास्थ्यं प्राप्नोमि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अप्रियस्य च सत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।
अहं शोकेन कवलीकृतं भ्रातरंमपश्यम् ।
अपेयेषु तडागेषु बहुतरम् उदकम् भवति ।
अरे ! त्वमीदृशे दुर्दिने अन्धकारे आगतः ।
त्वं सदा आयुष्मती सौभाग्यवती च भव ।
आवश्यके कर्मणि न प्रमादः करणीयः ।
इदं महती भवदीया अनुकम्पा !
ईर्ष्या च विवेकपरिपन्थिनी भवति ।
उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी ।
एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा ।
कान्तं विविक्तरमणीयमिदं वनान्तम् ।
किमिदं प्रभातप्राया रजनी संवृत्ता ।
घनाम्बुना राजपथे हि पिच्छिले क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते ।
अपि कुशलं भवतः ?
अनुतिष्ठ आत्मनो नियोगम् ।
अलमन्यथा गृहीत्वा ।
अलमतिविस्तरेण ।
इयं कथा त्वामेव लक्षीकरोति ।
इदम् अग्निसात् कुरु ।
मम सावशेषं वचः शृणु ।
कलहं परिहर ।
छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति ।
कटुभाषी न प्रियो भवति ।
जलबिन्दुनिपातेन् क्रमशः पूर्यते घटः ।
झटिति पराशयवेदिनो विज्ञाः ।
दैवाधीने त्यजेत्भावि ।
दुर्लभं भारते जन्म मानुष्यं तत्र दुर्लभम् ।
द्रव्येण सर्वे वशाः ।
धैर्येण जेया विपद् ।
हसन्नपि नृपो हन्ति मानयन्नपि दुर्जनाः ।
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।
हेला स्यात् कार्यनाशाय बुद्धिनाशाय निर्धनम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौरे गते किमु सावधानम्।

७. संस्कृत के कुछ सुभाषित

१. अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्।
शान्ति धारण करके क्रोध को जीतना चाहिए।

२. अग्निदाहादपि विशिष्टं वाक्पारुष्यम्।
वाणी की कठोरता आग के दाह से भी अधिक कष्ट देती है।

३. अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।
अच्छे लोग जिस काम की जिम्मेदारी लेते हैं उसको पूरा करते हैं।

४. अति सर्वत्र वर्जयेत्।
अति सब जगह वर्जित है।

५. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्।
जो व्यवहार अपने को पसन्द न हो वैसा व्यवहार दूसरों के प्रति न करें।

६. आपत्काले तु सम्प्राप्ते यन्मित्रम् मित्रमेव तत्।
विपत्ति के समय जो काम आवे वही मित्र सच्चा मित्र है।

७. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।
दुष्ट के प्रति नम्रता की नीति ठीक नहीं।

८. इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः।
न इधर का न उधर का।

९. उत्तीर्णे पारे नौकायाः किं प्रयोजनम्।
नदी पार कर लेने पर नौका का क्या काम ?

१०. उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ?
उदार चरित्र वालों के लिए पूरा संसार एक परिवार है।

११. ऋणकर्त्ता पिता शत्रुः।
कर्ज करने वाला पिता पुत्र का शत्रु है।

१२. एतदेवहि पाण्डित्यं यदायादल्पतरो व्ययः।
बुद्धिमानी इसी में है कि व्यक्ति आमदनी से कम खर्च करे।

१३. कामातुराणां न भयं न लज्जा।
कामातुर को न भय होता है न लाज।

१४. कीर्तिर्यस्य स जीवति।
संसार में जिसकी कीर्ति हो वही जीवित है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५. क्वापि न गच्छेदनाहूतः ।
कहीं भी बिना बुलाये न जाना चाहिये ।

१६. गतं न शोचामि ।
बीती हुई का अफसोस न करना चाहिये ।

१७. चतुर्वेदोऽपि दुर्वृतः शूद्रादल्पतरः स्मृतः ।
चारों वेदों का ज्ञाता होने पर भी बदचलन व्यक्ति शुद्र से भी गया गुजरा समझना चाहिए ।

१८. जामाता दशमो ग्रहः ।
दामाद पीड़ा देने वाला दसवाँ ग्रह है ।

१९. ते पुत्रा ये पितु भक्तिः ।
वे ही सच्चे पुत्र हैं जो पिता के भक्त हैं ।

२०. दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः ।
दुश्चरित्र पुरुष की लोक में निन्दा होती है ।

२१. दोषा वाच्या गुरोरपि ।
गुरु के दोष को भी कहना उचित है ।

२२. धैर्यं सर्वार्थसाधकम् ।
धीरज से सब काम सिद्ध हो जाता है ।

२३. न दत्त्वा परिकीर्तयेत् ।
दे कर उसका ढिढोरा न पीटना चाहिये ।

२४. न नियमं भिन्द्यात् ।
नियम को नहीं तोड़ना चाहिये ।

२५. पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः ।
विद्वान शत्रु मूर्ख मित्र से अच्छा होता है ।

२६. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ।
जिसके पास बुद्धि है उसके पास ही बल है ।

२७. भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवत् गुरगुरायते ।
भिखमंगा दूसरे भिखमंगे को देख कर बड़बड़ाता है ।

२८. मन एव मनुष्याणम् कारणं बन्धमोक्षयोः ।
लोगों का मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है ।

२९. मनसा चिन्तितं कार्यं वचसा न प्रकाशयेत् ।
मन से सोचे काम को मुँह से न प्रकट करना चाहिये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३०. मरणां प्रकृतिः शरीरिणाम् ।
मरना देहधारियों का धर्म है ।

३१. माने भग्ने कुतः सुखम् ।
मान भंग हो जाने पर फिर सुख कहाँ ?

३२. मौनं सम्मतिलक्षणम् ।
चुप रह जाना स्वीकृति का सूचक होता है ।

३३. यः क्रियावान् स पण्डितः ।
जो उपदेश के अनुसार स्वयं आचरण भी करे वही पंडित है ।

३४. यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयम् ।
उचित होने पर भी लोक विरुद्ध काम नहीं करना चाहिये ।

३५. यादृशी भावना यस्य सिद्धि र्भवति तादृशी ।
जिसमें जैसी भावना होती है उसको वैसा ही फल मिलता है ।

३६. रामोद्विर्नाभिभाषते ।
राम अपने एक बार कह देने पर उस पर अटल रहे । दुबारा आश्वासन की आवश्यकता नहीं ।

३७. लङ्घनम्परमौषधम् ।
रोग में उपवास करना सबसे उत्तम दवा है ।

३८. लोभः पापस्य कारणम् ।
पाप करने का कारण लोभ है ।

३९. वचने का दरिद्रता ।
मीठी बात बोलने में कंजूसी न करनी चाहिये ।

४०. वयसि गते कः कामविकारः ।
उम्र ढल जाने पर फिर कामवासना कहाँ ?

४१. वरं वेश्या पत्नी न पुनरविनीता कुलवधूः ।
वेश्या पत्नी अच्छी है किन्तु दुश्चारिणी बहू अच्छी नहीं ।

४२. वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ।
चतुर लोग वर्तमान काल के अनुसार काम करते हैं ।

४३. शान्तितुल्यं तपो नास्ति ।
शान्ति के बराबर कोई तप नहीं ।

४४. श्रेयसि केन तृप्यते ।
हित की बात से कौन तृप्त होता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४५. षट्कर्णे भिद्यते मन्त्रः ।

छः कान में पड़ने पर गुप्त रखने योग्य बात फूट जाती है ।

४६. सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति ।

सज्जनों को अच्छे लोगों का साथ बड़े पुण्य से मिलता है ।

४७. सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।

सच बोलना मनुष्य के कण्ठ का भूषण है ।

४८. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।

सच बोलना चाहिये, प्रिय बोलना चाहिये, अप्रिय सत्य न बोलना चाहिये ।

४९. सत्यमेव जयंते नानृतम् ।

सत्य की ही जीत होती है झूठ की नहीं ।

५०. स पुत्रो यत्र निर्वृतिः ।

पुत्र वही है जो सुख दे ।

५१. समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ।

एक समान शील और व्यसन वालों की आपस में मित्रता होती है ।

५२. सर्वः सर्वं न जानाति ।

सब लोग सब कुछ नही जानते हैं ।

५३. हतो यज्ञस्त्वदक्षिणः ।

दक्षिणा के बिना यज्ञ व्यर्थ है ।

८. सम्वादः

अतिथि बालक से पूछता है ।

भोः बालक !

किं नामधेयं तव ?

राहुलः, इति नामधेयं मम ।

त्वम् किं पठसि ?

अहं व्यवसायप्रशासनप्रबन्धनं (एम०बी०ए०) पठामि ।

त्वं कुत्र पठसि ?

अहं प्रयागस्य समीपे झूँसी नामके स्थाने गोविन्दबल्लभपन्तसामाजिक-विज्ञानसंस्थाने पठामि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वम् कुत्र निवससि ?

अहं प्रयागे स्वगृहे निवसामि ।

तव गृहे अन्ये के जनाः सन्ति ?

मम गृहे मम पितामहः, पिता, माता, एकः लघुभ्राता च सन्ति ।

तव पितामहः किं करोति ?

सः सेवानिवृत्तः सर्वकारेण पुरस्कृतः लेखकः नवतिवर्षदेशीयः अस्ति ।

तव पिता किं करोति ?

सः प्रयागे एकस्मिन् राजकीयमहाविद्यालये पुस्तकालयाध्यक्षोऽस्ति ।

तव माता किं करोति ?

सा सुशिक्षिता गृहिणी अस्ति । गृहकार्यं करोति ।

तव परिवारे अन्ये के सम्बन्धिनः सन्ति ?

विशालः खलु मम परिवारः । पितृव्यः तस्य पुत्राः पुत्र्यः, इत्यादयः सन्ति ।

त्वम् कदा भोजनं करोषि ?

अहम् प्रातः अष्टवादने स्वल्पाहारं कृत्वा पठितुं गच्छामि । प्रतिनिवृत्य भोजनं करोमि ।

किं भोजनान्ते किञ्चित् विश्रामं करोषि ?

अहं विश्रामसुखं न अनुभवामि ।

भवान् मम अतिथिः अस्ति ।

अद्य मम अवकाशदिवसोऽस्ति ।

अहं अतिथिसेवां कर्तुमिच्छामि ।

भवान् अद्य मम गृहे भोजनं करोतु ।

एवमस्तु ।

ततः अतिथिं भोजयित्वा राहुलोऽपि भोजनमकरोत् ।

९. समयोचितपद्यानि

अतिरूपाद्धृता सीता अतिगर्वेण रावणः ।
अतिदानाद्बलिर्बद्धश्चाति सर्वत्र वर्जयेत् ॥

आशायाः ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य ।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ॥

इतोभ्रष्टस्ततो भ्रष्टः परमेकान्तवेषभाक् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न संसारसुखं तस्य नैव मुक्तिसुखं भवेत् ॥

उद्योगः खलु कर्त्तव्यः फलं मार्जारवत् भवेत् ।
जन्मप्रभतिगौर्नास्ति पयः पिबति नित्यशः ॥

एकमेवाक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्वा चानृणी भवेत् ॥

कस्य दोषः कुले नास्ति व्याधिना को न पीडितः ।
व्यसनं केन न प्राप्तं कस्य सौख्यं निरन्तरम् ॥

गतशोको न कर्त्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत् ।
वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ॥

घृतं न श्रूयते कर्णे दधि स्वप्ने न दृश्यते ।
मुग्धे ! दुग्धस्य का वार्ता तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥

ज्वरादौ लङ्घनं पथ्यं ज्वरमध्ये च पाचनम् ।
ज्वरान्ते भेषजं दद्यात् सर्वज्वरविनाशनम् ॥

देहे पित्तं गृहे वित्तमेकचित्तं कुटुम्बिनाम् ।
ज्येष्ठपुत्रमतिश्रेष्ठं न भवन्ति गृहे गृहे ॥

धर्मेण हन्यते व्याधिर्ग्रहो धर्मेण हन्यते ।
धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ॥

न देवाय न धर्माय न बन्धुभ्यो न चार्थिने ।
दुर्जनेनार्जितं द्रव्यं भुज्यते राजतस्करैः ॥

परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्सुमहात्मनः ॥

बालस्तावत् क्रीडालग्नस्तरुणस्तावत्तरुणी रक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥

भवितव्यं भवत्येव नारिकेलफलाम्बुवत् ।
गन्तव्यं गतमित्याहुः गजमुक्तकपित्थवत् ॥

मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम् ।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा चित्ते तथा वाचि यथा वाचि तथा क्रिया ।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥

राजा राष्ट्रकुलं पापं राज्ञः पापं पुरोहितः ।
भर्ता च स्त्रीकृतं पापं शिष्यपापं गुरुस्तथा ॥

लोभमूलानि पापानि व्याधयो रसमूलकः ।
स्नेहमूलानि दुःखानि त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव ॥

रिक्तपाणिर्न पश्येत् राजानं देवतां गुरुम् ।
दैवज्ञं पुत्रकं मित्रं फलेन फलमादिशेत् ॥

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं सफलं भवेत् ।
स्थायी भवति चात्यन्तं रङ्गः शुक्लपटे यथा ॥

शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः ॥

षट्कर्णे भिद्यते मन्त्रः चतुष्कर्णे स्थिरो भवेत् ।
द्विकर्णस्य मन्त्रस्य ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ॥

सर्वः सर्वं न जानाति सर्वज्ञो नास्ति कश्चन् ।
नैकत्र परिनिष्ठास्ति ज्ञानस्य पुरुषे क्वचित् ॥

सहवासी विजानाति चरित्रं सहवासिनाम् ।
वकः किं वर्ण्यते राम ! येनाहं निष्कुलीकृतः ॥

हसता लभ्यते नारी रुदता लभ्यते धनम् ।
पठता लभ्यते विद्या त्यजता लभ्यते यशः ॥

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्याय १४

शब्दकोश

औषधिवर्ग

गुडूची	गुरिच	खर्जूरः	खजूर
वासा	अडूसा	द्राक्षा	दाख अंगूर
बिल्वः	बेल	दाडिमः	अनार
गोक्षुरः	गोखरू	नारङ्गः	नारंगी
यष्टीमधु	मुलैठी	जम्बीरः	जमीरी नींबू
एरण्डः	रेंड़	निम्बुकम्	नींबू
नलः	नरकट	आम्रः	आम
वंशः	बाँस	जम्बूः	जामुन
इक्षुः	ईख	बदरी	बेर
सिता	चीनी	अम्लिका	इमली
खण्डसिता	शर्करा	करमर्दः	करौंदा
सितोपला	दानेदार चीनी	आक्षोडकः	अखरोट
फालितम्	राब	करीलः	करील
गुडः	गुड़	आरूकम्	आडू
मधु	शहद	राजादनः	खिरनी
पुराणमधु	पुराना शहद	परुषकः	फालसा
तुगाक्षीरी	तीखुर	प्रियालः	चिरौंजी
वंशरोचना	वंशलोचन	तिन्दुकः	तेंदू
हरितकी	हर्रे	आम्रातकः	आमड़ा
आमलकी	आँवला	कपित्थः	कैथा
बिभीतकः	बहेड़ा	वटः	बरगद
बीजपुरः	बिजौरा	उदुम्बरः	गूलर
मधुकर्कटी	चकोतरा	अश्वत्थः	पीपल
नारिकेलः	नारियल	प्लक्षः	पाकड़
कदली	केला का पेड़	मधूकः	महुआ
कदलीफलम्	केला का फल	पनसः	कटहल
		लकुचः	बड़हर

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताल:	ताड़	कोशातकी	तरोई
नीप:	कदम्ब	राजकोशातकी	तरोई
तूदम्	शहतूत	महाकोशातकी	नेनुआ
भल्लातक:	भिलावा	वृन्ताकम्	बैगन
वाताम:	बादाम	बिम्बी	कुन्दरू
अक्षोड:	अखरोट	कारवेल्लम्	करेला
मुकूलक:	पिश्ता	कर्कोटकी	खेखसा
निकोचक:	चिलगोजा	काकडोला	बड़ी सेम
उरुमाण:	खुजी	पुस्तशिम्बी	सेम
यूथिका	जूही	कपिकच्छू:	केंवांच
केतक:	केतकी	श्लेषातक:	लसोड़ा
माधवी	माधवीलता	शाक:	तरकारी
वासन्ती	नेवारी	अलालु:	आलू
चम्पक:	चम्पा	अलाबु:	लौकी
अशोक:	अशोक	कोशातकी	भिण्डी
बकुल:	मौलसिरी	राज:	तरौई
जपा	गुडहल	गाजरम्	गाजर
बन्धूक:	दुपहरिया	पोतकी	पोई
वार्षिकी	बेला	शिम्बि:	सेम
धत्तूर, कनक:	धतूर	पुदिन:	पुदीना
तुलसी	तुलसी	शतपुष्पा	सोया
दमनक:	दौना	पिण्डालु:	बंडा
भृंगराज:	भँगरैया	**पत्र-शाकानि**	
वृद्धदारुक:	विधारा	वास्तुक:	बथुआ
शाकानि		तण्डुलीय:	चौलाई
कुष्माण्डकी	पेठा	श्वेतरक्तमारिषौ	सफेद मरसा
कर्कारु:	सफेद कद्दू	सर्षप:	सरसों
राजालाबु	लौकी	राजिका	राई
कटुतुम्बी	कड़वी लौकी	चणकशाक:	चना का शाक
त्रपुसम्	खीरा	कलायम्	मटर का शाक
चिर्भिटम्	फूट	पालंक्या	पालक
पटोल:	परवल	बृहल्लोणिका	बड़ी नोनी कुलफा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोणी	नोनी साग	इङ्गुदः	हिंगोट
फञ्जी	बरवट	निम्बः	नीम
उपोदंका	पोई	महानिम्बः	बकायन
मूलकम्	मूली	किराततिक्तः	चिरायता
गुञ्जनः	गाजर	मदनः	मैनफल
पाठा	पाढ़ी	क्षवकः	नदछिकनी
सुनिषण्णकः	चौपटिया	शाल्मलिः	सेमल
	सुनसुनिया	सेहुण्डः	सेहुड़
दुग्धिका	दुद्धी	अङ्कोटः	ढेरा
चक्रमर्दः	चकवड़	काञ्चनारः	कचनार
काकमाची	मकोय	अगस्तिकः	अगस्त
ज्योतिष्मती	मालकांकुनी	आरग्वधः	अमलतास
जलपिप्पली	जलपीपर	कदम्बः	कदम्ब
गोजिह्वा	गोभी	शिरीषः	सिरिस
शिग्रुः	सहिजन	शिंशपा	शीशम
पुनर्नवा	गदपुरना	अरिष्टकः	रीठा
मूर्वा	मरुआ	आकाशवल्ली	अमरवेलि
गुञ्जा	घुँघुची	शाणपुष्पी	सनई
सूरणः	सूरन	दन्ती	जमालगोटा
वज्रवल्ली	हड़जोड़	अपामार्गः	चिचिण्डा
कसेरुकम्	कसेरू	अश्वगन्धा	असगन्धं
शृंगाटकम्	सिंहाड़ा	सैरेयकः	कठसरैया
भङ्गा	भाँग	शतावरी	सतावर
वृक्षः		लज्जालुः	छुई-मुई
शाकः	साखू	बब्बलूः	बबूलः
शालः	शाल	कोकिलाक्षः	तालमखाना
बीजकः	विजयसार	कार्पासी	कपास
भूर्जः	भोजपत्र	पर्पटः	पित्तपापड़ा
ककुम्भः	अर्जुन	हरिद्रा	हल्दी
खदिरः	कत्था	हरिद्रा	दारुहल्दी
पलाशः	ढाक	कटुका	कुटकी
धवः	धव	यष्टीमधु	मुलहटी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कटूफलः	कायफर	जातीफलम्	जायफल
शुण्डी	सोंठ	जातिपत्री	जावित्री
आर्द्रकम्	अदरक	कङ्कोलम्	शीतल चीनी
मरिचम्	कालीमिर्च	लवङ्गम्	लौंग
पिप्पली	पीपर	वराङ्कम्	तज
शुक्लजीरकम्	सफेद जीरा	पत्रकम्	तेजपत्ता
कृष्णरिकम्	काला जीरा	सूक्ष्मैला	छोटी इलायची
कारवी	मँगरैल	भद्रैला	बड़ी इलायची
शतपुष्पा	सोया	नागकेशरः	नागकेशर
धान्यकम्	धनियाँ	मुस्तकम्	मोथा
मिश्रेया	सौंफ	उशीरम्	खस
यवानी	अजवायन	मुरा	मुरामांसी
हिङ्गु	हींग	ग्रंथिपर्णाः	गठिवन
लशुनः	लहसुन	गुग्गुलुः	गुगुल
पलाण्डुः	प्याज	सुराला	राल
नीलदूर्वा	हरी दूब	लाक्षा	लाही
गण्डदूर्वा	गाडर दूब	अलक्तकः	आल्ता
दर्भः	कुश	कमलम्	कमल
मुञ्जः	मूँज	कुमुदम्	कुमुद
वेत्रकः	बेंत	किञ्जल्कम्	कमलकेशर
सुरभि द्रव्याणि		पद्मबीजम्	कमलगट्टा
चन्दनम्	चन्दन	वारिवर्णी	जलकुम्भी
रक्तचन्दनम्	लालचन्दन	मल्लिका	बेला
अगुरुः	काला अगर	मालती	चमेली
तगरम्	तगर	**धातुवर्ग**	
कर्पूरम्	कपूर	सुवर्णम्	सोना
कस्तूरिका	कस्तूरी	शैव्यम्	चाँदी
लताकस्तूरी	लताकस्तूरी	ताम्रम्	ताँबा
कुङ्कुमम्	केशर	कांस्यम्	कांसा
देवदारु	देवदार	पित्तलम्	पीतल
श्रीवासः	गंधाविरोजा	वङ्गनागश्च	राँगा शीशा
सरलः	चीड़	लोहम्	लोहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पारदः	पारा	षष्टिका	साठी चहवल
अभ्रकम्	अभ्रक	यवः	जौ
गन्धकः	गन्धक	गोधूमः	गेंहू
हरितालम्	हरताल	मुद्गः	मूँग
गैरिकम्	गेरू	माषः	उड़द
तुत्थम्	तूतिया	राजमाषः	बोड़ा, लोबिया
शिलाजतुः	शिलाजीत	मकुष्ठः	मोंठ
सिन्दूरम्	सेंदुर	निष्पावः	सेम
सौवीराञ्जनम्	सुरमा	सतीयः	मटर
पुष्पाञ्जनम्	जस्ते का फूल	कलायः	खेसारी
गोरोचना	गोरोचन	त्रिपुटकः	छोटी खेसारी
लवणम्	लवण	चणकः	चना
सैन्धवम्	सेंधा नमक	मसूरः	मसूर
सौवर्चलम्	सोंचर नमक	तुवरी	अरहर
कृष्णलवणम्	काला नमक	आढकी	अरहर
विडलवणम्	नौसादा	कुलत्थः	कुलथी
रोमकलवणम्	साम्भर नमक	तिलः	तिल
टङ्कणक्षारः	सुहागा	अतसी	अलसी
शङ्खः	शंख	कुसुम्भम्	बर्रे
शुक्तिः	सीप	सर्षपः	सरसों
रत्नानि		शरापुष्पम्	सनई
हीरकम्	हीरा	तृणधान्यम्	कोदों
गोमेदः	गोमेद	प्रियङ्गुः	ककुनी
वैदूर्यम्	लहसुनिंक	श्यामारुः	साँवा
प्रवालम्	मूँगा	कोद्रवः	कोदो
मौक्तिकम्	मोती	नर्त्तकः	मडुआ
कारकतम्	पन्ना	यावनालः	ज्वार
खटिका	खड़िया	**द्रववर्ग, तोयवर्ग**	
बालुका	बालू	जलम्	जल
धान्यवर्गः		दुग्धम्	दुग्ध, दूध
		गो	गाय
शालिः	धान, चावल	बष्क्रियिणी	बकेन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अजा	बकरी	अश्वतर:	खच्चर
मृगी	हरिण	उष्ट्र:	ऊँट
महिषी	भैंस	गर्दभ:	गदहा
ऐभ:	हथिनी, हस्तिनी	अजा	बकरी
घोटकी	घोड़ी	मेष:	भेड़ा
ऊष्ट्र:	ऊँट	महिष:	भैंस
आविक:	भेड़ी	वृषभ:	बैल
धारोष्णं	दुहते समय का	गौ:	गाय
	दूध	गृष्टि:	एकबार ब्यायी
सन्तानिका	मलाई	धेनु:	नई ब्याही गौ:
पीयूष:	पेयूष	बष्कयिणी	बकेन गाय
क्षीरशाक:	कच्चा फटा दूध	सिंह:	सिंह
	शक्कर मिला।	व्याघ्र:	बाघ
किलाट:	छेना	वृक:	भेड़िया
तक्रपिण्ड:	छेना	श्वा	कुत्ता
दधिवर्ग:		कुक्कुर:	कुत्ता
दधि	दही	सूकर:	सुअर
गालितं दधि	वस्त्र से छना	बिडाल:	बिल्ली
नित्सादुग्ध:	जनितदधि	नकुल:	न्योला
दधिसद:	साढी	मूषक:	चूहा
मस्तु	तोड़, दही का पानी	छुछुन्दरी	छछुन्दर
गोरस:	मट्ठा	वानर:	वानर
तक्रम्	मट्ठा	शृगाल:	सियार
नवनीतम्	मक्खन	शल्यक:	गोह
सद्यस्कनवनीतम्	ताजा मक्खन	मृग:	हिरण
घृतम्	घी	एण:	काला मृग
मांसवर्ग:		चित्रहरिण:	ताम्रकृष्ण हरिकृष्ण
मत्स्य:	मछली	भल्लूक:	भालू
हस्ती	हाथी	कस्तूरी मृग:	कस्तूरी वाले मृग
अश्व:	घोड़ा	शरभ:	शरभ आठ पैर
बडवा	घोड़ी		वाले मृग
हस्तिनी	हथिनी	रुरु:	एक मृग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चमरी	चमरी गाय	गोधा	गोह
शशक:	खरगोश	कृकलास:	गिरगिट
हंस:	हंस पक्षी	वृश्चिक:	बीछी
सारस:	सारस	रोमलम्	लम्बी पूँछ वाला
चक्रवाक:	चकवा	जलौका	जोंक
बलाका	बक पंक्ति	**मत्स्यादय:**	
मयूर:	मोर	मत्स्य:	मछली
भ्रमर:	भौंरा	रोहित:	रोहू मछली
शुक:	तोता	पाठीन:	श्रेष्ठ मछली
सारिका	मैना	शफरी	क्षुद्र मछली
कुक्कुट:	मुर्गा	नक्र:	मगर
काक:	कौआ	कच्छप:	कछुआ
गृध्र:	गीध	कर्कट:	केकड़ा
पारावत:	कबूतर	मण्डूक:	मेढक
कोकिल:	कोयल	**दिनचर्यादिवर्ग**	
उलूक:	उल्लू	दिनचर्य्या	दैनिक काम
काष्ठकुट्टक:	कठफोरवा	ब्राह्म मुहूर्त्त	तड़के ४ बजे
चातक:	पपीहा	दर्पणम्	आइना
श्येन:	बाज	पूर्वाभिमुख:	पूर्वकी ओर मुँह करके
खञ्चरीट:	खञ्जन		
चकोर:	चकोर	मेध्यम्	पवित्र
खद्योत:	जुगनू	आचमनम्	आचमन
मधुमक्षिका	सरघा	दन्तधावनम्	दातून
लाव:	लवा	मुखप्रक्षालनम्	मुँह धोना
तित्तिर:	तीतिल	मुखलेप:	मुँह की क्रीम
चटका	गौरैया	शलाका	सलाई
सर्पादिवर्ग:		गण्डूष:	कुल्ला
सर्प:	सांप	ताम्बूलसेवनम्	पान खाना
अजगर:	अजगर	वस्त्रधारणम्	कपड़ा पहनना
राजिल:	दोमुहाँ	व्यायाम:	कसरत
दुन्दुभ:	निर्विष	अभ्यङ्ग:	मालिश
जलव्याल:	निर्विष	उद्वर्त्तन:	उबटन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्नानम्	स्नान	राजयक्ष्मा	क्षयरोग
अनुलेपनम्	चन्दनादिं लगाना	कासः	खांसी
देवपूजनम्	देवता की पूजा	हिक्का	हिचकी
आहारः	भोजन	श्वासः	सांस फूलना
दन्तशोधनम्	दाँत साफ करना	अरोचकः	अपच रोग
शयनम्	सोना	छर्दिः	उल्टी
विश्रामः	आराम करना	तृषा	प्यास
निद्रा	नींद	मूर्च्छा	मोह, बेहोशी
व्यवायः	मैथुन	मदात्ययः	नशा में धुत्त होना
व्यजनम्	पंखा	उन्मादः	उन्मत्त रोग,
अवश्यायः	ओस		पागलपन
धूमः	धुआँ	अपस्मारः	मृगीरोग
छाया	छाँह	वातव्याधिः	वात के रोग
आतपः	धूप	पक्षवधः	पक्षाघात
रोग		जिह्वास्तम्भः	जीभ जड़ होना
ज्वरः	बुखार	गृध्रसी	कमर के नीचे का
वातज्वरः	वात का बुखार		भाग जड़ हो जाना
पित्तज्वरः	पित्त का बुखार	खंजः	लँगड़ापन
कफज्वरः	कफ से बुखार	पंगुः	लूलापन
सन्निपातज्वरः	सन्निपात बुखार	आध्मानः	पेट में गुड़गुड़हाट
आगन्तुकज्वरः	बुखार	वातष्ठीला	गोल पत्थर सी
विषमज्वरः	मलेरिया		गाँठ होकर मूत्र रोक
सततज्वरः	मलेरिया	आमवातः	आमवाद
जीर्णज्वरः	पुराना	शूलः	पीड़ा
अतिसारः	पतले दस्त होना	उदावर्त्तः	वायुप्रकोप
प्रवाहिका	पेचिश	गुल्मः	पेट में गाँठ पड़
ग्रहणी	संग्रहणी		जाना
अर्शः	बवासीर	हृद्रोगः	हृदय के रोग
मन्दाग्निः	अग्निमंदता	मूचकृच्छ्र	पेशाब कष्ट से होना
अजीर्णम्	बदहजमी	मूत्राघातः	अष्टीला रोग
पाण्डुरोगः	पीलिया	अश्मरी	पथरी
कामला	कँवल	प्रमेहः	मेह, बहुमूत्रता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेदः	चर्बी	पीनसः	पीनस
कार्श्यम	क्षीणता दुबलापन	प्रतिश्यायः	जुकाम
उदर रोगः	पेट के रोग	नेत्ररोगः	आँख का रोग
शोथः	सूजन	अभिष्यन्दः	आँख आना
अण्डवृद्धिः	अण्डकोश बढ़ना	शिरोरोगः	शिर का रोग
गलगण्डः	कण्ठमाला	प्रदररोगः	स्त्रीरोग
गण्डमाला	नाड़ी, मल, आदि में गाँठ उभरकर पकना	योनिव्यापत्तिः	यौनरोग
		सूतिकारोगः	प्रसूतारोग
		स्तनरोगः	स्तनरोग
अर्बुदग्रः	माँस की गाँठ का रोग	बालरोगः	बाल रोग
श्लीपद	मृथी पाँव	अग्निमान्द्यम्	मंदाग्नि रोग
विदध्रिः	सूजकर बनने वाला फोड़ा	अङ्गदाहः	शरीर के अंग में जलन
ब्रणः	फोड़ा	अङ्गमर्दनम्	अङ्गों को मीजना
भग्नः	हड्डी टूटना	अतिभोजनम्	अधिक भोजन
नाड़ीव्रणः	नासूर	अतिसारः	अधिक दस्त होना
भगन्दरः	गुदा के भीतर फोड़ा होने का रोग	अधिजिह्वा	जीभ का एक रोग गले में
उपदंशः	गर्मी, सुजाक	अधोऽङ्गम्	मल द्वार, योनि
शूकदोषः	लिंग सम्बन्धी रोग	अपस्मारः	मृगी
कुष्टः	कोढ़	अभिष्यन्दः	नेत्रपीडा
शीतपित्तः	पित्ती	अरुचिः	भोजन के लिये रुचि न होना
अम्लपित्तः	पित्त सम्बन्धी रोग		
विसर्पः	शरीर में फैल जाने वाला रोग	अर्शः	बवासीर
		अलासः	पैर का एक रोग
विस्फोटः	फोड़े के रूप में रोग	अपश्यम्	अहितवस्तु
मसूरिका	मसूर के समान दाने निकलना	अत्यनिद्रता	नींद न आना
		अश्मरीः	पथरी
दन्तरोगः	दाँत का रोग	आमः	आँव
कण्ठरोगः	कण्ठ का रोग	उदरव्याधिः	पेट के रोग
कर्णरोगः	कान का रोग	उद्गारः	उद्व्यन डकार
नासारोग	नालला रोग	उन्मादः	मानसी व्याधिः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपचारः	सेवा, चिकित्सा	नखः	नाखून
उपजिह्विका	जीभ का एक रोग	प्रहस्तः	चपेटः
उपदंशः	गर्मी, सुजाक	वितस्ति	वालिश्त
ऊरुस्तम्भः-	आमवात, नीचे	आनन	मुख
	भाग का लकवा	नासिका	नाक
ओष्ठरोगः	ओठ के रोग	दशनः	दाँत
औपसर्गिकः	सुजाक आदि	नयनम्	आँख
कङ्कालः	अस्थिपञ्जर	जिह्वा	जीभ
कण्ठमाला	गले का रोग	केशः	बाल
कण्डूः	खाज	क्लीवरोगः	नपुंसकता
कफरोगः	कफ रोग	ध्वजभङ्गरोग	लिंग का खड़ा न
कर्णपाक रोगः	कान का रोग		होना
कामला	कँवल जाँडिश	**वस्त्रवर्ग**	
कासः	खांसी	अन्तरीयम्	पेटीकोट
अङ्गम् (शरीर का अवयव)		परिकरः	लहँगा
अङ्गुलिः	उँगली	आङ्गिका	अंगिया वाडिस
अङ्गुलिपर्व	पोटा	कञ्चुकः	चोली
अण्डकोषः	पेल्हड़	कूर्णासकः	ब्लाउज
अधरः	ओष्ठ के नीचे का	चोलः	जम्फर
	भाग	लम्बाङ्गिका	जम्फर
अन्त्रम्	आंत	चोलिका	झगा
अलकः	केश घुँघराले	अधोरुकम्	झगा
अस्थि	हड्डी	अङ्गीवम्	झबला
अक्षि	नेत्र	वासः	लूगा
इन्द्रियम्	ज्ञानबोधक अङ्ग	दुकूलम्	रेशमी साड़ी
उदरम्	पेट	कौशेयम्	रेशमी साड़ी
उपस्थ	लिंग, योनि	पटांशुकम्	कीमती साड़ी
कटिः	कोहूनी, कमर	शालः	शाल
वक्षः	छाती	द्युतः	जूता
स्कन्धः	कन्धा	पादत्राणम्	चप्पल
पाणिः	हाथ	अनूपदीना	बूट
अंगुष्ठं	अंगूँठा	पादुका	खड़ाऊ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वास्तु वर्ग	
वेश्मम्	इमारत
कुटी	झोपड़ी
सौध:	चूने का बड़ा मकान
हर्म्यम्	कोठी, बंगला
प्रासाद:	महल, राज प्रासाद
जनकोष्ठ:	दीवानखाना
दालानम्	दालान
गर्भागारम्	मध्यम गृह
कोष्ठ:	कोठरी
भूमि:	मंजिला
सर्वतोभद्रम्	बारहदरी
प्रासादपृष्ठ:	छज्जा
तमङ्ग:	कटघरा
सुव्यढस्थितकक्षयम्	खूब सजा कमरा
स्फाटिकम्	संगमरमर
द्वारम्	दरवाजा
कक्ष:	कमरा
वातायनम्	खिड़की
सभाजनकोष्ठ:	दीवानखाना
शौचकूप:	शौचालय
आवार:	अहाता कम्पाउण्ड
वरण्ड:	बरामदा
उपरिभूमि:	अटारी
प्रशाला	हाल
कक्षा	कमरा
चन्द्रशाला	ऊपर का कमरा
पेशवारवर्ग:	
वेशवार:	मसाला
मधुरिका	सौंफ
मेथिका	मेथी
जवानी	जवाइन
तेजपत्रम्	तेजपात
सैन्धवम्	सैंधानमक
पात्रवर्ग:	
पात्रम्	बर्तन
स्थाली	बटलोई
कन्दु:	कराही
रिंजीवम्	तवा
दर्वि:	कल्छुल
सन्देशक:	संसी, चिमटा
चमस:	चमचा
स्थालम्	थाली
कंस:	कटोरा
करोटि:	कटोरी
घट:	घड़ा
कलश:	घड़ा
गल्लक:	गिलास
शराव:	कसोरा
हण्डिका	हडिया
भक्ष्यादिवर्ग:	
तण्डुल:	चावल
भक्तम्	भात
द्विदलम्	दाल
सूप:	दाल (बनी
कृशिरा	खिचड़ी
पिष्टकम्	आटा
कणिका	कन
लोई	लोझी
रोटिका	रोटी
अंगारकर्कटी	लिट्टी
भरित्रम्	भुर्ता
सोमालिका	सोहारी
संयावक:	हलवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेसनम्	बेसन	कलमः	पेन
बड़ी	वटी	मसिलेखनी	फाउन्टेन पेन
अपूपः	पुआ	मसिधानी	दवात
पूपः	पुआ	मसी	स्याही
चिवरकः	च्युड़ा	तूलिका	पेंसिल
सक्तुः	सत्तू	लिपिपुस्तिका	कापी
आसुतम्	अचार	पंजिका	रजिस्टर
अवलेहः	चटनी	पट्टिटका	पटरी
भर्जनम्	भूजा	श्यामपट्टम्	तख्तास्याह
होलकः	होरहा	शोषकपत्रम्	सोख्ता
लाजा	लावा	कर्कटम्	परकार
कुल्माषः	घुघुरी	खटिका	खड़िया
सितोपलः	मिश्री	कठिनी	खड़िया
मोदकम्	मिठाई	**सम्बन्ध्यादिवर्ग**	
लड्डुकम्	लड्डू	भ्रातृव्यः	भतीजा
कुंडिलिनी	जलेबी	स्वसा	वहिन
मानवर्गः		स्वस्रीयः	भानजा
कणपः	छटांक	मातुलः	मामा
कुडपः	पाव	मातामहः	नाना
प्रस्थः	सेर	पितामहः	बाबा
मणम्	मन	दौहित्रः	नाती
गजः	गज	पौत्रः	पोता
धुरा	धूर	श्वसुरः	ससुर
काष्ठा	गट्टा	श्यालः	साला
विग्रहा	बीघा	प्रपितामह	परबाबा
वराटकम्	कौड़ी	दायादः	पट्टीदार
पणः	पैसा	जामाता	दामाद
आणकम्	आना	मातुलानी	मामी
रूप्यकम्	रूपया	मातृष्वसा	मौसी
लेखन सामग्री		पितृष्वसा	बुआ
कागदः, पत्रम्,	कागज	ननान्दा	नन्द
लेखनी	कलम	माता	माँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिता	बाप
व्यवसायिकवर्ग	
आयस्कार:	लुहार
कुम्भकार:	कुम्हार
मालाकार:	माली
सुवर्णकार:	सुनार
चर्मकार:	चमार
चित्रकार:	चित्रकार
तन्तुवाय:	जुलाहा
सूचीकार:	दर्जी
घटिकाकार:	घड़ी साज
रथकार:	बढ़ई
कान्दविक:	हलवाई
ताम्बूलिक:	तम्बोली
रजक:	धोबी
कहार:	कहार
नापित:	नाई
पुरोहित:	पुरोहित
हलवाहक:	हरवाहा
भारवाहक:	बोझिया
आपणिक:	दुकानदार
शकटवाहक:	रथवान
चालक:	ड्राइवर
फलवर्ग:	
राजाम्रम्	कलमी आम
पेरुकम्	अमरूद
सीताफलम्	सरीफा
बदरी	बैर
शुष्कद्राक्षा	किसमिस
मण्डपी	मूँगफली
खर्जूरम्	खजूर
शुष्कखर्जूरम्	छुहारा
आमद्राक्षा	अंगूर
रुचिफलम्	नासपती
नारङ्गम्	नारंगी
प्रियालम्	चिरौंजी
खर्बूज:	खरभूज
कालिङ्गम्	तरबूज
पिण्डाषु:	सुथनी
गृहादिवर्ग	
प्रकोष्ठ:	कोठरी
द्वारप्रकोष्ठ	दालान
प्रघण:	ओसारा
पक्षद्वारम्	खिड़की
गवाक्ष:	खिड़की
कपाट:	किवाड़
गृहवस्तुवर्ग	
मार्जनी	झाड़ू
चुल्लिका	चूल्हा
नागदन्त:	खूँटी
लग्ननी	अर्तजनी
तालकम्	ताला
ताली	चाबी
खट्वा	खाट
पर्यङ्क:	पलंग
कुठार:	कुल्हाड़ी
क्षुरप्र:	खुरपा
दात्रम्	हंसिया
छेदनी	छेदनी
छुरिका	छुरी
कर्त्तरी	कैंची
शंकुला	सरौता
पीठम्	पीढ़ा
पीठिका	चौकी
दीपक:	दिया
वर्त्तिका	बत्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दर्पणम्	ऐना	कर्पटः	रूमाल
कंकतिका	कंघी	उष्णीषः	पगड़ी
सूचिः	सुई	आस्तरणम्	बिछौना
सूत्रम्	सूत	उपधानम्	तकिया
तन्तुः	डोरा	तूलपरी	रजाई
गोणी	बोरा	प्रावारकम्	रजाई
उपानत्	जूता	कम्बलम्	कम्बल
छत्रम्	छाता	तूलिका	तोषक
यष्टिका	छड़ी	**तैलम्**	
काष्टपादुका	खड़ाऊँ	ऐरण्डतैलम्	रेड़ी का तेल
निःश्रेणी	सीढ़ी	सार्षपतैलम्	सरसों का तेलम्
व्यजनम्	पंख	अलसीतैलम्	अलसी का तेल
घटीयन्त्रम्	घड़ी	निम्बतैलम्	नीम का तैल
तुला	तराजू	**मद्यवर्गः**	
मञ्जूषा	संदूक	मद्यम्	शराब आदि
पेटिका	पेटी	सुरा	मदिरा
यानवर्ग		सौवीरकम्	जौकी शराब
यानम्	सवारी	अरिष्टः	औषधि मद्य
शकटः	गाड़ी	सीधुः	गन्ना के पके रस से बना
धूमशकटः	रेलगाड़ी	शीतरसः	कच्चे रस से
गन्त्री	बैलगाड़ी	गौडमद्यः	गुड़ की शराब
वायुयान	हवाई जहाज	द्राक्षासुरा	मार्द्वविक
पोतः	जहाज	**मूत्रवर्गः**	
वस्त्रवर्ग		गोमूत्रम्	गाय का मूत्र
अधोवस्त्रम्	धोती	महिषमूत्रम्	भैंस का मूत्र
शाटी	साड़ी	नागमूत्रम्	हथिनी का मूत्र
कौपीनम्	लंगोट	छागमूत्रम्	बकरी का मूत्र
कञ्चुकः	कमीज	गोमयम्	गोबर गाय का
अर्ध कम्बुकः	हाफकमीज	**कृतान्नवर्गः**	
अङ्गरक्षकम्	अँगरक्षा	ओदनः	भात
उत्तरीयम्	चादर	यवागू	लपसी
गलबन्धनी	मफलर		
अङ्गप्रोन्छनी	अंगौछी		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृशरा	चावल तिल उड़द की खिचड़ी		भक्ष्य
		लस्सिका	लस्सी
खिच्चा	तहरी	अङ्गारकर्कटी	बाटी
पायसम्	खीर	पोलिका	पूरी
पेया	चावल की पोथा	पूप:	पूय
लाजपेया	खील की पेया	शष्कुली	पूड़ी
मण्ड:	माड़	वटक:	बड़ा, बरा
यूष:	जूस	पर्पट:	पापड़
मुद्गयूष:	मूँग का जूस	पृथुक:	च्यूड़ा
सूप:	बनाई दाल छिलका रहित	औलुक:	होरहा
		उलम्ब:	गेंहू का होरहा
शिखरिणी	शिखरन	मांसम्	मांस
पानकम्	पना	सौराव:	सुरवा
भक्ष्य:	सभी पदार्थों से बने	क्वथिता	कढ़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0: In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारे प्रमुख ग्रन्थ

नवीन अनुवाद चन्द्रिका । डा. रमाकांत त्रिपाठी । शोधपूर्ण संस्करण ६५-००

पाणिनीयशिक्षा । पं. श्रीरुद्रप्रसाद अवस्थीकृत—स्वरवैदिकपंक्तिविवरण-सटिप्पणी-'प्रदीप' संस्कृत टीका 'प्रह्लाद' हिन्दी व्याख्या सहित । हिन्दी व्याख्या.व सम्पादक—गोस्वामी प्रह्लादगिरि वेदान्तकेशरी १५-००

पालिः भाषा और साहित्य । साहित्यवारिधि डॉ. रामानन्द शर्मा २५०-००

First & Second Book of Sanskrit. A Treatise on Grammar with Exercises By Sri R. G. Bhandarkar. Set 135-00
Part I 60-00, Part II 75-00

बृहत् संस्कृतशिक्षावाटिका । लेखक श्रीजगन्नाथ शुक्ल प्रथम भाग २५-००
द्वितीय भाग ३०-००, तृतीय भाग १०-००
चतुर्थ भाग १०-००, १-४ भाग ७५-००

रूपचन्द्रिका । पं. रामचन्द्र झा (लघुकौमुदी में आये हुए तथा उनके समान और भी शब्दों तथा धातुओं की अर्थ सहित रूपावली) ६५-००

लघुसिद्धान्तकौमुदी । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—पण्डित गिरीशकुमार ठक्कुर ६०-००

लिंगानुशासनम् । सटिप्पणी 'प्रह्लाद' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—गोस्वामी प्रह्लादगिरि वेदान्तकेशरी २५-००

व्याकरण-महाभाष्यम् । 'प्रदीपोद्द्योत' संस्कृत 'भावबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित। प्रो. जयशङ्करलाल त्रिपाठी । १-५ आह्निक । २००-००, ६-९ आह्निक । ४५०-००

संस्कृत निबन्ध मकरन्द । डॉ. कृष्णदत्त मिश्र
सम्पादक—डॉ. जमुना पाठक (१-२ भाग) १००-००
प्रथम भाग (सामान्य निबन्ध) ५०-००
द्वितीय भाग (विशिष्ट निबन्ध) ५०-००

संस्कृतव्याकरणप्रबोधः । श्री महाप्रभुलाल गोस्वामी । प्रथम भाग ४०-००
द्वितीय भाग २०-००
१-२ भाग, सम्पूर्ण ६०-००

designed by Shreyash GRAPHICS, mo. 9839814784

Also can be had from

Chowkhamba Sanskrit Series Office
K. 37/99, Gopal Mandir Lane
Golghar (Near Maidagin)
Post Box 1008, Varanasi-221 001 (U.P.) India
Phone : Office : (0542) 2333458, Res. : (0542) 2334032 & 2335020
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
Web site : www.chowkhambaseries.com

ISBN : 81-218-0185-0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi